Springboard ACADEMY

RAS FOUNDATION

राजस्थान का इतिहास

New Edition 2024

Rajveer Singh Chalkoi
Springboard Academy

MAHECHA
PUBLICATION

Springboard
ACADEMY

राजस्थान का इतिहास

RAS FOUNDATION

CLASS NOTES

Available @ JAIPUR • JODHPUR
www.thenoteshub.com

The Notes Hub

Contact Now : **7610010054, 7300134518**

All Right Reserved with the **MAHECHA PUBLICATION**

राजस्थान : इतिहास

- इतिहास को जानने के स्त्रोत
- राजस्थान के प्रागैतिहासिक स्थल
- प्रमुख राजवंश -
  - चौहान वंश
    - → अजमेर
    - → रणथम्भौर
    - → नाडोल (पाली)
    - → बूँदी
    - → कोटा
    - → झालावाड़
    - → सिरोही
    - → जालौर
  - परमार वंश
    - → आबू
    - → मालवा
    - → वागड़
  - राठौड़ वंश
    - → मारवाड़ (जोधपुर)
    - → बीकानेर
    - → किशनगढ़
  - प्रतिहार वंश → मंडौर
  - कच्छवाहा वंश
    - → आमेर
    - → अलवर
  - गुहिल/सिसोदिया वंश
    - → मेवाड़
    - → डूँगरपुर
    - → बाँसवाड़ा
    - → शाहपुरा
    - → किशनगढ़

4. मध्यकालीन राजस्थान में प्रशासनिक व राजस्व व्यवस्था
5. 1857 ई. की क्रान्ति में राजस्थान का योगदान
6. राजस्थान में किसान आन्दोलन
7. राजस्थान में जनजातीय आन्दोलन
8. राजस्थान में प्रजामण्डल आन्दोलन
9. राजस्थान का एकीकरण
10. राजस्थान के सामाजिक एवं राजनैतिक संगठन
11. राजस्थान के स्वतन्त्रता सेनानी
12. राजस्थान के समाचार-पत्र एवं पत्रिकाएँ

MAHECHA PUBLICATION

इतिहास को जानने के स्त्रोत

- पुरातात्विक स्त्रोत
- साहित्यिक स्त्रोत
- पुरालेखीय स्त्रोत

1. पुरातात्विक स्त्रोत-

- अभिलेख
- ताम्र पत्र
- सिक्के
- स्थापत्य कला
- चित्रकला
- मूर्तिकला
- उत्खनित पुरावशेष

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

(i) अभिलेख-

अभिलेखों का अध्ययन एपीग्राफी कहलाता है।

- ऐसे अभिलेख जिनमें राजाओं की प्रशंसा की जाती है - प्रशस्ति कहलाती है।
- अभिलेख समसामायिक (समय के साथ) होते है।
- अभिलेखों से तिथि क्रम निर्धारण में मदद मिलती है।
- अभिलेखों से वंशावली, विजय तथा स्थापत्य कला की जानकारी मिलती है।

(A.) बड़ली अभिलेख- अजमेर (443 ई.पू.)

- यह 'राजस्थान का प्राचीनतम' अभिलेख है।
- यह अभिलेख 'वीर निर्वाण संवत-84' में लिखा गया था।

- इस अभिलेख के अनुसार माध्यमिका (चितौड़) एक जैन केन्द्र था।
- 1912 ई. में गौरीशंकर हीरानन्द ओझा को यह अभिलेख 'भिलोह माता मन्दिर से प्राप्त हुआ था।

(B) घोसुण्डी अभिलेख- चितौड़ (दूसरी शताब्दी ई.पू.)

- इस अभिलेख के अनुसार गजवंश के राजा सर्वतात ने अश्वमेध यज्ञ का आयोजन करवाया था।
- यह अभिलेख "वासुदेव व संकर्षण (बलराम)" के पूजा की जानकारी देता है।
- इस प्रकार यह अभिलेख "भागवत या वैष्णव" सम्प्रदाय की जानकारी देने वाला राजस्थान का प्राचीनतम अभिलेख है।

(C) रणकपुर प्रशस्ति- (1439 ई.)

- यह प्रशस्ति चौमुखा मन्दिर (आदिनाथ/ ऋषभदेव) मन्दिर में लगी हुई है।
- यह प्रशस्ति बापा रावल तथा कालभोज को अलग- अलग बताती है।
- यह प्रशस्ति कुंभा की विजय तथा उपाधियों की जानकारी देती है।
- इस प्रशस्ति में मुद्रा के लिए 'नाणक' शब्द का प्रयोग किया गया है।
- इस प्रशस्ति में मन्दिर के वास्तुकार 'देपाक' का नाम लिखा है।

D. आमेर अभिलेख- (1612 ई.)

- संस्कृत भाषा व नागरी लिपि में है।
- इसमें कछवाहों (कुशवाहा) को 'रघुवंश तिलक' कहा गया है।
- इस अभिलेख के अनुसार मानसिंह, भगवन्तदास का पुत्र था तथा उसने जमुवारामगढ़ (जयपुर) में किले का निर्माण करवाया था।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

(E) अजमेर का फारसी अभिलेख - 1200 ई. पू.

- यह राजस्थान में फारसी का प्रथम अभिलेख है।
- यह अभिलेख 'अढ़ाई दिन के झोपड़े' में लगा हुआ है।
- इसके अनुसार यहाँ संस्कृत पाठशाला को तोड़कर मस्जिद बनाई गई थी।

(F) चित्तौड़ का फारसी अभिलेख- (1325 ई.)

- यह अभिलेख " धाईबी पीर की दरगाह " में लगा हुआ है, इसमें चित्तौड़ का नाम 'खिज्राबाद' दिया गया है।

(ii) ताम्र पत्र

- ताम्र पत्र भूमि अनुदान के लिए जारी किये जाते थे।

(A.) आहड़ ताम्रपत्र- (1206 ई.)

- यह ताम्रपत्र गुजरात के चालुक्य राजा भीम-II की जानकारी देता है।

(B.) खेरोदा ताम्रपत्र- (1437 ई.)

- राणा कुंभा ने एकलिंगजी के पास भूमि अनुदान किया था।
- यह ताम्रपत्र धार्मिक स्थिति, मार्ग व मुद्रा की जानकारी देता है।

(C) चीकली ताम्रपत्र- (1483 ई.)

- यह ताम्रपत्र कर व्यवस्था की जानकारी देता है।

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books 7300134518, 7610010054

(D) पुर ताम्रपत्र- (1535 ई.)

- यह ताम्रपत्र रानी कर्मावती के जौहर की जानकारी देता है।

MAHECHA PUBLICATION

सिक्के

- सिक्कों का अध्ययन "न्युमिसमेटिक्स" कहलाता है।
- राजस्थान के कई स्थानों से अलग-अलग प्रकार के सिक्के प्राप्त होते है।

(i) नगर (टोंक)-

- यहाँ से कार्लाइल को (1871 ई.) मालव जनपद के 6000 सिक्के प्राप्त हुए थे। [मालवा - M.P/ P.B]
- NOTE: कार्लाइल को 'राजस्थान का पुरातत्व का जनक' कहा जाता है।

(ii) नगलाछैल (बयाना, भरतपुर)-

- यहाँ से 1921 गुप्त सिक्के प्राप्त होते है जिन्हें 'गरूड़' प्रकार के सिक्के कहा जाता है।
- 10-11 वीं शताब्दी में राजस्थान में 'गधिया' सिक्कों का प्रचलन था।
- कालान्तर में राजस्थान की अलग-अलग रियासतों ने अपने अलग अलग सिक्के जारी किये।

रियासतें	सिक्के
मेवाड़ - स्वरूपशाही, चांदोडी	कोटा - गुमानशाही
मारवाड़ - विजयशाही	अलवर - रावशाही
बीकानेर - गजशाही	धौलपुर - तमंचाशाही
आमेर - झाड़शाही	डूँगरपुर - उदयशाही
जैसलमेर - अखैशाही (आखा/ अक्षय)	बाँसवाड़ा - सालिमशाही
बूंदी - रामशाही	प्रतापगढ़ - सालिमशाही

THE NOTES HUB Notes are Available All Competition Books 7300134518, 7610010054

वेब की पुस्तक- Currencies of Hindu State of Rajputana

(iv) स्थापत्य कला-

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

* शीतलेश्वर मंदिर (झालरापाटन)-

- यह एक गुप्तकालीन शिव मन्दिर है।
- यह राजस्थान का प्राचीनतम तिथियुक्त (689 ई.) मंदिर है।

* जगतशिरोमणि मंदिर (आमेर)-

- यह मंदिर "मुगल राजपूत" स्थापत्य कला का उदाहरण है।
- यह मन्दिर मानसिंह की रानी कनकावती ने अपने बेटे जगतसिंह की में याद में बनवाया था।
- इस मन्दिर में भगवान श्री कृष्ण की वही मूर्ति है जिसकी पूजा मीराबाई चितौड़ में करती थी।
- (जगतसिंह, बंगाल आक्रमण में लड़ता हुआ मारा गया था)

(v) चित्रकला-

- हमें राजस्थान के अलग-अलग स्थानों से शैलचित्र प्राप्त हुए है इन चित्रों में शिकार के दृश्य अधिक बनाये गये है।
- हमें 'चम्बल व छाजा (बूंदी) नदी' के क्षेत्रों में अधिक शैलचित्र प्राप्त होते है।
- आलणिया (कोटा), कन्यादह (बांरा), गरदड़ा (बूंदी), बैराठ (जयपुर) सोहनपुरा (सीकर), ड़ढीकर व हरसौरा (अलवर)

NOTE- जगतनारायण → आलणियाँ शैलचित्रों की खोज की।

- राजस्थान के प्राचीन चित्रित ग्रन्थ जैसलमेर के 'जिनभद्र सूरी भण्डार' में रखे गये है, जैसे- ओघ नियुक्ति वृद्धि, दस वैकालिका सूत्र चूर्णि।

- कालान्तर में राजस्थान की अलग-अलग रियासतों में अपनी अलग-अलग चित्रशैलियों का विकास हुआ।

  बूंदी-चित्रशैली → प्रकृति चित्रण

  किशनगढ़ चित्रशैली → नारी सौन्दर्य

  नाथद्वारा चित्रशैली → पिछवाई (G.I टैग)

(vi) मूर्तिकला-

- मूर्तिकला से हमें धार्मिक स्थिति, नृत्य, वाद्ययन्त्रों की जानकारी मिलती है।

- विजय स्तम्भ/ कीर्ति स्तम्भ-
  - चित्तौड़ किले में बनी नौ मंजिला इमारत।
  - इसे मूर्तियों का अजायबघर कहा जाता है।
  - इसे 'भारतीय मूर्तिकला का विश्वकोष' भी कहा जाता है।

(vii) उत्खनित पुरावशेष-

- उत्खननकर्ताओं ने राजस्थान के अलग-अलग स्थानों का उत्खनन किया तथा उन्हें वहाँ से अलग-अलग सामग्री प्राप्त हुई।

- उत्खननकर्ता-
  - वीरेन्द्र नाथ मिश्र
  - रतनचन्द्र अग्रवाल
  - बी. बी. लाल
  - डी. आर. भण्डारकर
  - ललित पाँडे
  - जीवनसिंह खरकवाल

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- **स्थान-**
  - आहड़
  - कालीबंगा
  - बैराठ
  - माध्यमिका (नगरी)

- **सामग्री-**
  - मृदभाण्ड
  - आभूषण
  - सिक्के
  - मूर्तियाँ

२. साहित्यिक स्त्रोत-

(i) राजस्थानी साहित्य-

A. **मुहणौत नैणसी-** यह जोधपुर महाराजा जसवन्त सिंह के दीवान थे। (वित्त मंत्री)

- **पुस्तकें-**

(i) **मारवाड़ रा परगना री विगत-**

- यह पुस्तक जनगणना की जानकारी देती है।
- इसे 'मारवाड़ का गजट' भी कहा जाता है।
- इससे प्रशासनिक, सामाजिक व आर्थिक स्थिति की जानकारी मिलती है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

(ii) **नैणसी री ख्यात-**

- इस पुस्तक में मारवाड़ के राजनीतिक इतिहास की जानकारी मिलती है।
- यह ख्यात 14 वीं शताब्दी के बाद के 'राजपुत इतिहास' की जानकारी देती है।

- गबन के आरोप में नैणसी तथा उसके भाई सुन्दरदास को गिरफ्तार कर लिया गया था तथा उन्होंने जेल में आत्महत्या कर ली।

- मुंशी देवीप्रसाद के अनुसार नैणसी 'राजपूतों का अबूल फजल' था।

- कालिका रंजन कानूनगो ने नैणसी को अबुल-फजल से श्रेष्ठ बताया।

(iii) पृथ्वीराज राठौड़-

- यह बीकानेर महाराजा रायसिंह का छोटा भाई था।
- यह अकबर का दरबारी विद्वान था।
- अकबर ने इसे गागरोन का किला दिया था।
- पुस्तक - वेलि क्रिसण रुक्मणी री
  - काव्य शैली = डिंगल
  - भाषा = उत्तरी मारवाड़ी

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- 'दुरसा आढा' ने इस पुस्तक को 5वाँ वेद कहा तथा 19वाँ पुराण बताया था।
- जेम्स टॉड ने इस पुस्तक को "10 हजार घोड़ों का बल" बताया था।
- L.P टेस्सीटोरी ने पृथ्वीराज राठौड़ को "डिंगल का होरेस" कहा था।

(ii) संस्कृत साहित्य-

(A) जयानक-

- यह पृथ्वीराज चौहान का दरबारी विद्वान था।
- पुस्तक - पृथ्वीराज विजय
  - तराइन के प्रथम युद्ध कि जानकारी प्राप्त।

(B) मंडन-

- यह राणा कुम्भा का वास्तुकार था।
- पुस्तक - राजवल्लभ
- इस पुस्तक में 14 अध्याय है।

- राजवल्लभ से ग्राम, नगर, किला, महल, मंदिर, बाजार के स्थापत्य की जानकारी मिलती है।

(iii) फारसी साहित्य-

(A) अमीर खुसरो-

- पुस्तक- तारीख-ए-अल्लाई/ खजाईन-उल-फुतुह
  - यह पुस्तक अलाउद्दीन खिलजी के राजस्थान आक्रमणों की जानकारी दी है।

(B) अबुल फजल-

- पुस्तक- अकबरनामा (आइन-ए-अकबरी)

- इस पुस्तक में प्रताप तथा अकबर के एकपक्षीय संबंधों का वर्णन है।
- यह पुस्तक मेवाड़, जयपुर, अलवर भरतपुर की भौगोलिक स्थिति की जानकारी देती है।
- इसमें अजमेर की जलवायु, राजस्थान की वेशभूषा व त्योहार, मुद्रा की जानकारी मिलती है।

(iv) अंग्रेजी साहित्य-

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- जॉर्ज थॉमस-
  - यह आयरलैण्ड का रहने वाला था।
  - यह मराठों का भाड़ायती सेनापति था।
  - इसने जयपुर, उदयपुर व बीकानेर पर आक्रमण किये।
  - इसने पहली बार राजस्थान के लिए 'राजपुताना' शब्द का प्रयोग किया।

* विलियम फ्रेंकलीन की पुस्तक = Military Memoirs of George Thomas.

जेम्स टॉड-

- यह स्कॉटलैण्ड का रहने वाला था।
- यह राजस्थान में अंग्रेजों का पॉलिटिकल एजेंट था।
- गुरु - यतिज्ञानचन्द्र
- पुस्तके → 1. Annals and Antiquities of Rajasthan.
  or
  Central and western Rajput state of India.

  2. Travels in western India.
- इसे राजस्थान के इतिहास का जनक कहा जाता है।
- इसने पहली बार राजस्थान शब्द का प्रयोग किया था।

L.P टेस्सीटॉरी-

- यह उदीने (इटली) का रहने वाला था।
- यह भाषाविद तथा पुरातत्वविद था।
- गुरु- धर्म विजय सूरि
- पुस्तकें- 1.) Bardic and Historical Survey of Rajputana.

  2.) Notes on Grammar of old western Rajasthani.

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

3. पुरालेखीय स्त्रोत-

- राष्ट्रीय अभिलेखागार- दिल्ली
- राज्य अभिलेखागार- बीकानेर

- खरीता → राजा द्वारा राजा को पत्र लिखा जाता था।

- परवाना → राजा द्वारा अधीनस्थों को पत्र लिखा जाता था।
- अर्प्पदाश्त → प्रजा द्वारा राजा को पत्र लिखा जाता था।
- सियाह हुजूर → यह जयपुर राज्य से संबंधित है।
  इसमें राजपरिवार के दैनिक खर्चे लिखे जाते थे।
- <u>दस्तूर कौमवार</u> → यह भी जयपुर राज्य से संबंधित है।
  इसमें कर्मचारियों के नाम व उनकी जाति लिखी जाती थी।
- <u>हकीकत बही</u> → इसमें राजा की दैनिक दिनचर्या लिखी जाती थी।
- <u>हुकूमत बही</u> → इसमें शासकीय आदेश लिखे जाते थे।
- <u>कमठाना बही</u> → इसमें निर्माण कार्यों की जानकारी मिलती है।
- <u>राणा राजसिंह की बही</u> → राजस्थान की प्राचीनतम बही है।
  इसमें मेवाड़ राज्य की जानकारी मिलती है।
- <u>जोधपुर हुकुमत री बही</u> → यह राजस्थान की दूसरी प्राचीनतम बही है।
  - यह जोधपुर महाराजा जसवन्त सिंह के शासनकाल की जानकारी देती है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

राजस्थान का प्राचीनतम इतिहास

- ✓ पाषाणकाल
- ✓ ताम्र पाषाणकाल
- ✓ कांस्य काल
- ✓ लौह काल
- ✓ महाजनपद काल
- ✓ मौर्य काल
- ✓ मौर्योत्तर काल
- ✓ गुप्तकाल
- ✓ गुप्तोत्तर काल

पाषाणकाल

- 1870 ई. में C.A हैकेट को जयपुर तथा इन्द्रगढ़ (बूंदी) से हस्तकुठार (कुल्हाड़ी) प्राप्त हुई थी।
- सेटनकार को ऐसे उपकरण झालावाड़ से प्राप्त हुए तथा B. आल्चिन को जालौर से प्राप्त हुए।

पाषाणकाल के प्रमुख केन्द्र-

(1.) बागौर-

- भीलवाड़ा में कोठारी नदी के किनारे स्थित है।

THE NOTES HUB Notes are Available All Competition Books 7300134518, 7610010054

- उसे राजस्थान की '<u>प्राचीन सभ्यताओं का पालना</u>' कहा जाता है।
- उत्खननकर्ता - वीरेन्द्रनाथ मिश्र (V.N मिश्र)
- महासतियॉं नामक स्थान का उत्खनन किया गया था।
- साक्ष्य - (A.) लघु पाषाण उपकरण,
  (B.) पशुपालन
  (C.) कृषि
  (D.) तांबे के छेद वाली सुई
  (E) शव के साथ खाद्य सामग्री व बर्तन
  (F) लौहे के उपकरण

2. <u>तिलवाड़ा</u> - यह बालोतरा जिले में लूनी नदी के किनारे स्थित है।

- उत्खननकर्ता - वीरेन्द्रनाथ मिश्र (V.N मिश्र)
- साक्ष्य - (A.) लघु पाषाण उपकरण
  (B.) पशुपालन
  (C.) अग्निकुण्ड

3. पचपदरा - बालोतरा
4. बूढ़ा पुष्कर - अजमेर
5. जायल } नागौर
6. डीडवाना } नागौर
7. सोजत (पाली)
8. धनेरी (पाली)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610001054

→ वीरेन्द्र नाथ मिश्र की पुस्तक - "Bagor & Tilwara - Late Mesolithic cultures of North-west india.

ताम्र पाषाण काल

- इस काल के अधिकतर केन्द्र बनास नदी के किनारे स्थित है। अतः इसे 'बनास सभ्यता' कहा जाता है।
- आहड़ इस सभ्यता का प्रमुख केन्द्र था। अतः इसे 'आहड़ सभ्यता' भी कहा जाता है।
- रतनचन्द्र अग्रवाल ने इस सभ्यता की खोज की थी।

प्रमुख केन्द्र-

1. आहड़- उदयपुर जिले में आयड़ / बेड़च नदी के किनारे स्थित है।

- प्राचीन नाम - आघाटपुर / आटपुर
- स्थानीय नाम- धूलकोट
- उत्खननकर्ता -
  - अक्षय कीर्ति व्यास
  - R.C अग्रवाल
  - हँसमुख धीरज सांकलिया
  - वीरेन्द्र नाथ मिश्र

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

साक्ष्य-(A) ताँबे की भट्टियाँ (इसके कारण इस सभ्यता को ताम्रवती नगरी कहा जाता है)

(B) काले / लाल मृदभाण्ड (गोरे / कोठ)

(C) छः चूल्हे (संयुक्त परिवार / सामूहिक भोजन)

(D) दो मुँह वाला चूल्हा

•लाजवर्द- अफगानिस्तान

(E) सिलबट्टा

(F) बिना हत्थे का जलपात्र (ईरानी सभ्यता की जानकारी)

(G) अपोलो के चित्र वाला सिक्का (यूनानी सभ्यता की जानकारी)

(H) रंगाई- छपाई उद्योग

(I) बाट (आहड़ एक व्यापारिक केन्द्र था)

(J) गेहूं, चावल, ज्वार, प्राप्त हुए।

(K) बैल की मृणमूर्ति (इसे 'बनास का बैल' भी कहते है)

(L) पत्थर की नींव

(M) कच्ची ईंटों का प्रयोग

(N) ईंटों की मजबूती के लिए क्वार्ट्ज का प्रयोग।

(O) शव के साथ आभूषण (पुनर्जन्म की जानकारी मिलती है)

2. गिलूंड (राजसमंद) -

➤ उत्खननकर्ता - A) बी. बी. लाल
B) बी. आर शिन्दे
C) ग्रेगरी पोसल

➤ साक्ष्य - 1. पक्की ईंटें
2. पत्थर की गोलियाँ
3. मिट्टी के खिलौने
4. हाथीदाँत की चूड़ियाँ
5. पाँच प्रकार के मृद्भाण्ड

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

➤ मोड़िया मगरी का उत्खनन किया गया। (मगरी- पहाड़)

3. बालाथल (उदयपुर)-

उत्खननकर्ता -वीरेन्द्र नाथ मिश्र

साक्ष्य - • लोहा गलाने की भट्टियाँ
• 11 कमरों का मकान।
• नलकूप
• हाथ से बना कपड़ा

➤ इस केन्द्र का सम्बन्ध सिन्धु घाटी सभ्यता से भी था।

4. ओझियाना (भीलवाड़ा)-

उत्खननकर्ता - • बी. आर. मीणा
• आलोक त्रिपाठी

➤ साक्ष्य- गाय व बैल की मृणमूर्तियाँ।

5. भगवानपुरा (उदयपुर)

6. रोजदी (गुजरात)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

कांस्य युग

- प्रारम्भ से इस काल के अधिकतर केन्द्र सिन्धु नदी के किनारे प्राप्त हुए। अतः इसे सिंधु घाटी सभ्यता कहा जाता है।
- इस सभ्यता के कई केन्द्र विलुप्त सरस्वती नदी के किनारे भी स्थित है।
  अतः इसे 'सिन्धु-सरस्वती सभ्यता' भी कहते है।
- इस सभ्यता का प्रथम केन्द्र हड़प्पा था, अतः इसे 'हड़प्पा सभ्यता भी कहते है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

प्रमुख केन्द्र

1. कालीबंगा-

- हनुमानगढ़ जिले में घग्घर नदी के किनारे स्थित है।
- कालीबंगा का शाब्दिक अर्थ - काली चूड़ियाँ।
- ऑरेल स्टाइन ने घग्घर नदी का सर्वेक्षण किया था।
- सर्वप्रथम एल. पी टेस्सीटोरी (मदीने, इटली) ने कालीबंगा की जानकारी दी थी।
- 1953 ई. में अमलानन्द घोष ने कालीबंगा की खोज की।
- उत्खननकर्ता- (a) बी. बी लाल (बृजवासी)
  (b) बी. के. थापर
  (c) एम. डी. खरे
  [1961-69 तक उत्खनन कार्य]
- दशरथ शर्मा के अनुसार कालीबंगा हड़प्पा सभ्यता की तीसरी राजधानी थी।

- पाकिस्तान का कोटदीजी (केन्द्र) कालीबंगा के समान है।
- यहाँ पर 5 स्तरों का उत्खनन किया गया था-
    - प्राक् हड़प्पा → 1 व 2
    - विकसित हड़प्पा → 3,4 व 5

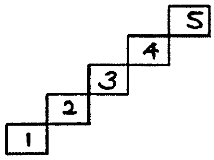

- कालीबंगा नगर दो भागों में विभाजित था-
    (i) दूर्ग- प्रशासनिक भवन
    (ii) निचला नगर- जन सामान्य के घर

- साक्ष्य-
    - दोनों भाग अलग-अलग परकोटे से घिरे हुए थे।
    - द्वारपाल कक्ष
    - जुता हुआ खेत (दक्षिणी-पूर्वी दिशा)
    - एक साथ दो फसलें उगाते थे।
    - 7 अग्निकुण्ड
    - भागते हुए बैल की मृणमूर्ति
    - युग्मित शवाधान
    - बेलनाकार मुहर (मेसोपोटामिया सभ्यता की जानकारी मिलती है)
    - कच्ची ईंटें (कालीबंगा एक गरीब बस्ती थी)
    - अलकृंत ईंटें
    - स्पष्ट जल निकासी प्रणाली का अभाव।
    - लकड़ी की नालियाँ
    - ताँबे की चुड़ियाँ

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- छः छेद वाली खोपड़ी (मस्तिष्क माथे की सूजन या शल्य चिकित्सा की जानकारी)

- भूकम्प (घरों में दरारों के कारण)

- 1985 ई. में यहाँ पर संग्रहालय स्थापित किया गया था।

२. <u>सोथी</u> :-

बीकानेर के आस-पास की सभ्यता को सोथी सभ्यता के नाम से जाना जाता है।

- अमलानन्द घोष ने इसे '<u>कालीबंगा सभ्यता का उद्‌गम स्थल</u>' बताया है।

- इसे कालीबंगा प्रथम भी कहा जाता है।

- केन्द्र
  - सावणिया
  - पूगल

  → बीकानेर

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

<u>लौह युग</u>

- वेदों में इस युग की जानकारी प्राप्त होती है। अतः इसे '<u>वैदिक सभ्यता</u>' कहा जाता है। (ऋग्वेद को छोड़कर)

- केन्द्र -
  - अनूपगढ़
  - तरखान वाला डेरा
  - चक -64

  → श्री गंगानगर

महाजनपद काल

1. मत्स्य महाजनपद-

- क्षेत्र- जयपुर, अलवर, भरतपुर
- ऋग्वेद से इस जनपद की जानकारी मिलती है।
- राजधानी- विराटनगर (जयपुर)
  - महाभारत से विराटनगर की जानकारी मिलती है।
- गोपीनाथ शर्मा के अनुसार महाभारत युद्ध के बाद मत्स्य जनपद शक्तिशाली हो गया था।
- चेदि (M.P) महाजनपद ने मत्स्य महाजनपद को हराया था।
- कालान्तर में मत्स्य महाजनपद का मगध (बिहार) महाजनपद में विलय हो गया था।

२. शूरसेन महाजनपद-

- क्षेत्र- भरतपुर तथा अलवर
- राजधानी- मथुरा

3. कुरु महाजनपद-

- क्षेत्र- अलवर का उत्तरी भाग
- राजधानी - इन्द्रप्रस्थ

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

4. शिवि जनपद-

- क्षेत्र- उदयपुर तथा चितौड़गढ़
- राजधानी- माध्यमिका / नगरी (चितौड़)

↓

जानकारी के स्त्रोत →
- अष्टाध्यायी (पाणिनी) } संस्कृत भाषा
- महाभाष्य (पतंजलि) } संस्कृत भाषा
- महाभारत (व्यास)
- बड़ली अभिलेख

- माध्यमिका एक बौद्ध, जैन तथा वैष्णव धर्मों का केन्द्र था।
- यह राजस्थान का प्रथम उत्खनित स्थल था।
- उत्खननकर्त्ता- D.R भण्डारकर, K.B सौन्दर राजन
- कार्लाइल ने माध्यमिका की खोज की।
- साक्ष्य –
  - वैष्णव मंदिर
  - गुप्तकालीन शिव मन्दिर
  - चक्रदार कुएँ
  - आहड़ सिक्के तथा शिवि जनपद के सिक्के

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

बड़ली अभिलेख- (443 B.C)

- 1912 ई. में गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने इसे भिलोट माता मन्दिर (बड़ली, अजमेर) से प्राप्त किया था।
- यह राजस्थान का प्राचीनतम अभिलेख है।
- यह वीर निर्माण सम्वत् 84 में लिखा गया था।
- इस अभिलेख के अनुसार माध्यमिका एक जैन केन्द्र था।

5. मालव जनपद-

- क्षेत्र- टोंक तथा जयपुर
- राजधानी- नगर (टोंक)
- उत्खननकर्ता- कृष्णदेव
- साक्ष्य- महिषासुर मर्दिनी की मूर्ति

- इस जनपद की सभ्यता को 'खेड़ा सभ्यता' कहा जाता है।
- हमें इस जनपद से सर्वाधिक सिक्के प्राप्त होते हैं।
- यह सिक्के नगर तथा रैढ़ (टोंक) नामक स्थानों से प्राप्त हुए है।
- रैढ़ को 'प्राचीन भारत का टाटानगर' कहा जाता है।
- केदानाथ पुरी ने रैढ़ का उत्खनन किया।

6. यौद्धेय जनपद-

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- क्षेत्र- श्रीगंगानगर तथा हनुमानगढ़
- इन्होंने कुषाणों की शक्ति को रोका था।
- यह जानकारी शक राजा रूद्रदामन (गुजरात) के गिरनार या जूनागढ़ (गुजरात) अभिलेख से मिलती है।
- इस अभिलेख के अनुसार यौद्धेय 'वीर' की उपाधि धारण करते थे।

7. शाल्व जनपद-

- क्षेत्र- अलवर
- इस जनपद का मत्स्य महाजनपद से सीमा विवाद था।

8. अर्जुनायन जनपद- क्षेत्र- सीकर (नीम का थाना), अलवर, भरतपुर

9. राजन्य जनपद- क्षेत्र- भरतपुर

MAHECHA PUBLICATION

मौर्यकाल

THE NOTES HUB Notes are Available All Competition Books 7300134518, 7610010054

- केन्द्र - बैराठ (जयपुर)
- यहाँ से अशोक के दो अभिलेख प्राप्त होते है।

A.) 1837 ई. में कैप्टन बर्ट को बीजक पहाडी से अभिलेख प्राप्त हुआ।

- इसे 'भाब्रू अभिलेख' भी कहते है।
- इसमें अशोक को "मगध का राजा" बताया गया है।
- अशोक बुद्ध, संघ एवं धम्म में विश्वास व्यक्त करता है।
- यह अभिलेख 7 बौद्ध पुस्तकों की जानकारी देता है।

B) 1871 ई. में कार्लाइल को "भीम पहाडी" से अभिलेख प्राप्त हुआ।

↓ कार्लाइल को राजस्थान में 'पुरातत्व का जनक' कहा जाता है।

- चीनी यात्री ह्वेनसांग ने बैराठ की यात्रा की। इसने बैराठ को 'पीलो यो तोलो' कहा एवं बैराठ के बैल तथा भेड़ प्रसिद्ध बताए।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग के अनुसार बैराठ में आठ बौद्ध मठ थे। जिन्हें हूण राजा मिहिरकुल ने तोड़ दिया था।
- बैराठ से शैलचित्र प्राप्त होते है। बैराठ की लिपि को शंख लिपि कहा जाता है।
- जयपुर महाराजा रामसिंह-II के शासनकाल में बैराठ का उत्खनन करवाया गया था, इस समय यहाँ से सोने की संदूक प्राप्त हुई थी। जिसमें शायद भगवान बुद्ध के अवशेष रहे होंगे।

- उत्खननकर्ता - 1936 ई. – दयाराम साहनी , 1961-62 → नील रत्न बनर्जी, कैलाश नाथ दीक्षित
  - (1936 ई.) → अंग्रेजों द्वारा करवाया गया।
  - (1961-62) → भारत सरकार द्वारा करवाया गया।

- 'कुमार पाल प्रबन्ध' पुस्तक के अनुसार चित्रांगद मौर्य ने चित्तौड़ किले का निर्माण करवाया था।
  अतः इसे चित्रकूट दुर्ग भी कहते है।

मानसरोवर अभिलेख- 713 ई. (चित्तौड़गढ़)

- यह अभिलेख कर्नल जेम्स टॉड को प्राप्त हुआ।
- इस अभिलेख से 4 मौर्य राजाओं की जानकारी मिलती है-
  - महेश्वर
  - भीम
  - भोज
  - मान

कणसवा शिवालय अभिलेख- 738 ई. (कोटा)

- इस अभिलेख में मौर्य राजा धवल की जानकारी मिलती है।
- यह राजस्थान में मौर्यों के बारे में जानकारी देने वाला अन्तिम अभिलेख है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

मौर्योत्तर काल

- हिन्दू - यूनानी राजा मिनांडर ने माध्यमिका पर आक्रमण कर दिया था।
  - यह जानकारी पतंजलि की महाभाष्य से प्राप्त होती है।
- हमें बैराठ से 28 इण्डोग्रीक और मिनांडर के 16 सोने के सिक्के प्राप्त होते है।

i) नोह (भरतपुर) →

- उत्खननकर्त्ता - रतनचन्द्र अग्रवाल
- साक्ष्य -
  1. लोहे के कृषि उपकरण
  2. यक्ष की मूर्ति (जाख बाबा)
     → शुंग काल की
  3. कुषाण राजा हुविष्क व वासुदेव के सिक्के
  4. चक्रदार कुएँ

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

ii) रंगमहल (हनुमानगढ़) –

- उत्खननकर्त्ता - डॉ हन्नारिड (स्वीडन)
- साक्ष्य -
  1.) लाल रंग के मृदभाण्ड जिन पर काले रंग की रेखाएँ चित्रित की गई है।
  2.) चावल
  3.) कुषाण काल की गुरु - शिष्य की मूर्ति प्राप्त होती है।
  4.) मिट्टी की खिलौना गाड़ी।

गुप्तकाल

1. बयाना (भरतपुर)-

- समुद्रगुप्त ने यहाँ पर विजयस्तम्भ का निर्माण करवाया था।
- यह राजस्थान का पहला विजयस्तम्भ था।
- वरीक वंश के विष्णुवर्धन ने यहाँ पर भीमलाट (स्तम्भ) का निर्माण करवाया।
- नगला छैल (भरतपुर), मोरोली (जयपुर), अहेड़ा (अजमेर), रैढ व सोयला (टोंक) नामक स्थान से गुप्त सिक्कों के ढेर प्राप्त हुए।
- प्रतिहार राजा लक्ष्मण सेन की रानी चित्रलेखा ने यहाँ पर 'उषा मन्दिर' का निर्माण करवाया।
- मध्यकाल में बयाना नील की खेती के लिए प्रसिद्ध था।

२. बड़वा अभिलेख (बारां)- (२३८ ई.)

- इस अभिलेख से मोखरी वंश के महासेनापति बल की जानकारी मिलती है।
- यहाँ से चार स्तम्भ प्राप्त हुए है तथा इनमे से तीन पर लेख लिखे गये है।

3. बाड़ोली (चितौड़गढ़)-

- हूण राजा मिहिरकुल ने यहाँ पर शिवमन्दिर का निर्माण करवाया।

4. चारचोमा (कोटा)-

- यहाँ पर गुप्तकालीन शिवमन्दिर का निर्माण करवाया।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

गुप्तोत्तर काल / राजपूत काल / त्रिपक्षीय संघर्ष का काल / पूर्व मध्यकाल :-

1. भीनमाल (जालौर) -

- यह चावड़ा राजपूतों की राजधानी थी।
- चावड़ा राजाओं ने कवि माघ तथा ब्रह्मपुत्र को संरक्षण प्रदान किया।
- ये दोनों भीनमाल से संबंधित थे।
- कवि माघ की पुस्तक - शिशुपाल वध
  ↓
  "उपमा कालिदासस्य, भारवि अर्थ गौरवम
  पद लालित्य दण्डिन माघेसन्ति त्रयोगुण"
- ब्रह्मपुत्र को भारत का न्यूटन कहा जाता है।
- ब्रह्मपुत्र की पुस्तकें -
  1) ब्रह्मस्फुट सिद्धांत
  2) खण्ड खाद्यक

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- चावड़ा राजाओं के शासनकाल में ह्वेनसांग ने भीनमाल की यात्रा की थी तथा इसने भीनमाल को 'पी लो-तो लो' कहा।
- बसन्तगढ़ (सिरोही) अभिलेख से चावड़ा राजाओं की जानकारी मिलती है।
- भीनमाल एक विद्या केन्द्र था।
- कालान्तर में प्रतिहारों ने भीनमाल पर अधिकार कर लिया था।
- उत्खननकर्त्ता - रतनचन्द्र अग्रवाल
- साक्ष्य - शक सिक्के, रोमन एम्फोरा, यूनानी दुहत्थी सुराही।

MAHECHA PUBLICATION

* बसन्तगढ़ अभिलेख · (सिरोही) → (625 ई०)

- यह अभिलेख खिमेल माता मन्दिर से प्राप्त हुआ।
- यह चावड़ा राजा वर्मलात की जानकारी देता है।
- यह अभिलेख प्रशासनिक व्यवस्था/ सामंती व्यवस्था की जानकारी देता है।
- इस समय 'रज्जिल' आबू का सामन्त था।
- इस अभिलेख में सर्वप्रथम 'राजस्थान' शब्द का प्रयोग किया गया है।

अन्य पुरातात्विक स्थल-

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

1. गणेश्वर- (नीम का थाना)

- यह कांतली नदी के किनारे स्थित है।
- उत्खननकर्ता - R.C अग्रवाल
- इसे 'ताम्रयुगीन सभ्यताओं की जननी' कहा जाता है।
- साक्ष्य- (i) ताँबा- यहाँ से ताँबा हड़प्पा और मोहनजोदड़ो भेजा जाता था।
  (ii) पत्थर का बाँध - बाढ़ से बचाव के लिए।
  (iii) काले व नीले मृदभाण्ड
  (iv) मकान बनाने में पत्थरों का प्रयोग किया जाता था।

(2) रैढ़ (टोंक)-

- उत्खननकर्त्ता- केदारनाथ पुरी
- साक्ष्य- (i) लोहा (इसे प्राचीन भारत का टाटानगर कहा जाता है)

(ii) 3000 सिक्के - • मालव
• मित्र
• अपोलोडोट्स
• इण्डो- ससेनियन

(iii) पगड़ी पहने हुए महिला की मूर्ति

(iv) मातृदेवी की मूर्ति

(v) चक्रदार कुएँ।

3. सुनारी - (नीम का थाना)

- यह कांतली नदी के किनारे स्थित है।
- यह एक वैदिककालीन बस्ती थी।

- साक्ष्य - • लोहे की भट्टियाँ (भारत में प्राचीनतम)
  • चावल
  • घोड़े से खींचे जाने वाले रथ।
  • शंख की चुड़ियाँ

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

4. जोधपुरा -

- "धरतूल घाट की सभ्यता" कहा जाता है।
- जयपुर जिले में साबी नदी के किनारे स्थित है।
- साक्ष्य - लौहा
- उत्खननकर्त्ता - R.C अग्रवाल

5.. बरोर-

- श्रीगंगानगर में प्राचीन सरस्वती नदी के किनारे स्थित है।
- साक्ष्य - • बटन के आकार की मुहरें
  • 8000 लाजवर्द मनके प्राप्त हुए है।
- प्राक् हड़प्पा व विकसित हड़प्पा के अवशेष।

6.. ईसवाल :- (उदयपुर)

- प्राचीनलाल में यह एक औद्योगिक नगरी कहा जाता है।
- साक्ष्य - लौहा

7.. कुराड़ा :- (नागौर)

- साक्ष्य - खेती के औजार
- इसे औजारों की नगरी कहते है।

8.. नलियासर- जयपुर (सांभर के नजदीक स्थित। साक्ष्य — आहत सिक्के, कुषाण सिक्के (105)

9.. ऐलाना - जालौर

10. किराडोत — जयपुर
11. चोयवाड़ी — जयपुर
12. नन्दलालपुरा — जयपुर
13. मलाह - भरतपुर
14. ऐलाणा - जालौर
15. पिंड पांडलिया - चितौड़
16. साड़ोल - उदयपुर

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books 7300134518, 7610010054

राजस्थान का इतिहास

जॉर्ज थॉमस-

- आयरलैण्ड का रहने वाला था।
- मराठों का भाड़ायती सेनापति था। इसने उदयपुर, जयपुर तथा बीकानेर पर आक्रमण किया।
- इसने राजस्थान के लिए राजपूताना शब्द का प्रयोग किया था। (1800 ई.)
- विलियम फ्रेंकलिन ने " Military Memoirs of Mr. George Thomas" नामक पुस्तक लिखी थी।
- इसे "जहाजी फिरंगी" भी कहते है।

कर्नल जेम्स टॉड-

- स्कॉटलैण्ड का निवासी था।
- 1818 ई. में इसे पश्चिमी राजपूत राज्यों का पॉलिटिकल एजेन्ट नियुक्त किया गया था।
- उदयपुर, जैसलमेर, जोधपुर, कोटा, बून्दी
- गुरु- यति ज्ञानचन्द्र
- इसने अपनी पुस्तक में राजस्थान / रायथान शब्द का प्रयोग किया था (1821 ई.)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

Books- 1. एनल्स एंड एंटीक्वीटिज़ ऑफ राजस्थान

(द सेन्ट्रल एण्ड वेस्टर्न राजपूत स्टेट ऑफ इण्डिया)

२. ट्रैवल्स इन वेस्टर्न इंडिया

- "राजस्थान इतिहास का जनक" एवं "घोड़े वाले बाबा" नाम से भी जाने जाते है।

NOTE-

✔ भारतीय पुरातत्व विभाग की स्थापना -1861 ई.

↳ अलेक्जेण्डर कनिंघम द्वारा

✔ राजस्थान पुरातात्विक सर्वेक्षण सर्वप्रथम 1871 ई. में ACL कार्लाइल ने किया था।

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

मध्यकालीन राजस्थान का इतिहास

प्रमुख राजवंश —
- → चौहान
- → परमार
- → प्रतिहार
- → गुहिल / सिसोदिया
- → राठौड़
- → कच्छवाहा

[राजनीतिक
प्रशासनिक
सांस्कृतिक
राजस्व]
(आर्थिक)

चौहानों का इतिहास

→ उत्पत्ति -

1.) अग्निवंशी (अग्निकुंड का सिद्धांत)

→ चन्दबरदाई की पुस्तक "पृथ्वीराज रासो" के अनुसार ऋषि वशिष्ठ के आबू पर्वत पर यज्ञ के अग्निकुण्ड से 4 राजपूत जातियाँ उत्पन्न हुई-

(I.) चौहान

(ii) चालुक्य (सोलंकी)

(iii) परमार

(iv) प्रतिहार

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

→ कालान्तर में मुहणोत नैणसी तथा सूर्यमल्ल मीसण ने भी इस सिद्धांत का समर्थन किया ।

२. सूर्यवंशी-

(i) पृथ्वीराज विजय

(ii) हम्मीर महाकाव्य

(iii) हम्मीर रासौ

(iv) विग्रहराज चतुर्थ का अजमेर अभिलेख

(v) गौरीशंकर हीराचन्द ओझा

(vi) सुर्जन चरित्र

(vii) चौहान प्रशस्ति

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

3. चन्द्रवंशी-

(i) हांसी अभिलेख (हरियाणा) - 1167 ई.

(ii) अचलेश्वर मन्दिर अभिलेख

4. ब्राह्मण-

(i) बिजौलिया अभिलेख (भीलवाड़ा)

(ii) चन्द्रावती अभिलेख (सिरोही)

(iii) कायम रासौ

(iv) दशरथ शर्मा (The Early Chauhan Dynasty)

(v) गोपीनाथ शर्मा (बिजौलिया लेख के आधार पर बताया)

वत्स गौत्रीय ब्राह्मण

5. विदेशी-

(i) जेम्स टॉड (शक / सिथीयन)

(ii) विलियम क्रुक → इसने जेम्स टॉड की जीवनी लिखी।

(iii) स्मिथ

6. इन्द्र के वंशज- रायपाल का सेवाड़ी अभिलेख (पाली)।

बिजौलिया अभिलेख (1170 ई.), भीलवाड़ा-

- दिगम्बर जैन लोलाक ने पार्श्वनाथ मन्दिर में यह अभिलेख लगवाया था। इस लेख के अनुसार-
- चौहान वत्स गौत्रीय ब्राह्मण है।
- वासुदेव ने सांभर झील का निर्माण करवाया था।
- विग्रहराज-IV ने दिल्ली पर विजय प्राप्त की थी।
- यह अभिलेख सोमेश्वर के समय लगवाया गया था। सोमेश्वर ने मन्दिर को "रेवणा" नामक गाँव दान में दिया था।
- इस अभिलेख में सोमेश्वर की उपाधि "प्रताप लंकेश्वर" मिलती है।
- इस अभिलेख में शैव तथा जैन तीर्थों की जानकारी मिलती है।
- इस अभिलेख से राजस्थान के नगरों के प्राचीन नामों की जानकारी मिलती है।
- राज्य का प्रशासनिक विभाजन किया गया।
- देश → पतन → पुर → पल्लि → ग्राम
- प्रशासनिक अधिकारियों की जानकारी।

प्रतिगण —अधिकारी→ पारिग्राहि

↑ बड़ी इकाई

ग्राम —अधिकारी→ महतर

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

जैसे-

वर्तमान नाम	प्राचीन नाम
1. बिजौलिया	विजयावल्ली
2. ऊपरमाल	उत्तमाद्रि
3. नागदा	नागह्रद
4. माण्डलगढ़	मंडलकर
5. सांभर	शाकम्भरी
6. नागौर	अहिच्छत्रपुर
7. नाडोल	नड्डूल
8. भीनमाल	श्रीमाल
9. दिल्ली	ढिल्लिका
10. जालौर	जाबालिपुर

- इस अभिलेख से प्रशासनिक विभाजन की जानकारी मिलती है -

देश - पतन - पुर - पल्लि - गुरुग्राम

- रचनाकार - गुणभद्र
- लेखक - केशव
- उत्कीर्णक - गोविन्द

चौहानों का उत्पत्ति स्थल-

1. सपादलक्ष- सांभर झील के चारों ओर का क्षेत्र।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- इतिहासकार रामकरण आसोपा के अनुसार प्रारम्भ में चौहान सांभर झील के चारों ओर रहते थे।
- राजधानी - अहिच्छत्रपुर (नागौर) (अहि = नाग)

* चौहान रियासतें-

(i) सांभर / अजमेर
(ii) रणथम्भौर
(iii) नाडोल
(iv) जालौर
(v) सिरोही
(vi) बूंदी
(vii) कोटा

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

सांभर / अजमेर के चौहानों का इतिहास

वासुदेव-

- राजशेखर की पुस्तक 'प्रबन्ध कोष' के अनुसार वासुदेव ने 551 ई. में सांभर में चौहान राज्य की स्थापना की।
- बिजौलिया अभिलेख (1170 ई.) के अनुसार इसने सांभर झील का निर्माण करवाया तथा नागौर को अपनी राजधानी बनाया।

गूवक प्रथम-

- चौहान पहले गुर्जर प्रतिहारों के सामन्त थे।
- प्रतिहार राजा नागभट्ट-II (भीनमाल) ने इसे 'वीर' की उपाधि दी।
- कालान्तर में इसने प्रतिहारों की अधीनता मानने से मना कर दिया।

- इस प्रकार यह पहला स्वतंत्र चौहान राजा था।
- गूवक ने हर्षनाथ मन्दिर का निर्माण करवाया था जो चौहानों के ईष्टदेव थे।

चन्दनराज -

- इसकी रानी आत्मप्रभा / रूद्राणी, पुष्कर झील में 1000 दीपक जलाकर भगवान शिव की पूजा करती थी।
- यह यौगिक क्रिया में निपुण थी।

वाक्पतिराज -

- यह 108 युद्धों का विजेता था।
- इसके बेटे लक्ष्मणराज ने नाडोल (पाली) में चौहान राज्य की स्थापना की।

विग्रहराज -II -

- गुजरात के चालुक्य राजा 'मूलराज-I' को हराया था तथा भड़ौंच (GJ) में अपनी कुलदेवी 'आशापुरा माता' का मन्दिर बनवाया।

गोविन्द -III

- इतिहासकार फरिश्ता के अनुसार इसने गजनी के राजा को मारवाड़ पार करने नहीं दिया था।
- उस समय गुजरात का चालुक्य राजा भीम-I भी इसके साथ था।
- उपाधि- वैरिघट्ट (पृथ्वीराज विजय के अनुसार)
  → (शत्रुसंहारक)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

दुर्लभराज-III-

दशरथ शर्मा के अनुसार इसने गजनी के राजा इब्राहिम का सामना किया था।

विग्रहराज-III

इसने गजनी के राजा शहाबुद्दीन को हराया था।

पृथ्वीराज-I

इसने बगुलीशाह नामक मुस्लिम आक्रमणकारी को हराया था।

अजयराज (1105-1133 ई.)

- 1113 ई. में अजमेर की स्थापना की तथा अजमेर में किले का निर्माण करवाया।
- इसने "गर्जन मातंग" (गजनी के राजा) को हराया।
- इसने पार्श्वनाथ मन्दिर में सोने का कलश भेंट किया।
- इसने दिगम्बरों तथा श्वेताम्बरों के बीच शास्त्रार्थ की अध्यक्षता की थी।
- इसने अपनी रानी सोमलदेवी / सोमलेखा के नाम से चाँदी एवं तांबे के सिक्के चलाये थे। ये सिक्के 'अजयप्रिय द्रम्म' कहलाये।
- अपने अन्तिम समय में इसने अपने पुत्र अर्णोराज को शासन सौंप दिया था तथा स्वयं सन्यासी बन गया।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

अर्णोराज (1133-1155 ई.)-

- 1135 ई. में इसने तुर्कों को हराया तथा युद्ध स्थल पर 'आनासागर झील का निर्माण करवाया।
- पुष्कर मे वराह मन्दिर (भगवान विष्णु) का निर्माण करवाया था।

- इसने मालवा के नरवर्मन को हराया था।
- इसने गुजरात के चालुक्य राजा जयसिंह सिद्धराज को हराया था।
- जयसिंह सिद्धराज ने अपनी राजकुमारी कांचन देवी का विवाह इससे कर दिया।
- यह गुजरात के चालुक्य राजा कुमारपाल से हार गया था तथा अपनी राजकुमारी 'जाल्हण देवी' का विवाह कुमारपाल से करवाया। अजमेर जीतने के बाद कुमारपाल चितौड़ गया।
- इस युद्ध का वर्णन 'प्रबन्ध चिंतामणी' व 'प्रबन्ध कोष' में मिलता है।
- इसने खरतरगच्छ (जैन) सम्प्रदाय को भूमि अनुदान दिया।
- <u>दरबारी विद्वान</u>- देवघोष, धर्मघोष
- इसकी हत्या इसके बेटे जग्गदेव ने कर दी थी।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

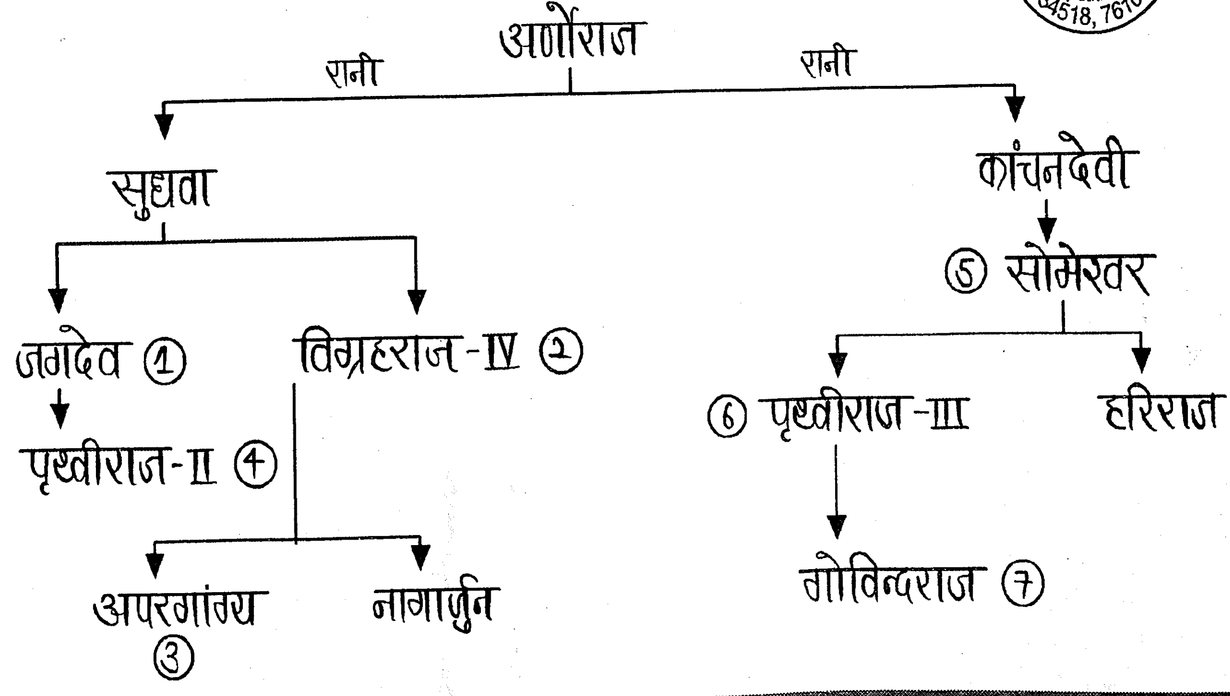

जगदेव-

इसके भाई विग्रहराज-IV ने इसे हटा दिया था।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

विग्रहराज-IV (1158-63 ई.)

- दशरथ शर्मा के अनुसार इसका शासनकाल अजमेर के चौहानों का स्वर्णकाल था।
- ललित विग्रहराज पुस्तक के अनुसार इसने गजनी के खुसरोशाह को हराया था।
- इसने गुजरात के कुमारपाल चालुक्य को हराया था।
- बिजौलिया अभिलेख के अनुसार इसने ढिल्लिका (दिल्ली) के तौमर राजाओं को हराया था तथा उन्हें अपना सामंत बना लिया था।
- इसने दिल्ली शिवालिक स्तम्भ अभिलेख लगवाया था।
- यह अभिलेख अशोक के दिल्ली टोपरा अभिलेख के ठीक नीचे लिखा हुआ है।
  - टोपरा → (हरियाणा)
- इसने बीसलपुर टोंक की स्थापना की तथा यहाँ तालाब एवं शिव मन्दिर का निर्माण करवाया।
- इसने हरकेलि नामक नाटक लिखा था।
  - हरकेलि ↓ (यह भारवि के किरातार्जुनीयम नाटक पर आधारित है)
- धर्मघोष सुरि के कहने पर एकादशी के दिन पशुहत्या पर रोक लगाई।
- अजमेर में सरस्वती कंठाभरण नामक संस्कृत पाठशाला की स्थापना की। इस पाठशाला की दीवारों पर हरकेलि तथा ललित विग्रहराज की पंक्तियाँ लिखी गई थी।

- कुतुबद्दीन ऐबक ने इस पाठशाला को तोड़ दिया था तथा इसे मस्जिद में बदल दिया था।
  - इसे अढ़ाई दिन का झोंपड़ा कहा जाता है।

- इस मस्जिद के पास पीर पंजाबशाह का अढ़ाई (२½) दिन का उर्स लगता है।

- दरबारी विद्वान-

1. सोमदेव - ललित विग्रहराज
   - इस पुस्तक में विग्रहराज तथा देसल देवी की प्रेम कहानी का वर्णन है।

उपाधि- 1. बीसलदेव
2. कवि बन्धु / (पृथ्वीराज विजय के अनुसार)
या
कवि बान्धव (जयानक भट्ट)

- किलहोर्न ने विग्रहराज की तुलना कालिदास तथा भवभूति से की थी।

अपरगांग्य-

पृथ्वीराज -II ने इन्हें हटा दिया था।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

पृथ्वीराज -II

- इसने हांसी (हरियाणा) में महल का निर्माण करवाया तथा यहाँ अपने यहाँ अपने मामा गुहिल कल्हण की नियुक्ति की।

हांसी अभिलेख-1167 ई.

- रूठी रानी मंदिर (शिव मन्दिर) के धौड़ (भीलवाड़ा) अभिलेख (1168 ई.) के अनुसार इसने अपना राज्य बाहुबल से प्राप्त किया था।

- इस अभिलेख में रानी का नाम सुहव देवी है।

- इसने मेनाल में सुहेश्वर मन्दिर (शिव मन्दिर) का निर्माण करवाया था।

सोमेश्वर →

- इसका अधिकांश समय गुजरात में बीता था।
- इसने कुमारपाल के शत्रु कोंकण (M.H) के राजा मल्लिकार्जुन को हराया था।
- रानी- कर्पूरी देवी (चेदि के राजा अचलराज कलचूरि की पुत्री)
- इसने अजमेर में वैद्यनाथ मन्दिर का निर्माण करवाया, तथा इसमें ब्रह्मा, विष्णु, महेश की मूर्तियाँ लगाई गई।
- इसने अजमेर में अपनी तथा अपने पिता अर्णोराज की मूर्तियाँ लगवाई।
- उपाधि - प्रताप लंकेश्वर
- इसके शासनकाल में बिजौलिया अभिलेख लगवाया गया।

पृथ्वीराज - III (1177-92) -

- पिता - सोमेश्वर
- माता - कर्पूरी देवी (संरक्षिका)

- यह 11 वर्ष की उम्र में राजा बना।
- प्रमुख मंत्री -
  - कदम्बवास / कैमास
  - भुवनमल्ल
  - स्कन्द
  - वामन
  - सोढ

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- इसने अपने चचेरे भाइयों नागार्जुन तथा अपरगांग्य के विद्रोह को दबाया था।

- नागार्जुन ने गुरुग्राम को अपना मुख्य केन्द्र बना रखा था।

- 1182 ई. में मथुरा, अलवर तथा भरतपुर क्षेत्रों में भण्डानक जनजाति के विद्रोह को दबाया था।
    - यह जानकारी जिनपत्ति सूरि की पुस्तकों से प्राप्त होती है।
    - भण्डानक जनजाति पंजाब के सतलज क्षेत्र से आकर गुरुग्राम हिसार क्षेत्रों में रहने लगी थी।

* महोबा का युद्ध/ तुमुल का युद्ध (1182 ई.)-

परमार्दिदेव चन्देल V/S पृथ्वीराज-III
(महोबा, M.P)

- कारण- परमार्दिदेव चन्देल ने पृथ्वीराज-III के घायल सैनिकों को मरवा दिया था।

- युद्ध में पृथ्वीराज-III की जीत हुई तथा उसने पंजवनराय को महोबा का शासक बनाया।

- परमार्दिदेव के सेनापति - आल्हा और ऊदल

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

* नागौर का युद्ध (1184 ई.)-

- पृथ्वीराज-III V/S भीम-II चालुक्य
(गुजरात)

कारण-

- दोनों अपने साम्राज्य का विस्तार करना चाहते थे।

- चौहानों तथा चालुक्य में लम्बे समय से दुश्मनी चली आ रही थी।

- दोनों आबू की परमार राजकुमारी इच्छिनी देवी से विवाह करना चाहते थे, लेकिन पृथ्वीराज ने उससे विवाह कर लिया था।

- जगदेव प्रतिहार ने इन दोनों के बीच संधि करवा दी थी।
  (भीम - II का सेनापति)

चौहान - गहड़वाल विवाद-

पृथ्वीराज - III v/s जयचन्द (कन्नौज)

- कारण-
  1. दिल्ली का उत्तराधिकार
  2. जयचन्द, पृथ्वीराज के खिलाफ परमार्दिदेव की सहायता कर रहा था। (चंदेल)
  3. पृथ्वीराज ने जयचन्द की बेटी संयोगिता का अपहरण कर उससे विवाह कर लिया था।

- दशरथ शर्मा ने इस प्रेम कहानी को ऐतिहासिक तथ्य के रूप में स्वीकार किया है (The early Chauhan Dynasty)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

तराइन का प्रथम युद्ध (1191 ई.)- (हरियाणा)

पृथ्वीराज - III v/s गौरी (गजनी)

- कारण-
  1. गौरी ने तबरहिन्द (भटिण्डा) पर अधिकार कर लिया था।
  2. चौहानों तथा गजनी के राजाओं में लम्बे समय से दुश्मनी चली आ रही थी।

- पृथ्वीराज - III युद्ध जीत गया तथा जियाउद्दीन को गिरफ्तार कर लिया।

- दिल्ली के गोविन्दराज तोमर ने गौरी को घायल कर दिया था।

तराईन का द्वितीय युद्ध (1192 ई.)-

पृथ्वीराज-III v/s गौरी
↳ विजयी

- पृथ्वीराज को सिरसा के पास सरस्वती नामक स्थान से गिरफ्तार कर लिया गया तथा उसे मार दिया गया।

- हसन निजामी के अनुसार पृथ्वीराज ने कुछ दिनों तक गौरी के अधीन शासन किया था।

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- हसन निजामी की पुस्तक → "ताज-उल-मासिर"

* पृथ्वीराज चौहान की हार के कारण-

- पृथ्वीराज चौहान के पड़ोसी राज्यों के साथ मतभेद थे अतः किसी भी राजा ने गौरी के खिलाफ उसकी सहायता नहीं की।

- तराइन के प्रथम युद्ध के बाद पृथ्वीराज ने गौरी को युद्ध की तैयारी के लिए पर्याप्त समय दिया।

- तराइन के दूसरे युद्ध में पृथ्वीराज की सेना गौरी के मुकाबले कम थी तथा उसके अधिकतर सेनापति अन्य सीमाओं पर व्यस्त थे।

- गौरी एक अच्छा सेनापति था तथा उसने अपनी कूटनीति से पृथ्वीराज को हरा दिया था।

- तुर्क सेना ने घोड़ों का प्रयोग किया, जबकि राजपूतों ने हाथियों का प्रयोग किया।

- तुर्कों ने राजपूतों की अपेक्षा हल्के हथियारों का प्रयोग किया था।

तराइन युद्ध का महत्व या प्रभाव-

- पृथ्वीराज की हार के बाद गौरी के उत्तराधिकारी के लिए भारत में राज करना आसान हो गया था।
  यहीं से तुर्की शासन की नींव भारत में पड़ी।

THE NOTES HUB Notes are Available All Competition Books 7300134518, 7610010054

- राजपूतों की उभरती हुई राजनीतिक महत्वकांक्षाएँ समाप्त हो गई थी तथा पृथ्वीराज के बाद कोई भी राजपूत राजा दिल्ली पर अधिकार नहीं कर पाया।

- तराइन के दूसरे युद्ध के बाद भारत में विदेशी शासन का सिलसिला प्रारम्भ हो जाता है, जो 1947 ई. तक चलता रहा।

- तुर्क शासन की स्थापना के कारण भारतीय कला व संस्कृति पर कई सकारात्मक व नकारात्मक प्रभाव देखे गए-

A. सकारात्मक प्रभाव-

- भारत में इण्डो-इस्लामिक नामक साझी संस्कृति का उदय हुआ। जिसके प्रभाव स्थापत्य कला, साहित्य, संगीत, चित्रकला आदि पर दिखाई दिये।

- भारत मे सूफी तथा भक्ति आन्दोलन प्रारम्भ हुए।

B. नकारात्मक प्रभाव-

- तुर्क आक्रमणकारियों ने हिन्दू मन्दिरों तथा बौद्ध मठों को तोड़ा, जिससे कला व संस्कृति का पतन हुआ।

- 1200 ई. के बाद बौद्ध संस्कृति भारत से लगभग समाप्त हो गई।

- तुर्कों ने विद्या केन्द्रों को नष्ट कर दिया जिससे शिक्षा व्यवस्था का पतन हुआ।

पृथ्वीराज की सांस्कृतिक उपलब्धियाँ-

- कला एवं संस्कृति विभाग की स्थापना की थी।

मंत्री - पदमनाभ

- पिथौरागढ किला (दिल्ली) का निर्माण करवाया।

दरबारी विद्वान-

1. चन्दबरदाई (पृथ्वीभट्ट) - पृथ्वीराज रासौ (रचना)
2. जयानक - पृथ्वीराज विजय
3. वागीश्वर जनार्दन
4. विद्यापति गौड़
5. विश्वरूप
6. आशाधर

पृथ्वीराज की उपाधियां-

- राय पिथौरा
- दलपुंगल

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

पृथ्वीराज चौहान का मूल्यांकन-

- पृथ्वीराज पर अपरिपक्व सेनापति तथा अदूरदर्शी राजा होने का आरोप लगाया जाता है। लेकिन यह आरोप सही नहीं है।

- तराइन के दूसरे युद्ध से पहले उसने किसी भी युद्ध में हार का सामना नहीं किया गया था अतः उसे अपरिपक्व सेनापति नहीं कहा जा सकता।

- दुश्मन की भागती हुई सेना पर आक्रमण नहीं करना तथा माफी माँगने पर दुश्मन को छोड़ देना, उस समय की भारतीय संस्कृति के आदर्श थे तथा पृथ्वीराज चौहान भी इन्हीं आदर्शों का पालन कर रहा था।

- हालांकि उसकी हार ने भारत की गुलामी का मार्ग प्रशस्त कर दिया था लेकिन फिर भी मध्यकालीन भारतीय इतिहास में उसके महत्त्व को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

गोविन्दराज-

इसने तुर्कों की अधीनता स्वीकार कर ली थी। अतः इसके चाचा हरिराज ने इसे हटा दिया।

- यह रणथम्भौर चला गया तथा वहाँ इसने चौहान राज्य की स्थापना की।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

हरिराज:-

- इसने अपने सेनापति 'चतरराज' को दिल्ली पर आक्रमण करने के लिए भेजा, लेकिन उसे हार का सामना करना पड़ा।

- कुतुबुद्दीन ऐबक ने अजमेर पर आक्रमण कर दिया तथा उसने हरिराज को हराकर अजमेर पर अधिकार कर लिया।

- हरिराज ने आत्महत्या कर ली तथा अजमेर पर तुर्कों का अधिकार हो गया। (1194 ई.)

रणथम्भौर का इतिहास

- रणथम्भौर में चौहान वंश का शासन था।

1. गोविन्दराज-

- पृथ्वीराज चौहान-III का पुत्र।
- 1194 ई. में इसने रणथम्भौर में चौहान राज्य की स्थापना की थी।

2. वाल्हण

3. प्रह्लादन

4. वीरनारायण- यह दिल्ली के सुल्तान इल्तुतमिश के खिलाफ लड़ता हुआ मारा गया।

5. वागभट्ट- दिल्ली के नासिरुद्दीन महमूद ने रणथम्भौर पर आक्रमण किया। लेकिन वह रणथम्भौर पर अधिकार नहीं कर सका।

NOTE- रजिया सुल्तान के सेनापति कुतुबद्दीन हसन को हराया।

6. जैत्रसिंह-

उसने 32 वर्षों तक शासन किया था।
तथा अपने जीवनकाल में ही अपने बेटे हम्मीर को राजा बना दिया था।

7. हम्मीर (1282 ई.-1301 ई.)-

- हम्मीर 17 में से 16 युद्धों का विजेता था।
- उसने अपने कई पड़ोसी राजाओं को हराया,

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books 7300134518, 7610010054

जैसे-
- प्रतापसिंह (आबू)
- समरसिंह (मेवाड़)
- भोज परमार (धार / धारा नगरी) - मालवा
- अर्जुन (भीमरस) U.P.

- दिल्ली के सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी ने रणथम्भौर पर दो आक्रमण किए (1290 ई. एवं 1292 ई.) पर सफलता नहीं मिली।
- अपनी विफलता पर जलालुद्दीन खिलजी ने कहा था, कि
  "मैं ऐसे 10 किलों को मुसलमान के बाल के बराबर नहीं समझता हूँ"।
- अमीर खुसरो ने अपनी पुस्तक 'मिफता-उल-फुतुह' में जलालुद्दीन खिलजी के आक्रमणों का वर्णन किया है।
- 1301 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने रणथम्भौर पर आक्रमण किया।

आक्रमण के कारण-

- अलाउद्दीन अपने साम्राज्य का विस्तार करना चाहता था।
- रणथम्भौर दुर्ग सामरिक महत्व के लिए प्रसिद्ध।
  (ऊँची पहाड़ी पर था)
- रणथम्भौर दुर्ग दिल्ली से मालवा व गुजरात के व्यापारिक मार्ग पर स्थित था।
- हम्मीर ने अलाउद्दीन खिलजी के विद्रोहियों को शरण दी थी-
  - (i) मुहम्मदशाह
  - (ii) केहब्रू

सेनापति

अलाउद्दीन
(i) नुसरत खां
(ii) उलुग खां
(iii) अलप खां

हम्मीर
(i) भीम सिंह
(ii) धर्म सिंह

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- नुसरत खाँ तथा भीमसिंह लड़ते हुऐ मारे गये थे।
- 1301 ई. में रणथम्भौर में साका किया गया। यह राजस्थान का पहला साका था।
- हम्मीर की रानी रंगदेवी ने जौहर किया।
  - अमीर खुसरो ने इस जौहर का वर्णन किया।
    - ↳ पुस्तक - 'खजाईन - उल - फुतुह'
  - यह फारसी भाषा में जौहर की पहली जानकारी है।
- हम्मीर ने केसरिया किया।
- अलाउद्दीन खिलजी ने रणथम्भौर पर अधिकार कर लिया तथा उलूग खां को रणथम्भौर सौंप दिया (11 July 1301)
- अमीर खुसरो ने कहा था कि
  "आज कुफ्र का घर इस्लाम का घर हो गया है"

* देवल दे- • यह हम्मीर की राजकुमारी थी।
  • इसने पद्म तालाब में कूदकर आत्महत्या कर ली। (जल जौहर)

→ रणमल एवं रतिपाल दोनों ने हम्मीर के साथ विश्वासघात किया।

* हम्मीर की सांस्कृतिक उपलब्धियाँ-

- हम्मीर ने शृंगार हार नामक पुस्तक लिखी।
- हम्मीर ने 'कोटि यज्ञ' का आयोजन करवाया था।
  - पुरोहित - विश्वरूप
- अपने पिता जैत्रसिंह के ३२ वर्षों के शासनकाल की याद में हम्मीर ने रणथम्भौर में '३२ खम्भो की छतरी' का निर्माण करवाया था।

* दरबारी विद्वान- (i) राघवदेव (हम्मीर के गुरु)
(ii) बीजादित्य

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

* हम्मीर का मूल्यांकन :-

- हम्मीर पर कर बढ़ाने तथा हठ के लिए युद्ध करने का आरोप लगाया जाता है, लेकिन उसे इन आरोपों से मुक्त किया जा सकता है।
- कर उस समय बढ़ाए गए थे जिस समय युद्ध चल रहा था तथा युद्ध के लिए अधिक धन की आवश्यकता थी, और ऐसा सभी राजाओं द्वारा किया जाता था।
  तथा हम्मीर ने युद्ध से पहले कभी कर नहीं बढ़ाए थे।
- शरणागत की रक्षा करना उस समय की भारतीय संस्कृति का आदर्श था तथा हम्मीर इसी आदर्श का पालन कर रहा था।
- उसकी बहादुरी तथा शरणागत की रक्षा के लिए सब कुछ न्यौछावर कर देने की भावना न केवल अविस्मरणीय है बल्कि उसे पहली पंक्ति में खड़ा कर देती है।

➥ किसी कवि ने हम्मीर के बारे में ठीक कहा है,-

"सिंह गमन, सत्पुरुष वचन, कदली फलै इक बार
तिरिया तेल, हम्मीर हठ, चढ़ै न दूजी बार ॥"

* हम्मीर से संबंधित पुस्तकें-

1. नयनचन्द्र सूरि - हम्मीर महाकाव्य
2. सारंगधर - हम्मीर रासो
3. जोधराज - हम्मीर रासो
4. चन्द्रशेखर - हम्मीर हठ
5. अमृत कैलाश - हम्मीर बन्धन
6. भांडउ व्यास - हम्मीरायण
7. महेश - हम्मीर रासो

नाडोल (पाली) का इतिहास

➥ चौहान वंश का शासन था।

1. लक्ष्मणराज-

पिता - वाक्पतिराज (सांभर)

960 ई. में इसने नाडोल में 'चौहान राज्य' की स्थापना की।

कुलदेवी आशापुरा माता का मन्दिर बनवाया।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

2. केल्हण-

➥ इसने कायन्द्रा के युद्ध में भाग लिया था।

➥ अपनी राजकुमारी गीगा देवी व शृंगार देवी का विवाह आबु के धारावर्ष परमार के साथ किया।

➥ इनके छोटे भाई कीर्तिपाल ने जालौर में चौहान राज्य की स्थापना की।

MAHECHA PUBLICATION

बून्दी का इतिहास

- बून्दी में चौहान वंश की हाड़ा शाखा का शासन था।
- पहले बून्दी पर मीणा राजाओं का अधिकार था।
- बून्दा मीणा के नाम पर इसका नाम बून्दी पड़ा।
- रणकपुर (पाली) अभिलेख में बून्दी का नाम 'वृन्दावती' दिया गया है।

1. देवा-
- 1241 ई. में इसने जैता मीणा को हराया तथा बून्दी में चौहान वंश की हाड़ा शाखा का शासन प्रारम्भ किया।

2. जैत्रसिंह-
- 1274 ई. में इसने कोटा को जीतकर बून्दी में मिला लिया था।

3. बरसिंह-
- 1354 ई. में इसने बून्दी में 'तारागढ़ किले' का निर्माण करवाया।
- यह किला अपने भित्ती चित्रों के लिए प्रसिद्ध है।

4. सुरजन-
- 1569 ई. में अकबर ने रणथम्भौर पर आक्रमण किया।
- इस समय सुरजन अकबर से सन्धि कर लेता है।
- इसमें आमेर के भगवन्त दास की मुख्य भूमिका थी।
- इसने द्वारिका में रणछोड़ मन्दिर का निर्माण करवाया।
- दरबारी विद्वान = चन्द्रशेखर → पुस्तक = हम्मीर हठ, सुरजन चरित

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

5. बुद्ध सिंह- पुस्तक - नेहतरंग

बून्दी का उत्तराधिकार संघर्ष

- बुद्ध सिंह के दो पुत्रों दलेल सिंह (दत्तक पुत्र) व उम्मेद सिंह के मध्य उत्तराधिकार संघर्ष हुआ।
- सवाई जयसिंह ने दलेल सिंह का समर्थन किया।
- मराठों ने उम्मेदसिंह का पक्ष लिया।
- बून्दी राजस्थान की पहली रियासत थी, जिसमें मराठों ने हस्तक्षेप किया। (आन्तरिक राजनीति में)

* अमर कंवर-
  - यह सवाई जयसिंह की बहन तथा बुद्ध सिंह की रानी थी।
  - उसने उम्मेद सिंह के पक्ष में मराठा सेनापति 'मल्हार राव होल्कर' को बुलाया।

* कृष्णा कंवर-
  - सवाई जयसिंह की बेटी
  - दलेल सिंह की रानी

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

6. विष्णु सिंह- 1818 ई. में यह अंग्रेजों से सन्धि कर लेता है।

कोटा का इतिहास

- कोटा में चौहान वंश की हाड़ा शाखा का शासन था।

1. माधोसिंह-

- यह बून्दी के राजा रत्नसिंह का पुत्र था।
- 1631 ई. में मुगल बादशाह शाहजहाँ ने बून्दी रियासत का विभाजन कर दिया था तथा माधोसिंह को कोटा का स्वतंत्र राजा बना दिया।
- मध्य एशियाई अभियान की सफलता के बाद शाहजहाँ ने उसे "बाद रफ्तार" नामक घोड़ा भेंट किया था।

मुगल बादशाह जहाँगीर ने बून्दी के राजा रत्नसिंह को रामराज तथा सरबुलन्दराय की उपाधियाँ दी थी।

2. मुकुन्द सिंह-

- उसने कोटा में अबली मीणी का महल बनवाया था।
- यह धरमत के युद्ध में लड़ता हुआ मारा गया।
  → (दारा के साथ था)

3. भीम सिंह-

- यह 'वल्लभ सम्प्रदाय' का अनुयायी था।
- उसने स्वयं का नाम बदलकर कृष्णदास कर लिया।
- उसने कोटा का नाम बदलकर 'नन्दग्राम' तथा शेरगढ़ बाराँ का नाम 'बरसाना' कर दिया था।
- उसने बाराँ में सांवरिया जी मन्दिर का निर्माण करवाया।
- मुगल बादशाह फर्रुखशियर के कहने पर उसने बून्दी पर आक्रमण किया तथा बून्दी के राजा बुद्धसिंह को हराया।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- इसने बून्दी का नाम बदलकर 'फर्रूखाबाद' रखा था।
- यह बून्दी के किले से 'कड़क बिजली' तथा 'धूलधाजी' नामक तोपे उठाकर ले गया था।

4. उम्मेदसिंह -

- 1817 ई. में यह अंग्रेजों के साथ संधि कर लेता है।
- फरवरी 1818 ई. में अंग्रेजों ने कोटा रियासत के साथ पूरक संधि की।

* पूरक सन्धि की शर्तें -

- जालिम सिंह झाला व उसके वंशज हमेशा कोटा के दीवान रहेंगे।
- कोटा की सारी शक्तियाँ दीवान को दी जायेगी।

5. किशोरसिंह - II

- मांगरोल का युद्ध (1831 ई.)
  - किशोर सिंह - II V/s जालिमसिंह झाला (विजयी)
- इस युद्ध में अंग्रेजों ने जालिम सिंह झाला का साथ दिया। (कर्नल जेम्स टॉड ने सहायता की)

6. रामसिंह - II

- 1838 ई. में अंग्रेजों ने कोटा रियासत का विभाजन कर दिया तथा मदनसिंह झाला को झालावाड़ का स्वतंत्र राजा घोषित कर दिया गया।
- यह जालिमसिंह झाला का पोता था।
- झालावाड़ राजस्थान की अन्तिम रियासत थी।
  - राजधानी - झालरापाटन

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

झालावाड़ का इतिहास

- झालावाड़ में झाला वंश का शासन था।

1. मदनसिंह-

- जालिम सिंह झाला का पौत्र।
  - 1837 ई. कोटा से अलग स्वतंत्र राज्य की स्थापना।
  - 1838 ई. झालावाड़ रियासत को अंग्रेजों ने मान्यता दी।
- यह राजस्थान की अन्तिम रियासत थी।
- राजधानी - झालरापाटन
  - चन्द्रभागा नदी के किनारे
  - अन्य नाम -'घण्टियों का शहर'

* इटली के रोम को 'घण्टियों का शहर' कहते है।

2. राजेन्द्र सिंह-

- झालावाड़ में काष्ठप्रासाद का निर्माण।
- झालावाड़ के सभी मन्दिर हरिजनों हेतु खुलवा दिये।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

सिरोही का इतिहास

- सिरोही में चौहान वंश की 'देवड़ा' शाखा का शासन था।

1. लुम्बा-

- 1311 ई. में परमारों को हराकर, आबू तथा चन्द्रावती (सिरोही) पर अधिकार किया।
- चन्द्रावती को राजधानी बनाया।

2. शिवभान- 1405 ई. में इसने शिवपुरी को अपनी राजधानी बनाया।

3. सहसमल- 1425 ई. में सिरोही की स्थापना की तथा अपनी राजधानी बनाया।

4. सुरताण-

इस समय बीजा देवड़ा भी सिरोही पर अधिकार करना चाहता था। अतः बीकानेर के रायसिंह के कहने पर सुरताण ने सिरोही का आधा भाग अकबर को दे दिया था और अकबर ने इसे प्रताप के छोटे भाई जगमाल को दे दिया था।

- पहले अकबर ने जगमाल को जहाजपुर (भीलवाड़ा) परगना दिया था।

* दत्ताणी का युद्ध - 1583 ई. →

सुरताण v/s अकबर

सुरताण → विजयी

अकबर:
- → जगमाल (प्रताप का भाई)
- → रायसिंह (चन्द्रसेन का बेटा)
- → दाँती सिंह (कोलीवाड़ा)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- जगमाल व रायसिंह लड़ते हुए मारे गये थे।

- **दरबारी विद्वान-** • दुरसा आढ़ा - 'राव सुरताण रा कवित्त'

NOTE- अचलगढ़ किले में दुरसा आढ़ा की मूर्ति लगी है।

5. **वैरिसाल-** जोधपुर के अजीत सिंह को औरंगजेब के खिलाफ कालिन्द्रि नामक गाँव में शरण दी।
   कालिन्द्रि → (सिरोही)

6. **शिवसिंह-**

- १८२३ ई. में अंग्रेजों के साथ संधि की।
- सिरोही राजस्थान की अन्तिम रियासत थी जिसने अंग्रेजों के साथ संधि की थी।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

जालौर का इतिहास

- "जाबालि ऋषि" के कारण जालौर को "जाबालिपुर" कहा जाता था।

  जाबालिपुर - बिजौलिया प्रशस्ति में

- जाल के पेड़ो की अधिकता के कारण इसका नाम जालौर पड़ा।
- जालौर का किला सोनगिरि पहाड़ी पर स्थित है।
- जालौर के किले को सुवर्णगिरि, सोनगढ़, कांचनगिरि भी कहते है।
- अतः जालौर के चौहान 'सोनगरा चौहान' कहलाते है।

1. कीर्तिपाल- (नाडोल शासक केल्हण का छोटा भाई)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- इसने कायन्द्रा युद्ध में भाग लिया।
- 1179 ई.→ मेवाड़ के सामंतसिंह को हराया।
- 1181 ई.→ कुन्तपाल परमार को हराकर इसने जालौर में चौहान वंश की सोनगरा शाखा स्थापित की।
- सुंधा अभिलेख में कीर्तिपाल को 'राजेश्वर' कहा गया है।
- मुहणौत नैणसी की 'नैणसी-री- ख्यात' के अनुसार-

  "कीतू एक महान राजा था"
  → (कीर्तिपाल)

2. समरसिंह-

- इसने जालौर में परकोटा, शस्त्रागार तथा कोषागार बनवाया।
- अपनी राजकुमारी 'लीलादेवी' का विवाह गुजरात के चालुक्य राजा 'भीम-II' से किया।

3. उदयसिंह-

- इल्तुतमिश से मण्डौर (जोधपुर) तथा नाडोल (पाली) छीन लिए।
- इसने गुजरात के लवण प्रसाद को हराया।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

4. चाचिगदेव-

- उपाधि- 'महाराजाधिराज'
- यह नासिरूद्दीन महमूद तथा बलबन का समकालीन था लेकिन ये दोनों जालौर पर आक्रमण करने का साहस नहीं जुटा पाए।

5. सामन्तसिंह

- 1291 ई.- जलालुद्दीन खिलजी ने जालौर पर आक्रमण किया।
- जलालुद्दीन सांचौर तक पहुँच गया था। लेकिन सामन्तसिंह ने सारंगदेव बाघेला की सहायता से इसे रोक दिया था।

6. कान्हड़ देव-

- अलाउद्दीन खिलजी ने सिवाणा (बालोतरा) तथा जालौर पर आक्रमण किये थे। → (1311 ई.) ←
- कारण-

(i) अलाउद्दीन की साम्राज्य विस्तार नीति।

(ii) जालौर, दिल्ली से गुजरात व द. भारत के व्यापारिक मार्गों पर स्थित था।

(iii) गुजरात आक्रमण के दौरान कान्हड़देव ने अलाउद्दीन को जालौर से होकर जाने का रास्ता नहीं दिया था।

(iv) गुजरात अभियान से लौटते समय अलाउद्दीन की सेना पर इसके

सेनापति 'जैता देवडा' ने आक्रमण कर दिया एवं सोमनाथ मंदिर के शिवलिंग के टुकड़े छिन लिये।

(v) फरिश्ता के अनुसार - 1305 ई. में 'आईन-उल-मुल्क' मुल्तानी ने जालौर पर आक्रमण कर कान्हड़देव को दिल्ली ले गया। (संधि के लिए)

- लेकिन वहाँ उसने अलाउद्दीन की युद्ध की चुनौती को स्वीकार किया।

(vi) नैणसी के अनुसार आक्रमण का कारण अलाउद्दीन की पुत्री फिरोजा का वीरमदेव के प्रति आकर्षण था।
(सती हुई थी)

फिरोजा की धाय माँ - गुल विहिस्त

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

अलाउद्दीन का सिवाणा पर आक्रमण - 1308 ई.

- सिवाणा को जालौर की चाबी कहा जाता था।
- उस समय सिवाणा का किला कान्हड़देव के भतीजों 'सातल' एवं 'सोम' के पास था।
- एक भायल सैनिक ने विश्वासघात किया।
- 1308 ई. में सातल एवं सोम के नेतृत्व में सिवाणा का प्रथम साका हुआ।
- अलाउद्दीन ने सिवाणा पर अधिकार कर उसका नाम "खैराबाद" रखा और कमालुद्दीन गुर्ग को सौंप दिया।
- इस आक्रमण में नाहर खाँ नामक तुर्क सेनापति मारा गया था।

NOTE-	झाईन को 'रणथम्भौर की चाबी' कहा जाता था तथा अलाउद्दीन ने इसका नाम बदलकर 'नौशहर' कर दिया

- तुर्कों ने सांचौर के महावीर मन्दिर को तोड़ दिया तथा शिक्षा के केन्द्र 'भीनमाल को बर्बाद कर दिया।

मालकाना का युद्ध- नागौर

इसमें कान्हड़देव ने तुर्कों को हराया तथा तुर्क सेनापति 'शम्स खाँ' को गिरफ्तार कर लिया।

अलाउद्दीन का जालौर पर आक्रमण - 1311 ई.

- वीका दहिया ने कान्हड़देव के साथ विश्वासघात किया।
- वीका दहिया को उसकी पत्नी हीरादे ने मार दिया।
- 1311 ई. में कान्हड़देव तथा वीरमदेव के नेतृत्व में जालौर में साका किया गया।
- अलाउद्दीन ने यहाँ अलाई मस्जिद (तोपखाना) का निर्माण करवाया।
  - पद्मनाभ — (i) कान्हड़देव प्रबन्ध

    (ii) वीरमदेव सोनगरा री बात

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

परमार वंश का इतिहास

- परमार → "शत्रु को मारने वाला"
  ↓
  जानकारी स्रोत
  ↓
  परमार शिलालेख एवं कवि पद्मगुप्त (परिमल) द्वारा रचित नवसहसांकचरित

- परमार वंश की रियासतें - (i) आबू
  (ii) मालवा
  (iii) वागड़
  (iv) जालौर
  (v) किराडू

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

आबू के परमार-

परमारों का उत्पत्ति स्थल = आबू

1. **धूमराज-** यह परमारों का आदिपुरुष था।

2. **उत्पलराज-** आबू के परमारों की वंशावली प्रारम्भ होती है।

3. **धरणीवराह-** गुजरात के चालुक्य राजा मूलराज -I ने आबू पर आक्रमण किया।

   इस समय धवल राठौड़ ने इसे शरण दी।

- यह जानकारी धवल राठौड़ के हस्तीकुण्डी (पाली) अभिलेख से प्राप्त होती है। (997 ई.)

- धरणी वराह ने अपने राज्य को 9 भागों में विभक्त किया, अतः इसका राज्य 'नवकोटी मारवाड़' कहलाता था।

4. धन्धुक-

- गुजरात के चालुक्य राजा भीम-I ने आबू पर आक्रमण किया।
- धन्धुक भोज परमार के साथ चितौड़ चला गया।
- विमलशाह ने धन्धुक व भीम-I के मध्य समझौता करा दिया।
- विमलशाह ने देलवाड़ा में आदिनाथ जैन मन्दिर (ऋषभदेव) का निर्माण करवाया। इसे 'विमल वसहि' भी कहते है।
- कर्नल जेम्स टॉड के अनुसार
  "यह ताजमहल के बाद भारत की दूसरी सबसे सुंदर इमारत है"
- धन्धुक की बेटी लाहिणी देवी ने वसंतगढ़ (सिरोही) में सूर्य मन्दिर तथा सरस्वती बावड़ी (लाहिणी बावड़ी) का निर्माण करवाया।
  - सर्वाधिक सूर्यमंदिर = सिरोही

5. विक्रमदेव-

- उपाधि- महामण्डलेश्वर
- इसने अर्णोराज चौहान तथा कुमारपाल चालुक्य के मध्य संघर्ष में भाग लिया।
  - जानकारी के स्रोत- (i) हेमचन्द्र ⟶ द्वयाश्रय महाकाव्य
  - (ii) जिनमण्डनोपाध्याय ⟶ कुमारपाल प्रबंध

6. धारावर्ष-

- कायन्द्रा का युद्ध- 1178 ई. सिरोही

मुहम्मद गौरी (गजनी) v/s मूलराज-II (चालुक्य) (संरक्षिका - नायिका देवी)

THE NOTES HUB * Notes are Available * All Competition Books * 7300134518, 7610010054

केल्हण —
कीर्तिपाल — सहयोगी
धारावर्ष —

- इस युद्ध में मुहम्मद गौरी की हार हुई थी।
- धारावर्ष एक तीर से तीन भैंसों को बींध देता था।
  - जानकारी के स्रोत -
    - (a) अचलगढ़ किले में धारावर्ष की मूर्ति
    - (b) पाटनारायण मंदिर अभिलेख (सिरोही) - 1287 ई.

* <u>प्रह्लादन देव-</u>

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- धारावर्ष परमार का छोटा भाई।
- उसने 'प्रह्लादनपुर' नामक नगर की स्थापना की। (गुजरात)
- उसने "पार्थ पराक्रम व्यायोग" नामक नाटक लिखा।
- पृथ्वीराज चौहान के आक्रमण के समय उसने आबू को बचाया था।
- सोमेश्वर की पुस्तक- कीर्ति कौमुदी
  - प्रह्लादनदेव की जानकारी

7. <u>सोमसिंह-</u>

- वस्तुपाल तथा तेजपाल ने देलवाड़ा में नेमीनाथ जैन मन्दिर का निर्माण करवाया था। जिसे '<u>लुणवसाही</u>' भी कहा जाता है।
  - इस मन्दिर को देवरानी-जेठानी का मंदिर भी कहा जाता है।

8. प्रतापसिंह-

- उसने मेवाड़ के जैत्रसिंह से चन्द्रावती को छीन लिया था।

9. विक्रमसिंह-

- यहाँ से आबू के परमार राजा 'रावल' तथा 'महारावल' की उपाधियाँ धारण करने लगे।
- जालौर के सोनगरा चौहानों ने आबू के परमार राजा के पश्चिमी भू-भाग पर कब्जा कर लिया।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

मालवा के परमार

राजधानी- धारानगरी (धार)

- उनका उत्पत्ति स्थल आबू था।

1. कृष्णराज-

- अन्य नाम- उपेन्द्र
- उसके पुत्र उम्बर सिंह ने वागड़ में परमार राज्य की स्थापना की।

2. मुंज परमार-

- उसने मेवाड़ के राजा शक्ति कुमार पर आक्रमण किया।
- उस समय उसने आहड़ उदयपुर को तोड़ दिया तथा चितौड़ के किले पर अधिकार कर लिया।
- उस समय धवल राठौड़ ने शक्तिकुमार की सहायता की थी।
- यह जानकारी 'हस्तीकुण्डी अभिलेख' (पाली) से मिलती है।
  - 997 ई.
- यह कर्नाटक के राजा तैलप-II के खिलाफ लड़ता हुआ मारा गया था।

MAHECI PUBLICATI

दरबारी विद्वान-

लेखक	पुस्तकें
i) हलायुध	अभिदान रत्नमाला
ii) पद्मगुप्त (परिमल)	नवसहसांक चरित
iii) धनञ्जय	दशरुपक
iv) धनपाल	तिलक मंजरी

उपाधियाँ-
1. कवि वृष
2. उत्पलराज
3. श्री वल्लभ
4. अमोघवर्ष
5. वाक्पतिराज
6. पृथ्वी वल्लभ

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books 7300134518, 7610010054

3. **सिन्धुराज-** मुंज परमार का भाई / उपाधि- नवसहसांक

4. **भोज-** इसने चितौड़ में त्रिभुवन नारायण मन्दिर का निर्माण करवाया। (भगवान शिव का मन्दिर)

- नागदा के पास इसने भोजसर झील का निर्माण करवाया।
- इसने भोजताल (M.P) का निर्माण करवाया।
- अपनी राजधानी धारानगरी में 'सरस्वती कण्ठाभरण' नामक संस्कृत पाठशाला का निर्माण करवाया।
- कालान्तर में तुर्कों ने उस पाठशाला को तोड़कर 'कमालमौला मस्जिद में बदल दिया।
- पुस्तके- 1. शृंगार मंजरी कथा
  2. सरस्वती कण्ठाभरण
  3. कूर्मशतक (प्राकृत भाषा)
     - उसकी पंक्तियाँ संस्कृत पाठशाला की दिवारों पर लिखवाई।

↳ परिजात मंजरी की पक्तियॉ भी संस्कृत पाठशाला की दिवारों पर लिखवाई।

4. समरागण
5. विदूज्जन मण्डल

- परिजात मंजरी पुस्तक अर्जुन वर्मा के दरबारी विद्वान 'मदन' ने लिखी थी।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

वागड़ के परमार

- राजधानी - अर्थूणा (बांसवाड़ा)

1. उम्बर सिंह- इसने वागड़ में परमार राज्य की स्थापना की।
   (मालवा परमार कृष्णराज का पुत्र)

2. मण्डलिक -
   इसने 'पाणाहेड़ा' (बाँसवाड़ा) में 'मंडलेश्वर मन्दिर' का निर्माण करवाया।

3. चावण्डराज-
   इसने 'अर्थूणा' मे 'मंडलेश्वर मन्दिर' का निर्माण करवाया। (1079 ई.)
   1179 ई. राजा सामन्त सिंह गुहिल ने परमारों से वागड़ छीन लिया।

राठौड़ वंश का इतिहास

राठौडों की उत्पत्ति

- कन्नौज (U.P) (गहड़वाल वंश)
- दक्षिण भारत (राष्ट्रकूट वंश)

➤ राठौड़ रियासतें – 1. मारवाड़ / जोधपुर ➤ राज० की सबसे बड़ी रियासत थी (स्वतन्त्रता के समय)

2. बीकानेर

3. किशनगढ़

मारवाड़ का इतिहास

➤ मारवाड़ में राठौड़ वंश का शासन था।

1. राव सीहा-

➤ 1240 ई. में पालीवाल ब्राह्मणों की सहायता हेतु यह बदायूँ (कन्नौज) से मारवाड़ आया। कन्नौज के गहड़वाल जयचन्द का वंशज माना जाता है।

➤ राजधानी - खेड़ (बालोतरा)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

➤ छतरी - बीठू (पाली)

2. धूहड़-

➤ कर्नाटक से अपनी कुलदेवी नागणेची माता की मूर्ति लेकर आया।

➤ इसे नगाणा (खेड़, बालोतरा) में स्थापित किया।

➤ लोकदेवता पाबूजी इनके छोटे भाई धाँधल के पुत्र थे।

3. मल्लीनाथ-

- राजधानी - मेवानगर (बालोतरा)
- ये पश्चिमी राजस्थान के लोक देवता है।
- 1378 ई. - मालवा के गवर्नर निजामुद्दीन को हराया। (13 टुकड़िया)
- मल्लीनाथ जी के कारण बाड़मेर क्षेत्र को 'मालाणी' कहा जाने लगा।

NOTE - गणगौर पर गींदोली के गीत गाये जाते है।
→ अहमदाबाद की राजकुमारी

4. राव चूण्डा-

- ईन्दा प्रतिहारों ने अपनी राजकुमारी की शादी चूण्डा से की तथा मण्डौर दहेज में दिया।
- अब राठौड़ो की राजधानी मण्डौर बन गई थी।
- इसकी रानी चाँदकवर ने जोधपुर में चाँद बावड़ी का निर्माण करवाया।
- यह पूगल (बीकानेर) के भाटियों के खिलाफ लड़ता हुआ मारा गया।
- इसने अपने बेटे रणमल को राजा ना बनाकर छोटे बेटे कान्हा को राजा बनाया।

(रानी किशोर कंवर के प्रभाव में)

- कालान्तर में रणमल मेवाड़ की सेना की सहायता से राजा बना।

राव रणमल- (1427-1438)

- अपनी बहन हंसाबाई का विवाह मेवाड़ राणा लाखा से किया।
- मारवाड़ से जोजावर जागीर से संतुष्ट नहीं था। अतः मेवाड़ चला गया।
- 1426 ई. मेवाड़ की सेना लेकर मण्डौर पर अधिकार किया।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

➤1438 ई. उसकी प्रेमिका भारमली की सहायता से मेवाड़ी सामन्तों ने हत्या कर दी।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

6. राव जोधा- (1438-89) (रणमल का पुत्र)

➤1453 ई. में मण्डौर लेने में सफल रहा।

➤1459 ई. जोधपुर की स्थापना कर राजधानी बनाया।

➤जोधपुर में चिड़ियाटूँक पहाड़ी पर 'मेहरानगढ़ किले' का निर्माण करवाया।
↓ (मयूरध्वज / ध्वज चिंतामणी)

➤ करणी माता ने मेहरानगढ़ किले की नींव रखी थी।
↳ (रणमल की धर्मबहन)

➤1460 ई.- मेहरानगढ़ किले में "चामुण्डा माता" का मन्दिर बनवाया गया।

➤ रानी जसमादे ने जोधपुर में राणीसर तालाब बनवाया।

➤जोधा ने दिल्ली के सुल्तान बहलोल लोदी की सेना को हराया।

➤इतिहासकार गौरीशंकर हीराचन्द ओझा के अनुसार-

* राव जोधा मारवाड़ का पहला प्रतापी शासक था।

➤ इसके बेटों बीका व दूदा ने बीकानेर व मेड़ता में राठौड़ राज्यों की स्थापना की थी।

राव मालदेव- (1531-62)

• पिता - गांगा

• माता- पद्मा कुमारी (सिरोही के जगमाल देवड़ा की पुत्री)

• मालदेव अपने पिता की हत्या कर मारवाड़ का शासक बना।

- राजतिलक के समय मालदेव के पास केवल २ परगने थे-

    (i) जोधपुर
    (ii) सोजत (पाली) – राजतिलक हुआ।

- इसने 52 युद्ध तथा 58 परगने जीते थे।
  जैसे-
    (i) फलौदी – जैसलमेर के भाटियों से।
    (ii) बिलाड़ा (जोधपुर)- सिरवीयों से।
    (iii) नागौर - दौलतखाँ से।
    (iv) जालौर - सिकन्दर खाँ से।
    (v) सिवाणा - डूंगरसिंह से छीना।
    (vi) मेड़ता - वीरमदेव से।
    (vii) बीकानेर - जैतसी।
    (viii) रायपुर (पाली) / भाद्राजूण (जालौर) - वीरा सींधल से।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

पाहेबा - साहेबा का युद्ध -1541 ई.

- मालदेव V/s जैतसी (बीकानेर)
- जैतसी लड़ता हुआ मारा गया।
- मालदेव ने बीकानेर पर अधिकार कर कुम्पा (सेनापति) को बीकानेर का प्रशासक बना दिया।
- जैतसी के बेटे कल्याणमल ने दिल्ली के सुल्तान शेरशाह सूरी से सहायता माँगी।

- मालदेव तथा वीरमदेव (मेड़ता) के बीच 'दरियाजोश हाथी' को लेकर विवाद था। अतः मालदेव ने मेड़ता पर अधिकार कर लिया तथा वीरमदेव भी शेरशाह सूरी के पास चला गया।

हरमाड़ा का युद्ध- (1557 ई.)

मालदेव v/s राणा उदयसिंह
(हार)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

मालदेव-हुमायूँ संबंध-

- शेरशाह सूरी से हारने के बाद हुमायूँ मारवाड़ से होकर जा रहा था तब उसने मालदेव के पास सहायता हेतु 'जोगीतीर्थ' (→ जोधपुर) नामक स्थान से तीन दूत भेजे-
  - (i) मीर समंद
  - (ii) अतका खाँ
  - (iii) रायमल सोनी
- मालदेव ने सकारात्मक उत्तर दिया तथा हुमायूँ को बीकानेर तथा सैनिक सहायता देने का वादा किया।
- लेकिन हुमायूँ मालदेव पर विश्वास नहीं कर सका तथा अपने पुस्तकालय अध्यक्ष 'मुल्लासुर्ख' के कहने पर वह सिंध (→ पाक.) की तरफ चला गया।
- अमरकोट के राजा वीरसाल सोढा ने हुमायूँ को शरण दी।
- यदि हुमायूँ एवं मालदेव थोड़ी समझदारी दिखाते तो वह शेरशाह सूरी के खिलाफ गठबंधन बनाकर अफगान शासन को भारत से समाप्त कर सकते थे।
- कालान्तर में अकबर ने मुगल-राजपूत संबंधों की शुरुआत की थी, वे संबंध इसी समय प्रारम्भ हो सकते थे।

शेरशाह सूरी व मालदेव संबंध-

जैतारण / गिरि-सुमेल का युद्ध- 5 जनवरी, 1544 ई.

मालदेव v/s शेरशाह सूरी

मालदेव ↓ (i) जैता (ii) कूम्पा

शेरशाह सूरी ↓ कल्याणमल (बीकानेर), वीरमदेव (मेड़ता)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- शेरशाह सूरी की चालाकी के कारण मालदेव जोधपुर चला गया।
- जैता एवं कूम्पा ने शेरशाह सूरी के खिलाफ युद्ध किया।
- जलाल खाँ जलवानी की सहायता से शेरशाह सूरी युद्ध जीत गया।
- लेकिन जीतने के बाद शेरशाह सूरि ने कहा था कि -

  "मैं मुठ्ठी भर बाजरे के लिए हिन्दुस्तान की बादशाहत खो देता"।

- शेरशाह ने जोधपुर पर अधिकार कर लिया तथा उसने जोधपुर खवास खाँ को सौंप दिया।
- मालदेव सिवाणा (बाड़मेर) चला गया।

  {मारवाड़ के राठौड़ों की शरणस्थली = सिवाणा}

- थोड़े दिनों बाद मालदेव ने जोधपुर पुनः अधिकार कर लिया।
- शेरशाह सूरी के साथ संबंधों में मालदेव ने कूटनीतिज्ञ गलतियाँ की-

1. उसने वीरमदेव तथा कल्याणमल को शेरशाह के पास जाने का मौका दिया। अन्यथा वह शेरशाह के खिलाफ राठौड़ो का गठबंधन बना सकता था।

2. यदि वह शेरशाह की चालाकियों में नहीं फंसता तो 'गिरि-सुमेल का युद्ध जीत जाता।

उमादे-

- मालदेव की रानी थी।
- जैसलमेर के लूणकरण भाटी की पुत्री।
- भारमली नामक दासी के कारण यह मालदेव से नाराज हो गई थी। अतः उमादे को 'रूठी रानी' भी कहा जाता है।
- इसने अपना कुछ समय अजमेर के तारागढ़ किले में बिताया था।
- लेकिन बाद में केलवा (राजसमन्द) चली गई थी।

* जला- महिलाओं द्वारा बारात का डेरा देखने जाते समय गाया जाने वाला गीत।

* दरबारी विद्वान-

1. ईसरदास जी- पश्चिमी राजस्थान के लोकदेवता।
   - पुस्तकें-
     - हाला झाला री कुण्डलियां (सूर सतसई)
     - देवीयाण
     - हरिरस
2. आशानन्द जी- इन्होंने पाहेवा के युद्ध में भाग लिया था।
   - पुस्तक-
     - उमादे भटियाणी रा कवित
     - बाघा-भारमली रा दूहा
     - गोगाजी री पेडी

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

* स्थापत्य कला- मालदेव ने जोधपुर का परिकोटा बनाया।

MAHECHA PUBLICATION

- सोजत (पाली)
- पोकरण (जैसलमेर)
- रीयां (नागौर)
- मेड़ता (नागौर)

→ किलों का निर्माण करवाया।

- रानी स्वरूपदे ने स्वरूप सागर तालाब जोधपुर का निर्माण करवाया, जिसे 'बहू जी रो तालाब' भी कहते है।

THE NOTES HUB * Notes are Available * All Competition Books 7300134518, 7610010054

- उपाधियाँ-
  - (i) हिन्दू बादशाह
  - (ii) हशमत वाला राजा → अबुल फजल व निजामुद्दीन द्वारा।

- मालदेव ने अपने बड़े बेटों - राम व उदयसिंह को राजा ना बनाकर अपने छोटे बेटे चन्द्रसेन को राजा बनाया।

चन्द्रसेन- 1562- 82 ई०

- इसने अपने भाई राम को नाडोल (पाली) तथा उदयसिंह को लोहावट (जोधपुर) के युद्ध में हराया।
  अतः राम, अकबर के पास चला गया।

- 1564 ई. → अकबर ने राम की सहायता हेतु 'हुसैन कुली बेग' को भेजा।
  - चन्द्रसेन भाद्राजूण (जालौर) चला गया।

- 1570 ई. → चन्द्रसेन, अकबर के नागौर दरबार में गया लेकिन अकबर का झुकाव उदयसिंह की तरफ देख वह अकबर से बिना मिले ही वापस आ गया।

- अकबर ने भाद्राजूण पर आक्रमण किया। अतः चन्द्रसेन सिवाणा चला गया।

- 1574 ई. → अकबर ने बीकानेर के रायसिंह को आक्रमण हेतु भेजा।
  - रायसिंह ने कल्ला राठौड़ से सोजत (पाली) छीन लिया। लेकिन वह कल्ला राठौड़ से सिवाणा नहीं जीत पाया।
- 1576 ई. → मुगल सेनापति शाहबाज खान ने सिवाणा पर अधिकार कर लिया।
- 1576 ई. → चन्द्रसेन ने पोकरण का किला जैसलमेर के हरराज को बेचा।
- चन्द्रसेन आजीवन अकबर के साथ संघर्ष करता रहा तथा उसने अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की।
- इसने रामपुरा क्षेत्र में मुगल सेनापति जलाल खाँ को मार दिया।
  - (रामपुरा) → मालवा
- चन्द्रसेन के साथी- सुखराज, सूजा, देवीदास।
- 1581 ई. में सारंग की पहाड़ियों (पाली) में सिंचियाई नामक गाँव में चन्द्रसेन की मृत्यु हो गई। (वैरिसाल द्वारा जहर देने के कारण)

जोधपुर → भाद्राजूण → सिवाणा → पीपलूंद → काणूजा → सारंग (पाली)

(सिवाणा, पीपलूंद, काणूजा) ↓ बाड़मेर

उपाधियाँ-

- मारवाड़ का प्रताप (विश्वेश्वर नाथ रेऊ द्वारा)
- प्रताप का अग्रगामी
- मारवाड़ का भूला बिसरा राजा।

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

चन्द्रसेन तथा प्रताप में समानता-

- दोनों ने अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की थी।
- दोनों ने छापामार युद्ध प्रणाली का अनुसरण किया।
- दोनों को अपने भाईयों के विरोध का सामना करना पड़ा था।
  जैसे- जगमाल तथा सगर ने प्रताप का विरोध किया था तथा राम व उदयसिंह चन्द्रसेन के खिलाफ थे।
- दोनों को अपने राज्य से बाहर शरण लेनी पड़ी थी।
  जैसे- प्रताप ने छप्पन के मैदान (माही नदी के पास) में शरण ली तथा डूँगरपुर के शासक आसकरण ने चन्द्रसेन को शरण दी थी।
- दोनों के अधिकतर राज्यों पर अकबर ने अधिकार कर लिया था लेकिन फिर भी थोड़ी-सी भूमि के बल पर संघर्ष करते रहे।

चन्द्रसेन तथा प्रताप में असमानता-

1. प्रताप का मुगल विरोध उसके राजतिलक के साथ ही प्रारम्भ हो गया था, लेकिन चन्द्रसेन का मुगल विरोध नागौर दरबार के बाद से प्रारम्भ हुआ।
2. प्रताप का मुगल विरोध उसकी मृत्यु के बाद भी उसके बेटे अमरसिंह ने जारी रखा लेकिन चन्द्रसेन का मुगल विरोध उसकी मृत्यु के साथ ही समाप्त हो गया था।
3. प्रताप ने अकबर का प्रत्यक्ष सामना किया था,
   जैसे- (i) हल्दीघाटी का युद्ध - 18 June 1576
   (ii) दिवेर का युद्ध - 1582 ई.

   लेकिन चन्द्रसेन ऐसा नहीं कर पाया था।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

4. प्रताप ने चावंड को अपना स्थाई केन्द्र बनाया था, लेकिन चन्द्रसेन ऐसा कोई केन्द्र स्थापित नहीं कर पाया था।

5. प्रताप ने मेवाड़ की जनता में राष्ट्रवादी भावनाओं का संचार किया था लेकिन चन्द्रसेन ऐसा नहीं कर पाया था।

➠ इन असमानताओं के बावजूद भी चन्द्रसेन को मारवाड़ का प्रताप कहा जाता है, क्योंकि –

(i) चन्द्रसेन की भौगोलिक परिस्थितियाँ प्रताप की तुलना में प्रतिकूल थी, – क्योंकि मेवाड़ एक पर्वतीय प्रदेश था जहाँ छापामार युद्ध लम्बे समय तक किया जा सकता था, जबकि मारवाड़ एक मैदानी मरुस्थल था।

(ii) प्रताप को भामाशाह तथा ताराचन्द जैसे दानवीर साथियों का सहयोग मिला लेकिन चन्द्रसेन को ऐसे सहयोग की कमी थी।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

नागौर दरबार- 1570 ई.

➠ अकबर द्वारा आयोजन किया गया।

➠ उद्देश्य - अकाल राहत कार्य।

➠ वास्तविक उद्देश्य - राजस्थान के राजाओं द्वारा अधीनता स्वीकार करवाना।

➠ जैसलमेर के हरराज, उदयसिंह (चन्द्रसेन का भाई) (जोधपुर) एवं कल्याणमल (बीकानेर) ने अकबर की अधीनता स्वीकार की।

➠ इस दौरान अकबर ने शुक्र तालाब का निर्माण करवाया। (नागौर में)

महत्व-

1. बिना लड़े कूटनीति से राजस्थान के राजाओं ने अधीनता स्वीकार कर ली।

2. राजस्थान के राजा दो भागों में बंट गये – मुगल सहयोगी / मुगल विरोधी

3. आश्रित राजाओं की शृंखला बन गई, जैसे - बीकानेर के रायसिंह व मानसिंह (आमेर)

4. राजस्थान में शांति काल स्थापित हुआ जिससे कलात्मक गतिविधियों को बढ़ावा मिला।

- अकबर ने बीकानेर के रायसिंह को जोधपुर का प्रशासक नियुक्त किया (1572-74 ई.)
- कालान्तर में जोधपुर को खालसा घोषित कर दिया।
  - → 'केन्द्र के अधीन भूमि'

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

मोटा राजा उदयसिंह - (1583-95 ई.)

- मारवाड़ का प्रथम राजा जिसने अकबर की अधीनता स्वीकार की।
- अपनी पुत्री जोधाबाई (मानीबाई) की शादी जहाँगीर से की।
  - → मानीबाई की उपाधि- जगत गोसांई
  - → बेटा - खुर्रम (शाहजहाँ)
- उदयसिंह के पुत्र किशनसिंह ने 1609 ई. में किशनगढ़ बसाकर उसे राठौड़ सत्ता का तीसरा केन्द्र बनाया।

कल्ला रायमलोत-

- उदयसिंह के भाई रायमल का बेटा तथा सिवाणा का सामंत।
  1589 ई. अकबर ने सिवाणा पर आक्रमण किया।

- उस समय सिवाणा का दूसरा साका हुआ।
  - केसरिया – कल्ला रायमलोत
  - जौहर – भान कंवर (राव सुरजन की बेटी)
- पृथ्वीराज राठौड़ ने कल्ला रायमलोत के 'मरसिये' लिखे।
- मरसिये – मरणोपरान्त वीरता पर लिखे गये दोहे।

गजसिंह – (1615-38 ई.)

- बेटे
  - बड़ा – अमरसिंह – नागौर
  - छोटा – जसवन्त सिंह को राजा बनाया (प्रेमिका अनारा बेगम के कहने पर)
- जहाँगीर ने गजसिंह को 'दलथम्भन' की उपाधि दी।

अमरसिंह राठौड़-

- नागौर के राजा

मतीरे री राड़ – 1644 ई.

अमरसिंह	V/s	कर्णसिंह (बीकानेर) (जीत)
↓ जाखणिया		↓ सीलवा

- जानकारी – काशी छंगाणी → छत्रपति रासौ से।
- शाहजहाँ के दरबार में मीर बक्शी (रक्षा मंत्री) सलावत खाँ को मार दिया।
- अमरसिंह को 'कटार का धणी' कहा जाता है।
- हत्या साले अर्जुनसिंह गौड़ ने की।
- छतरी – नागौर (16 खम्भों की)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- आगरा (किले) के बुखारा दरवाजे को अमरसिंह दरवाजा कहा जाता है।
  - शाहजहाँ ने इसे बंद करवाया था।
  - 1809 ई. - जॉर्ज स्टील ने खुलवाया।
- कालान्तर में अमरसिंह राजस्थान के लोकगीतों एवं कहानियों का नायक बन गया।

जसवन्त सिंह (1638-78)-

- जब यह धरमत का युद्ध (1658- M.P) में बीच में ही वापस आया तो इसकी हाड़ी रानी 'जसवन्त दे' ने किले के दरवाजे बंद किये थे।

दारा v/s औरंगजेब + मुराद
↓
(जसवन्त सिंह व कासिम खाँ)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- खजुआ के युद्ध (1659 - आगरा) में औरंगजेब के खिलाफ शूजा का साथ दिया था।
- औरंगजेब ने जसवन्तसिंह को काबुल का गवर्नर बना दिया। (1673 ई.)
- 1662 ई. शाइस्ता खान की सहायता हेतु द. भारत भेजा।
- 1678 ई. में अफगानिस्तान में जमरूद का थाना नामक स्थान पर मृत्यु हो गई।
- मिर्जा राजा जयसिंह के कहने पर जसवन्त सिंह औरंगजेब की तरफ आ गया था।
- मृत्यु पर औरंगजेब ने कहा - "आज कुफ्र का दरवाजा टूट गया"।

(मूर्ति पूजा / धर्मविरोध)

- **पुस्तकें-**
  1. आनन्द विलास
  2. भाषा भूषण
  3. प्रबोध चन्द्रोदय
  4. अपरोक्ष सिद्धान्तसार

सांस्कृतिक योगदान-

- महाराष्ट्र में जसवन्तपुरा नामक नगर बसाया।
- जोधपुर में चतराजी गहलोत के नेतृत्व में अनार के बगीचे।
- रानी अतिरंग दे - 'शेखावत जी रो तालाब' का निर्माण।
- हाडी रानी 'जसवन्त दे' – 'राईका बाग महल' का निर्माण तथा कल्याण सागर (रातानाडा) तालाब का निर्माण करवाया था।

* **दरबारी विद्वान-**

1. **मुहणौत नैणसी-** (i) नैणसी री ख्यात (राजस्थान की Ist)
   (ii) मारवाड़ रा परगना री विगत
   - मारवाड़ का प्रशासनिक ग्रन्थ
   - मारवाड़ की सामाजिक-आर्थिक जानकारी
   - जनगणना की जानकारी
   - इसे 'मारवाड़ का गजट' भी कहते है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- कर्ज से परेशान होकर नैणसी ने भाई सुंदरदास के साथ जेल में आत्महत्या कर ली।
- मुंशी देवीप्रसाद ने नैणसी को 'राजपूताने का अबुल-फजल' कहा है।

2. नरहरिदास - अवतार चरित्र
3. नवीन कवि - नेह निधान
5. सुरत मिश्र
6. बनारसी दास

पृथ्वीसिंह-

- जसवन्तसिंह का बेटा।
- शेर से लड़ाई की थी।
- औरंगजेब ने जहरीले वस्त्र भेंट कर मरवा दिया।

अजीत सिंह व दलथम्भन-

- जसवन्त सिंह के बेटे।
- औरंगजेब ने 'रूपसिंह राठौड़ हवेली' (दिल्ली) में नजरबंद कर दिया था।

खालसा = केन्द्र नियंत्रित राज्य

इन्द्रसिंह राठौड़-

- अमरसिंह का पोता तथा नागौर का राजा।
- औरंगजेब ने ३६ लाख रु. लेकर जोधपुर प्रशासक बनाया, लेकिन जनता ने स्वीकार नहीं किया।
- औरंगजेब ने जोधपुर को खालसा घोषित कर दिया।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

अजीत सिंह- (१६७९- १७२४ ई.)

- दुर्गादास राठौड़, मुकुन्ददास खींची तथा गौरा की सहायता से अजीत सिंह को मारवाड़ लेकर आये।

* गौरा - मारवाड़ की पन्नाधाय।
    - नाम राजस्थान के राष्ट्रगान धूंसों में लिया जाता है।
    - छतरी - जोधपुर
    - अनाथ बच्चों हेतु गौरा नामक योजना - २०२२

- अजीतसिंह को कालिन्द्रि नामक गांव में जयदेव पुरोहित के घर मुकुन्ददास खींची की देखरेख में रखा गया।
- औरंगजेब ने नकली अजीतसिंह का नाम 'मुहम्मदीराज' रखा तथा अपनी बेटी जेबुन्निसा को सौंप दिया।
- मारवाड़ के राजसिंह ने इन्हे समर्थन दिया।

देबारी का युद्ध - 1680 ई.

औरंगजेब ने मेवाड़ व मारवाड़ की संयुक्त सेना को हराया।

दुर्गादास राठौड़ ने औरंगजेब के बेटे अकबर को विद्रोह के लिए उकसाया।

1 जनवरी 1681 ई. नाडोल (पाली) में अकबर को मुगल बादशाह घोषित किया।

औरंगजेब की चालाकी के कारण दुर्गादास तथा अकबर को शंभा जी के पास जाना पड़ा।

'शिवाजी का बेटा'

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

बुलन्द अख्तर व सफीयतुन्निस्सा

- अकबर के पुत्र व पुत्री, जिनका पालन पोषण दुर्गादास जी ने किया तथा ईश्वरदास नागर के कहने पर औरंगजेब को सौंप दिया।
- वर्ष 1708 ई. में देबारी समझौते के बाद अजीतसिंह जोधपुर का राजा बना।
- अजीतसिंह ने दुर्गादास राठौड़ को देश निकाला दे दिया।
- अजीतसिंह ने अपनी बेटी इन्द्रकंवर की शादी मुगल बादशाह फर्रुखसियर से की।

- इन्द्रकंवर अन्तिम हिन्दू राजकुमारी थी जिसकी शादी किसी मुगल बादशाह से हुई थी।
- अजीतसिंह की हत्या उसके बेटे बख्तसिंह ने की।
- अजीतसिंह के अंतिम संस्कार में कई पशु-पक्षी जलकर मर गये।

* पुस्तकें-
- दुर्गापाठ भाषा
- निर्वाण रा दूहा
- गुणसागर
- अजीतसिंह री कविता
- गज उद्धार

दुर्गादास राठौड़

- पिता- आसकरण
- माता- नेत कंवर
- जन्म - सालवा (जोधपुर)
- जागीर- लूणेवा (आसकरण ने दी)

- दुर्गादास ने अजीतसिंह को राजा बनाने हेतु 30 वर्षीय संघर्ष किया। (1678-1708 ई.)
- मेवाड़ के अमरसिंह-II ने दुर्गादास को रामपुरा व विजयनगर की जागीरें दी।
- छतरी- उज्जैन - शिप्रा नदी के किनारे।
- उपाधियाँ- (i) राठौड़ों का यूलीसेस (जेम्स टॉड ने)
  (ii) राजपूताने का गैरीबाल्डी
  (iii) मारवाड़ रा अणबिन्धिया मोती।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- G.H ओझा ने अपनी पुस्तक जोधपुर राज्य का इतिहास के द्वितीय संस्करण को दुर्गादास राठौड़ को समर्पित किया था।

अभयसिंह -(1724-49 ई.)

- खेजड़ली घटना- भाद्रपद शुक्ल दशमी विक्रमी संवत् -1787 (सन् - 1730 ई.)
- अमृतादेवी बिश्नोई के नेतृत्व में 363 लोग पेड़ों को बचाने हेतु शहीद हुए।
- इस याद में खेजड़ली में प्रतिवर्ष वृक्ष मेला।
- पर्यावरण संरक्षण क्षेत्र में पुरस्कार-

"अमृता बिश्नोई वन्यजीव सुरक्षा पुरस्कार"

→ भारत सरकार - 1,00,000 ₹ नकद

THE NOTES HUB * Notes are Available * All Competition Books * 7300134518, 7610010054

* दरबारी विद्वान-

(i) करणीदान - सूरज प्रकाश (बीड़द सिणगार)

(ii) वीरभाण - राजरूपक

- इन दोनों पुस्तकों से अहमदाबाद युद्ध की जानकारी मिलती है जिसमें अभयसिंह ने गुजरात के गवर्नर 'सर बुलन्द खाँ' को हराया।

मानसिंह (1803- 1843 ई.)

- मानसिंह जब जालौर में था तब देवनाथ ने उसके राजा बनने की भविष्यवाणी की थी। (भाई भीमसिंह से विवाद होने पर जालौर में शरण ली)
- मानसिंह ने नाथ सम्प्रदाय हेतु जोधपुर में महामंदिर का निर्माण करवाया तथा 'नाथ चरित्र' नामक पुस्तक लिखी।

- इसे 'मारवाड़ का सन्यासी राजा' कहा जाता है।
- इसने जोधपुर में 'मान पुस्तक प्रकाश' नामक पुस्तकालय की स्थापना की।
- 1818 ई. में अंग्रेजों से सन्धि की।
- 1827 ई. में नागपुर के आपा साहिब भौंसले को अंग्रेजों के खिलाफ शरण दी
- 1832 ई. में गवर्नर जनरल लॉर्ड विलियम बैंटिक के अजमेर दरबार का बहिष्कार किया था।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

* **दरबारी विद्वान-**

- **कविराजा बांकीदास जी-**

  (i) बांकीदास री ख्यात

  (ii) मान जसो मण्डन

  (iii) दातार बावनी (दानवीर लोगों पर 52 दोहे)

  (iv) कुकवि बत्तीसी (बुरे लोगों पर 32 दोहे)

- गीत- "आयो अंगरेज मुलक रै ऊपर"
  - इसमें अंग्रेजों का साथ देने वाले राजाओं की आलोचना की गई है।

NOTE → छप्पनियाँ अकाल = 1899 ई. (वि. सं. - 1956)

बीकानेर का इतिहास

(प्राचीन नाम → जांगल देश, रातीघाटी)

- बीकानेर में राठौड़ वंश का शासन था।

राव बीका- (1465-1504 ई.) → (राव जोधा का पुत्र)

- इसने अपने काका कांधल तथा छोटे भाई बीदा के सहयोग एवं करणीमाता के आशीर्वाद से बीकानेर को जीता।
    - → करणीमाता बीकानेर के राठौड़ो की इष्टदेवी है।
- कोडमदेसर (बीकानेर) में भैरूजी मन्दिर का निर्माण करवाया।
- 1488 ई. में बीका ने बीकानेर की स्थापना की।

"पन्द्रह सौ पैंतालिस, सुद बैशाख सुमेर।
थावर बीज थरपीयो, बीको बीकानेर॥"

- आखातीज को बीकानेर का स्थापना दिवस मनाया जाता है, तथा इस दिन बीकानेर में पतंगें उड़ाई जाती है।
- सुजा के शासनकाल में बीका ने जोधपुर पर आक्रमण कर राजचिह्न प्राप्त किया।
- कुलदेवी नागणेची माता (18 हाथ) मन्दिर की स्थापना करवाई।
- स्थापत्य कला –
    - (i) भैरव मन्दिर (कोडमदेसर)
    - (ii) नागणेची माता मन्दिर (बीकानेर)

राव लूणकरण- (1505-1526 ई.)

- लोकसंत जसनाथ जी के आशीर्वाद से राजा बना।
- लूणकरणसर झील का निर्माण करवाया।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- बीठू सूजा ने इसे 'कलयुग का कर्ण' कहा है।
- नागौर- मुहम्मद खां
- जैसलमेर - राव जैतसी
  — को हराया।
- दोसी (हरियाणा) का युद्ध - 1526 ई.
  - लूणकरण v/s अबीमीरा (नारनौल)
    (मृत्यु)

जैतसी-

- रातीघाटी का युद्ध - 1534 ई.

  जैतसी v/s कामरान (हुमायूँ का भाई)
  ↓
  (जीत)

- जानकारी - बीठू सुजा की पुस्तक - "राव जैतसी रो छंद"।
- कामरान ने पहले भटनेर (हनुमानगढ़) पर अधिकार किया था।
- पाहेबा युद्ध (1541 ई.) में युद्ध में मृत्यु (मालदेव-मारवाड़) के खिलाफ।

कल्याणमल (1574-1612 ई.)

- बीकानेर का प्रथम राजा जिसने मुगलों की अधीनता स्वीकार की।
- दरबारी विद्वान- सदाशिव भट्ट - राजा विनोद
- 1527 ई. खानवा के युद्ध में भाग लिया।
- गिरि सुमेल युद्ध में शेरशाह सूरि का साथ दिया।

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books 7300134518, 7610010054

रायसिंह (1574-1612 ई.)

- अकबर तथा जहाँगीर का मनसबदार।

- अकबर ने 4000 का मनसबदार बनाया और जहाँगीर ने इसे 5000 का मनसबदार बनाया।

- 1577 ई. अकबर ने इसे 51 परगने दिये।

- खुसरो के विद्रोह के समय जहाँगीर ने राजधानी आगरा की जिम्मेदारी सौंपी।

- कर्मचन्द की देखरेख में जूनागढ़ किले का निर्माण (1589-94 ई.) करवाया। उस समय रायसिंह बुरहानपुर (M.P) में था।

- पुस्तकें-
  - रायसिंह महोत्सव
  - वैद्यक वंशावली
  - ज्योतिष रत्नमाला
  - बाल बोधिनी → ज्योतिष ग्रन्थों पर टिका।

- काठोली के युद्ध में इब्राहिम मिर्जा को हराया तथा हुसैन मिर्जा को मार दिया था।

- सिरोही के सुरताण व जालौर के ताज खाँ को अकबर की अधीनता स्वीकार की।

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- दरबारी विद्वान-

1. जइता- रायसिंह प्रशस्ति
   - यह प्रशस्ति जूनागढ़ (बीकानेर) किले में लगी हुई है।
2. जयसोम- 'कर्मचन्दवंशोत्कीर्तिकंकाव्यम'
   - इस पुस्तक में रायसिंह को राजेन्द्र कहा गया है, तथा लूणकरण की तुलना कर्ण के साथ की गई है।

पृथ्वीराज राठौड़-

- यह रायसिंह का छोटा भाई था। यह अकबर के दरबार में रहता था।

- पुस्तकें - • वेलि क्रिसण रूकमणी री
  • दशरत बराउत
  • गंगा लहरी
  • दसम भागवत रा दूहा

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

दलपत सिंह-

यह रायसिंह का बेटा था, इसने रायसिंह के खिलाफ विद्रोह कर दिया था।

कर्णसिंह- (1631-69 ई.)

- उपाधि- "जांगलधर बादशाह"
- चिन्तामणी भट्ट की पुस्तक "शुक्त सप्तति" के राजस्थानी अनुवाद में यह उपाधि दी गई है।
- पुस्तक- 'साहित्य कल्पद्रुम'
- दरबारी विद्वान- (i) गंगाधर मैथिल → कर्णभूषण, काव्य डाकिनी
  (ii) होसिक भट्ट- 'कर्णवंतस'

अनूपसिंह- (1669-98 ई.)

- दक्षिण भारत में जीत के कारण औरंगजेब ने इसे "माही मरातिब" की उपाधि दी थी।

MAHECHA PUBLICATION

- दक्षिण भारत से हिन्दू- देवी- देवताओं की मूर्तियाँ लेकर आया था तथा उन्हें बीकानेर में स्थित 33 करोड़ देवी-देवताओं के मंदिर में रखवाया था।

- यहाँ पर 'हेरम्ब गणपति' की मूर्ति भी है।
  → (शेर पर सवार गणेश जी)

- यह दक्षिण भारत से संस्कृत पुस्तकें लेकर आया था तथा बीकानेर में "सरस्वती भण्डार पुस्तकालय" की स्थापना की।
  ↓
  ("अनूप संस्कृत पुस्तकालय")

- कुम्भा के संगीत ग्रन्थों का संकलन करवाया था।

- संस्कृत पुस्तकों का राजस्थानी भाषा में अनुवाद करवाया था।

  जैसे-
  (i) शुक कारिका
  (ii) वैताल पचीसी
  (iii) गीता → 'आनन्द राव' ने इसका अनुवाद किया था।

- पुस्तकें-
  - अनूप विवेक (तंत्रशास्त्र पर आधारित)
  - कामप्रबोध (कामशास्त्र पर आधारित)
  - श्राद्ध प्रयोग चिन्तामणि
  - अनूपोदय (गीत गोविन्द पर टीका)

- दरबारी विद्वान-

1. भाव भट्ट – संगीत अनूप अंकुश
   अनूप संगीत विलास
   अनूप संगीत रत्नाकर

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

२. अनन्त भट्ट – तीर्थ रत्नाकर

३. उदयचन्द्र – पांडित्य दर्पण

→ अनुपसिंह का शासनकाल बीकानेर की चित्रकला का स्वर्णकाल था।

→ 33 करोड़ देवी-देवताओं की साल का निर्माण अभयसिंह ने मण्डोर में करवाया था।

सूरतसिंह (1787-1828 ई.)-

→ 1805 ई० में इसने भटनेर पर अधिकार कर लिया था, उस दिन मंगलवार था, इसलिए भटनेर का नाम बदलकर हनुमानगढ़ कर दिया गया।

→ 1814 ई. में इसने चुरू पर आक्रमण किया था, इस समय चुरु के किले से 'चाँदी के गोले दागे' गये थे।
इस समय 'स्योजी सिंह' चुरू का सामन्त था।

→ जॉर्ज थॉमस ने बीकानेर पर दो बार आक्रमण किया था।

→ 1818 ई. में इसने अंग्रेजों के साथ सन्धि कर ली थी।

→ देशनोक (बीकानेर) में करणी माता मन्दिर का निर्माण करवाया।

→ गिंगोली के युद्ध में जयपुर के जगतसिंह-II का सहयोग किया था।

रतनसिंह (1828-51 ई.)-

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

→ बासणपीर (जैसलमेर) का युद्ध – 1829 ई.

→ रतनसिंह v/s गजसिंह (जैसलमेर)
↓
(जीत)

• यह " राजस्थान की किन्ही दो रियासतों के मध्य अन्तिम युद्ध" था।

➤ बीकानेर के रतन बिहारी मन्दिर (श्री कृष्ण) का निर्माण करवाया।

➤ 1837 ई. में गया (बिहार) में कन्या वध पर रोक लगाई।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

* <u>दरबारी विद्वान</u>-

(i) <u>दयालदास</u>- "बीकानेर रा राठौड़ा री ख्यात"

↳ इस पुस्तक में राव बीका से लेकर सरदार सिंह तक की जानकारी है।
(रत्नसिंह का बेटा)

➤ यह राजस्थान की अन्तिम ख्यात है।

<u>महाराजा गंगासिंह</u>- (1887-1943 ई.)

➤ 1899 ई. में छप्पनिया अकाल का कुशलता पूर्वक प्रबंधन किया, अतः अंग्रेजों ने इसे "<u>केसर-ए-हिन्द</u>" की उपाधि दी थी।

➤ 1899 ई. में चीन में बॉक्सर विद्रोह को दबाया। अतः अंग्रेजों ने इसे '<u>चीन युद्ध पदक</u>' दिया था।

➤ 1913 ई. में '<u>प्रजा प्रतिनिधी सभा</u>' की स्थापना की गई।

➤ 1916 ई. में BHU (बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय) की स्थापना के लिए महामना मदन मोहन मालवीय को सर्वाधिक आर्थिक सहायता दी।

➤ अतः गंगासिंह को BHU का कुलपति बनाया गया।

➤ इसकी ऊँटों की सेना को 'गंगा रिसाला' कहा जाता था। इस सेना ने दोनों विश्व युद्धों में भाग लिया था।

- 1919 ई. में पेरिस शांति सम्मेलन में भाग लिया था।
  (सम्मेलन में- 32 सदस्यों ने भाग लिया)

- पेरिस शान्ति सम्मेलन से लौटते समय अंग्रेजों को Rome Note भेजा तथा भारत के लिए स्वशासन की माँग की थी।

- 1921 ई. में चैम्सफॉर्ड ने 'चैम्बर्स ऑफ प्रींसेज' की स्थापना की तथा गंगासिंह को उसका चांसलर बनाया गया।

- 1927 ई. में गंगनहर का निर्माण करवाया था। अतः गंगासिंह को 'राजस्थान का भागीरथ' भी कहा जाता है।

  - गंगनहर का मुख्य इंजीनियर- कंवरसेन था
    - (राजस्थान की पहली नहर)

- गवर्नर जनरल लॉर्ड इरविन ने शिवपुरी हैड (गंगानगर) नामक स्थान पर नहर का उद्घाटन किया।

- गंगासिंह ने तीनों गोलमेज सम्मेलनों में भाग लिया था।
  → 1930, 1931, 1932

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- रामदेवरा
- देशनोक
- गोगामेड़ी

→ इन तीनों मन्दिरों के वर्तमान स्वरूप का निर्माण करवाया।

- बीकानेर के सिक्कों पर विक्टोरिया एक्सप्रेस लिखवाया।

NOTE- महाराणा स्वरूपसिंह ने मेवाड़ के सिक्कों पर 'दोस्ती लंदन' लिखवाया था।

- बीकानेर में लालगढ़ महल का निर्माण करवाया।

MAHECHA PUBLICATION

किशनगढ़ का इतिहास

- किशनगढ़ में राठौड़ वंश का शासन था।

किशनसिंह (1609-15 ई.)-

- यह मारवाड़ के मोटा राजा, उदयसिंह का पुत्र था।
- 1609 ई. में जहाँगीर के शासनकाल में इसने किशनगढ़ में स्वतंत्र राठौड़ राज्य की स्थापना की।

रूपसिंह→

- इसने रूपनगढ़ किले का निर्माण करवाया।
- सामूगढ़ के युद्ध में यह दारा की तरफ से लड़ता हुआ मारा गया था।

राजसिंह (1706-48 ई.)-

- मुगल उत्तराधिकार संघर्ष में इसने बहादुरशाह-I (मुअज्जम) का साथ दिया था।
- पुस्तकें- बाहुविलास, रसपाय।
- दरबारी विद्वान-

  (i) वृन्द - सत्यस्वरूप

  ↳ इस पुस्तक से मुगल उत्तराधिकार संघर्ष की जानकारी मिलती है।

  (ii) सूरध्वज - यह एक चित्रकार था।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

सावन्त सिंह (1748-64 ई.)

- यह वल्लभ सम्प्रदाय का अनुयायी था।
- इसने स्वयं का नाम बदलकर नागरीदास कर लिया था।
- पुस्तकें- मनोरथ मंजरी, रसिक रत्नावली, देह दशा — नागर समुच्चय कहते है।
- इसकी प्रेमिका विष्णुप्रिया (बणी- ठणी) रसिक बिहारी नाम से कविताएँ लिखती थी।
- इसे किशनगढ़ की राधा भी कहा जाता है।
- अपने अन्तिम दिनों में सावन्तसिंह वृन्दावन चला गया।

कल्याण सिंह- (1798 ई. - 1838 ई.)

1818 ई. में अंग्रेजों के साथ संधि कर ली थी।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

प्रतिहार वंश का इतिहास

- प्रतिहारों का उत्पत्ति स्थल मण्डौर (जोधपुर) था।

मण्डौर के प्रतिहार-

1. हरिशचन्द्र-

- यह मण्डौर के प्रतिहारों का आदिपुरुष था।
- प्रतिहार अभिलेखों में इसे ब्राह्मण बताया गया है।
- यह वेदों का ज्ञाता था।
- उपाधि - रोहलिद्धि (योग क्रिया में निपुण)
- इसके चार पुत्रों ने मण्डौर जीता तथा परकोटे का निर्माण करवाया।
- पुत्र- कक्क, रज्जिल, दद्द, भोग भट्ट।

रज्जिल-

- यह मण्डौर का पहला प्रतिहार राजा था।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

नरभट्ट-

- उपाधि- पेल्लापेली

नागभट्ट-

- इसने मेड़ता को अपनी राजधानी बनाया।
- इसका बेटा तात सन्यासी बन गया था तथा मण्डौर के पवित्र आश्रम में रहता था।
- तात ने अपने छोटे भाई भोज को मण्डौर का राजा बना दिया था।

शीलूक

- इसने त्रवणी (फलौदी) तथा वल्ल (जैसलमेर) पर अधिकार कर लिया था।
- इसने वल्ल के राजा देवराज भट्टि से उसका छत्र छीन लिया था।

कक्क-

- इसने मुंगेर (बिहार) के युद्ध में धर्मपाल के खिलाफ वत्सराज प्रतिहार का साथ दिया था।
- कक्क व्याकरण, काव्य, ज्योतिष तथा तर्क का ज्ञाता था।

बाउक-

- इसने मण्डौर के विष्णु मन्दिर में बाउक प्रशस्ति (837 ई.) लगवाई।
  ↓
  'मण्डौर के प्रतिहारों की जानकारी का स्रोत'

कक्कुक-

घटियाला अभिलेख (861 ई.) – जोधपुर
(2 अभिलेख प्राप्त)

(1)
माता की साल (जैन मन्दिर) → स्थान
(भाषा - प्राकृत)

(2)
खाखू देवल → स्थान
(संस्कृत भाषा)
→ 'गणपति स्तम्भ' कहते है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- इसने मण्डौर तथा रोहिन्सकूप (घटियाला) में जय स्तम्भ लगवाये थे।
  → बाजार निर्माण करवाया था।

चेराई अभिलेख- (७३६ ई.)

- प्रतिहारा दुर्लभराज के पुत्र जसकरण की जानकारी है।

सहजपाल का अभिलेख- (1137 ई.)

- नाडोल के चौहान रायपाल ने प्रतिहारों से मंडौर छीन लिया था। इसके पुत्र सहजपाल का अभिलेख मंडौर से प्राप्त होता है।

- कालान्तर में इन्दा प्रतिहारों ने अपने राजा हम्मीर प्रतिहार से परेशान होकर मारवाड़ के राव चुण्डा राठौड़ को मण्डौर दहेज में दे दिया।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

कच्छवाहा वंश

- भगवान राम के वंशज, इसलिए इन्हें 'रघुवंशतिलक' भी कहते है।
- रियासतें
  - आमेर, जयपुर
  - अलवर

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

आमेर का इतिहास

- आमेर पर पहले मीणा वंश का अधिकार था।

दुल्हराय-

वास्तविक नाम - तेजकरण

- 1137 ई. में नरवर (M.P) से राजस्थान आया।
- बड़गुर्जरों को हराकर दौसा पर अधिकार कर लिया था।
- रामगढ़ के मीणा राजा को हराया तथा रामगढ़ में जमवाय माता का मन्दिर बनवाया। रामगढ़ कच्छवाहों की दूसरी राजधानी थी।

(जमवाय माता - कच्छवाहा वंश की कुलदेवी)

काकिलदेव-

- 1207 में मीणा राजाओं को हराकर आमेर पर अधिकार किया।
- आमेर में अम्बिकेश्वर मन्दिर का निर्माण करवाया।
- आमेर कच्छवाहों की तीसरी राजधानी थी।

राजदेव-

- आमेर में कदमी महल का निर्माण करवाया जहाँ आमेर राजाओं का राजतिलक होता था।

भारमल- (1547-1573 ई.)

- इसने मजनूखाँ व चगताईखाँ की मदद से अकबर से मुलाकात की थी।
- 1562 ई. अकबर से सन्धि की (ऐसा करने वाला राजस्थान का पहला राजा)
- इसने सांभर में अपनी बेटी 'हरखाबाई' की शादी अकबर से की।
  - हरखाबाई
    - बेटा- जहाँगीर
    - उपाधि - मरियम उज्जमानी
- अकबर ने इसे 5000 का मनसबदार बनाया तथा "अमीर-उल-उमरा" की उपाधि दी।

भगवन्त दास- (1573-89 ई.)

- इसने सरनाल (गुजरात) के मिर्जा विद्रोह को दबाया इसलिए अकबर ने इसे नगाड़ा व झण्डा देकर सम्मानित किया।
- 7 वर्षों तक पंजाब का गवर्नर बनाया गया था।
- अपनी बेटी मानबाई की शादी जहाँगीर से की उसकी शराब की लत के कारण मानबाई ने आत्महत्या कर ली।
  - मानबाई
    - उपाधि- शाहे बेगम / शाह-ए- बेगम
    - बेटा - खुसरो

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

मानसिंह- (1589-1614 ई.)

- राजतिलक के समय अकबर ने 5000 का मनसबदार बनाया, लेकिन 1605 ई. में बढ़ाकर इसे 7000 कर दिया गया।
- अकबर ने इसे काबुल, बिहार व बंगाल का गवर्नर बनाया।

* काबुल- हकीम विद्रोह का दमन किया।

(रोशनिया, युसुफजाई)

- पाँच कबीलों को हराया इसलिए जीत पश्चात आमेर का झण्डा पंचरंगा था।
  - पहले सफेद या झाड़शाही था।

* बिहार- कई राजाओं को हराया।

  जैसे- • पूरणमल - गिधौर
  • अनन्त चेरू - गया
  • रामचन्द्र देव - खुर्दा (उड़िसा)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

* बंगाल-

पूर्वी बंगाल के राजा केदार को हराया था। यहाँ से शिला माता की मूर्ति लेकर आया तथा उसे आमेर में स्थापित करवाया।

- आमेर के कच्छवाहा वंश की इष्टदेवी शिलामाता है।
- नासिरजंग व कतलू खाँ को हराकर पुरी जगन्नाथ मन्दिर पर नियंत्रण स्थापित किया।

* सांस्कृतिक उपलब्धियाँ-

(i) नगर - • मानपुर (बिहार)
• अकबरनगर (राजमहल) - बंगाल

(ii) किले- • रोहतासगढ़ (बिहार)
• आमेर
• जमुआरामगढ़

(iii) मन्दिर- ·भवानी शंकर मन्दिर - वैकटपुर (बिहार)
· महादेव मन्दिर - गया (बिहार)
· राधा गोविन्द मन्दिर - वृंदावन (U.P)
· जगतशिरोमणी मंदिर - आमेर

* दरबारी विद्वान-

1. पुण्डरिक विट्ठल - · रागमाला,
· राग चन्द्रोदय
· राग मंजरी
· नर्तन निर्णय
· दूनी प्रकाश

2. रायमुर रिदास- मानप्रकाश

3. जगन्नाथ- मानसिंह कीर्ति मुक्तावली

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

* उपाधियाँ-
· मिर्जा राजा
· फर्जन्द (बेटा)
— अकबर द्वारा दी गई।

मानसिंह की 'एलिचपुर' (M.H) में मृत्यु हो गई थी।

मिर्जा राजा जयसिंह- (1621-1667 ई.)

- सर्वाधिक शासनकाल। (46 वर्ष)
- उसने जहाँगीर, शाहजहाँ व औरंगजेब के साथ कार्य किया।
- जहाँगीर ने अहमदनगर मलिक अम्बर के खिलाफ भेजा।
- शाहजहाँ ने मिर्जा राजा की उपाधि दी तथा कन्धार अभियान पर भेजा।
- औरंगजेब ने द० भारत शिवाजी के खिलाफ भेजा।
- मुगलों का एकमात्र सेनापति जो मुगलों को हराता है।

* पुरन्दर की सन्धि - 1665 ई. → उतालवी यात्री निकालो मनूची ने इस सन्धि का वर्णन किया था।

↳ मिर्जा राजा जयसिंह + शिवाजी

↳ 35 में से 23 किले मुगलों को दिये।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

* सांस्कृतिक कार्य-

↳ जयसिंहपुरा (MH) की स्थापना।

↳ आमेर में जयगढ़ किले का निर्माण करवाया।

↳ पहले जयगढ़ को "चील का टीला" कहा जाता था।

↳ वर्णन - निकोलो अनुची - Book → Storio-da-Magor

↳ मृत्यु - बुरहानपुर

* दरबारी विद्वान-

- बिहारी जी = बिहारी सतसई (शृंगार रस के 700 दोहे)
- राय कवि = जयसिंह चरित्र
- कुलपति मिश्र
  - ↳ बिहारी जी का भान्जा
  - ↳ 52 पुस्तकें लिखी
  - ↳ जयसिंह के दक्षिण अभियानों की जानकारी।

सवाई जयसिंह - (1700 ई. 1743 ई.)

↳ 7 मुगल बादशाहों के साथ कार्य किया।

↳ उन्होंने मुअज्जम के खिलाफ आजम का साथ दिया लेकिन आजम हार गया।

- बहादुरशाह-I (मुअज्जम) ने आमेर पर आक्रमण कर इनके छोटे भाई विजयसिंह को राजा बना दिया।
- आमेर का नाम इस्लामाबाद / मोमिनाबाद कर दिया।
- 1708 ई. → देवारी समझौते के बाद ये आमेर पर पुनः अधिकार कर लिया।
- सांभर युद्ध (1709 ई.) में ये मुगल सेनापति सैय्यद खाँ को हराते है तथा आमेर पर पुनः अधिकार कर लिया।
- भरतपुर के मोहकमसिंह के खिलाफ उसके भाई बदनसिंह का साथ दिया।

  → बदनसिंह ने 'डीग की जागीर' व बृजराज की उपाधि दी।

- बून्दी में इसने उम्मेदसिंह के खिलाफ दलेल सिंह का साथ दिया।

मोहम्मद शाह रंगीला ने इन्हें राजराजेश्वर की उपाधि दी।

गंगवाना का युद्ध - 1741 ई.

अभयसिंह (जोधपुर) v/s जोरावर सिंह (बीकानेर)

अभयसिंह (जोधपुर) ↓ हार

जोरावर सिंह (बीकानेर) ↓ सवाई जयसिंह – समर्थनकर्ता

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

सवाई जयसिंह v/s मराठा-

1. पीलसुद (M.P) का युद्ध - 1715 ई. → सवाई जयसिंह (जीत)

मंदसौर (M.P) का युद्ध - 1733 ई. → सवाई जयसिंह (हार)

रामपुरा (कोटा) का युद्ध - 1735 ई. → सवाई जयसिंह (हार)

↳ हुरड़ा सम्मेलन

धौलपुर समझौता - 1741 ई.

- मराठा पेशवा बालाजी बाजीराव के साथ किया।
- बादशाह 'रंगीला' का प्रतिनिधि सवाई जयसिंह था।
- सवाई जयसिंह तीन बार मालवा का मुगल गवर्नर बनाया गया।
- 1740 ई. में अश्वमेघ यज्ञ का आयोजन करवाया गया।
    - दीपसिंह कुम्भाणी ने घोड़ा पकड़ लिया।
    - जयपुर के सभी दरवाजे बन्द करके घोड़ा छोड़ा गया था।
    - यज्ञ का पण्डित - पुण्डरीक रत्नाकर

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

सवाई जयसिंह की सांस्कृतिक उपलब्धियाँ-

*** स्थापत्य कला:**

- जयपुर शहर- स्थापना = 18-11-1727

    वास्तुकार - विद्याधर भट्टाचार्य (बंगाली)

    ↳ 'जेवियर डी सिल्वा' पुर्तगाली की सहायता से।

- जयपुर को कैन्टन (चीन) व बगदाद (इराक) की तरह बसाया गया। (9 वर्गों के सिद्धांत पर)
- बादल महल- City Palace (जयपुर) की पहली इमारत।
- इसे पूर्व में शिकार होदी नाम से भी जाना जाता था।
- जयपुर भारत का पहला आधुनिक व नियोजित शहर है।
- 2019 में UNESCO ने जयपुर शहर को विश्व धरोहर सूची में शामिल किया।

नाहरगढ़-

- मराठों के खिलाफ सुरक्षा हेतु बनवाया गया।
- इसे जयपुर का पहरेदार भी कहते है।
- पहले इसे 'सुदर्शनगढ़' कहते थे।
- शहीद सैनिक नाहरसिंह के नाम पर 'नाहरगढ़' नाम रखा।

· चन्द्रमहल बनवाया। (सिटी पैलेस)

- → स्वयं के लिए बनवाया।
- → 7 मंजिला इमारत है, सबसे ऊपरी भाग = मुकुट मन्दिर

THE NOTES HUB · Notes are Available · All Competition Books · 7300134518, 7610010054

• गोविन्द देव जी मन्दिर- गौड़ीय सम्प्रदाय का प्रमुख मन्दिर।

➤ जयपुर के राजा स्वयं को गोविन्द देव जी का दीवान मानते थे।

• जलमहल-

➤ मानसागर झील में स्थित है।

➤ अनेक अश्वमेध यज्ञ के ब्राह्मणों के रुकने की व्यवस्था की गई।

• हरमाड़ा नहर- जयपुर में पेयजलापूर्ति हेतु निर्माण।

• जन्तर- मन्तर-

➤ देश के पाँच स्थानों पर जन्तर-मन्तर का निर्माण करवाया गया-

1. दिल्ली - सबसे पहले
2. उज्जैन (M.P)
3. बनारस (U.P)
4. जयपुर → सबसे बड़ा
5. मथुरा (U.P)

THE NOTES HUB Notes are Available All Competition Books 7300134518, 7610010054

वास्तविक नाम - 'यन्त्र-मंत्र'

2010 में जयपुर का जन्तर-मन्तर UNESCO की विश्व विरासत सूची में शामिल।

• सिसोदिया रानी का महल (चन्द्रकंवर के लिए)

* साहित्य-

➤ 'जयसिंहकारिका' नामक ज्योतिष ग्रन्थ लिखा।

➤ 'जीज - ए - मोहम्मदशाही' नामक नक्षत्र सारणी तैयार करवाई।

* दरबारी विद्वान-

1. पुंडरीक रत्नाकर - जयसिंह कल्पद्रुम
2. पण्डित जगन्नाथ - सिद्धांत सम्राट
   सिद्धांत कौस्तुभ
   ➔ युक्लिड ज्यामिति संस्कृत अनुवाद करवाया।
3. केवलराम - लागोरिथम फ्रेन्च पुस्तक का संस्कृत अनुवाद।
4. नयनचन्द्र मुखर्जी - ऊकर नामक अरबी पुस्तक का संस्कृत अनुवाद
5. मुहम्मद मेहरी ⎤
6. मुहम्मद शरीफ ⎦ — विदेशों में पुस्तके लाने हेतु भेजा।
7. बख्तराम शाह - बुद्धिविलास ➔ जयपुर स्थापना की जानकारी मिलती है।

* चित्रकला- 'सूरतखाना' नामक चित्रकला विभाग की स्थापना की।
  चित्रकार- साहिबराम, मुहम्मदशाह

* सामाजिक सुधार-

➔ सती प्रथा पर नियंत्रण का प्रयास किया।
➔ बाल विवाह पर नियंत्रण का प्रयास किया।
➔ अन्तर्जातीय विवाह को प्रोत्साहन।
➔ ब्राह्मणों के आपसी भेदभाव को समाप्त किया।
➔ विधवा-विवाह को बढ़ावा दिया।
➔ साधुओं को गृहस्थ जीवन जीने हेतु प्रेरित किया तथा उनके लिए मथुरा के पास गाँव वैरागपुर बसाया।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

* देवारी समझौते के अनुसार चन्द्रकंवर के बेटे माधोसिंह को आमेर का राजा बनाया जाना था लेकिन सवाई जयसिंह ने ईश्वरीसिंह को राजा बना दिया।

- अतः माधोसिंह तथा ईश्वरीसिंह में उत्तराधिकार संघर्ष हुआ।

ईश्वरी सिंह (1743-50 ई.)

(i) राजमहल का युद्ध - 1747 ई. (जयपुर)

जीत → ईश्वरीसिंह (सूरजमल) v/s माधोसिंह → जगतसिंह-II (मेवाड़), उम्मेदसिंह (बूंदी), दुर्जनसाल (कोटा), मराठे

* इस युद्ध की जीत की याद में ईसरलाट / सरगासूली / लाट-मीनार का निर्माण करवाया गया। (7 मंजिला इमारत है)

(ii) बगरू का युद्ध - 1748 ई. (जयपुर)

ईश्वरीसिंह (सूरजमल) v/s माधोसिंह (विजयी) → जगतसिंह-II (मेवाड़), उम्मेदसिंह (बूंदी), दुर्जनसाल (कोटा), मराठे

- ईश्वरीसिंह ने माधोसिंह को पाँच परगने दिये।
- उम्मेदसिंह को बून्दी का राजा बनाया गया।
- ईश्वरीसिंह ने मराठों को युद्ध हरजाना दिया।
- मराठों ने ईश्वरीसिंह को युद्ध हरजाने हेतु परेशान किया, अतः ईश्वरीसिंह ने परेशान होकर ईसरलाट से कूदकर आत्महत्या कर ली।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

सवाई माधोसिंह-I (1750-68 ई.)

- 1751 ई. में जयपुर में मराठों का कत्लेआम करवाया।
- 1759 ई. में काकोड (टोंक) युद्ध में मराठों को हराया।

* भटवाड़ा का युद्ध - 1761 ई. (बारां)

- कारण – रणथम्भौर का किला

माधोसिंह V/s शत्रुसाल (कोटा) ↓ (जीत)

- कोटा का सेनापति – जालिमसिंह झाला

* स्थापत्य कला-

- माधोराजपुरा किला – जयपुर
  - यह किला मराठों से जीत की याद में बनवाया गया।
- 1763 ई. में सवाई माधोपुर की स्थापना।
- चाकसू में शीतला माता मन्दिर का निर्माण।
- जयपुर में मोती डूँगरी महलों का निर्माण।

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

प्रतापसिंह - (1778 - 1803 ई.)

* तुंगा का युद्ध - 1787 जयपुर

प्रतापसिंह V/s मराठे
- प्रतापसिंह → विजयसिंह (जोधपुर)
- मराठे → महादजी सिंधिया (सेनापति) ↓ (हार)

MAHECHA PUBLICATION

* **पाटन का युद्ध** - 1790 ई. (अजमेर)

प्रतापसिंह v/s मराठे
→ विजयसिंह (जोधपुर)
→ डी बोई (फ्रांसीसी) ↓ (जीत)

* **मालपुरा (नया जिला)** - 1800 ई.

प्रतापसिंह + भीमसिंह (जोधपुर) v/s मराठा दौलतराव सिंधिया ↓ जीत

* **सांस्कृतिक उपलब्धियाँ** -

- **हवामहल** - 1799 ई. में स्थापना।
  - वास्तुकार - लालचन्द उस्ता
  - 5 मंजिला इमारत —
    - I. शरद मंदिर (प्रताप मन्दिर)
    - II. रतन मंदिर
    - III. विचित्र मंदिर
    - IV. प्रकाश मंदिर
    - V. हवा मंदिर
- हवामहल की आकृति - भगवान श्री कृष्ण के मुकुट के समान।
- इसमें 953 झरोखे है।
- रानियाँ यहाँ तीज व गणगौर की सवारियां देखती थी।

* **साहित्य**-

- प्रतापसिंह 'बृजनिधि' नाम से कविताएँ लिखता था।
- काव्य गुरु - 'गणपति भारती'
- संगीत गुरु - चाँद खान → उपाधि - 'बुद्ध प्रकाश'
  → किताब - 'स्वर सागर'

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- जयपुर में 'संगीत सम्मेलन' का आयोजित करवाया।
  - अध्यक्ष - देवर्षि बृजपाल भट्ट
  - राधा गोविन्द संगीत सार पुस्तक का लेखन।
- प्रतापसिंह का शासनकाल जयपुर चित्रकला का स्वर्णकाल था।
  - चित्रकला स्कूल की स्थापना।
  - लालचन्द उस्ता ने पशुओं की लड़ाई के चित्र बनाये।
- जयपुर में 'तमाशा' लोकनाट्य लोकप्रिय हुआ।
  - वंशीधर को महाराष्ट्र से बुलाया।
- प्रताप के दरबार में २२ विद्वान थे, जिन्हें 'गन्धर्व बाईसी' या 'प्रताप बाईसी' कहा जाता था।
  - इनके लिए 'गुणीजन खाना' बनवाया।

जगतसिंह-II (1803-18 ई.)

* गिंगोली का युद्ध - 1807 ई.

जगतसिंह-II V/s मानसिंह

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- उसकी प्रेमिका 'रसकपूर' को नाहरगढ़ में नजरबंद किया गया।
  - शासन कार्यों में हस्तक्षेप करती थी।

NOTE = जोधपुर की नूरजहाँ - विजयसिंह की प्रेमिका - गुलाबराय

- 1818 ई. में अंग्रेजो से संधि की।

रामसिंह-II (1835 ई.-1880 ई.)

- राजा जयसिंह-III (पिता) की मृत्यु के बाद कम उम्र में राजा बना।
- संरक्षक - जॉन लुडलो

- [इस समय रूपा बडारण मामले के जाँचकर्ता अंग्रेज अधिकारी ब्लैक की जयपुर जनता ने हत्या कर दी]

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- सती प्रथा
- समाधि प्रथा
- कन्या वध
- मानव व्यापार

} इन कुरीतियों पर रोक लगाई।

- 1857 ई. की क्रान्ति के दौरान अंग्रेजों की सहायता की इसलिए अंग्रेजों ने 'सितार-ए-हिन्द' की उपाधि दी तथा कोटपुतली परगना भी दिया।
- 1857 ई. में कला के विकास हेतु 'मदरसा-ए-हुनरी' की स्थापना की जिसे "Rajasthan School of Art and Craft" कहते है।
- कांतिचन्द्र मुखर्जी के कहने पर 1866 ई. में जयपुर में कन्या विद्यालय की स्थापना की। (राजस्थान में रियासत का पहला कन्या विद्यालय)
- <u>1844 ई.</u>- जयपुर में महाराजा कॉलेज व संस्कृत कॉलेज की स्थापना की।
- <u>1876 ई.</u>- 'प्रिंस अल्बर्ट' ने <u>अल्बर्ट हॉल</u> की नींव रखी।
  - → वास्तुकार - स्टीवन जैकब
  - → उद्घाटन - एडवर्ड ब्रेडफोर्ड (1887 ई.)

<u>NOTE</u>- स्टेनले रीड ने जयपुर को Pink City कहा था।
→ Book- "Royal Towns of India"

- रामनिवास बाग का निर्माण करवाया गया।
- जयपुर में गुलाबी रंग करवाया गया। (एडवर्ड पंचम के आगमन पर)
- जयपुर में रामप्रकाश थियेटर का निर्माण।

- जयपुर की 'ब्लू पॉटरी' लोकप्रिय हुई।

माधोसिंह (1880-1922) ई.

इसे 'बब्बर शेर' कहा जाता है।

- BHU की स्थापना हेतु मदनमोहन मालवीय को 5 लाख ₹ की आर्थिक सहायता दी।
- अपनी 9 दासियों हेतु नाहरगढ़ में नौ एक जैसे महल बनवाए।
- चन्द्रमहल में मुबारक महल का निर्माण करवाया। (सिटी पैलेस में)
  - (मुगल + राजपूत + यूरोपियन शैली में निर्माण)
- 1904 ई. में जयपुर में डाक व्यवस्था की शुरुआत की।
  - → रियासतों में राजस्थान में प्रथम।

मानसिंह- (1922-47 ई.)

- आजादी के समय जयपुर का राजा।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- राजस्थान के प्रथम व अन्तिम राजप्रमुख।
- रानी 'गायत्री देवी'।
  - → कूच बिहार → आत्मकथा → प्रिंसेज मेम्बर्स
  - → राजस्थान की प्रथम महिला लोकसभा सदस्य। (1962 में स्वतंत्र पार्टी से)

अलवर का इतिहास

- मिर्जा राजा जयसिंह ने कल्याणसिंह नरूका को 'माचेड़ी की जागीर' दी।
  माचेड़ी → जयपुर
- अतः अलवर में कच्छवाहा वंश की 'नरुका शाखा' का शासन था।

प्रतापसिंह-

- आमेर रियासत के अधीन माचेड़ी ठिकाने का सामन्त।
- 1774 ई.- मुगल बादशाह शाहआलम-II ने स्वतंत्र राजा घोषित।
- 1775 ई.- अलवर पर अधिकार कर राजधानी बनाई।

* दरबारी- जाचक जीवण – प्रतापरासौ

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

बख्तावर सिंह-

- 'बख्तेश' व 'चन्द्रसखी' नाम से कविताएँ लिखता था।
- 1 नवम्बर 1803 में 'लसवाड़ी के युद्ध' में मराठों के विरुद्ध अंग्रेजों का साथ दिया।
- 14 नवम्बर 1803 → अंग्रेजों से संधि की।

विनयसिंह-

अंग्रेजों ने अलवर का विभाजन कर दिया था तथा बलवन्त सिंह को तिजारा (नया जिला) दे दिया था। थोड़े समय बाद विनयसिंह को तिजारा पुनः प्राप्त हो जाता है।

- अलवर में बख्तावर सिंह की दासी 'मुसी महारानी' की छतरी का निर्माण करवाया।
  (मुसी महारानी की छतरी → 80 खम्भों की)

- अपनी रानी शीला के साथ अलवर में 'सिलीसेढ़ झील' का निर्माण करवाया। जिसे राजस्थान का 'नन्दनकानन' कहा जाता है।

मंगल सिंह-

- यह मेयो कॉलेज (अजमेर) का प्रथम विद्यार्थी था।
- 1869 ई. में वॉल्टर योजना दी गई थी तथा इसके लिए राजा-महाराजाओं के बच्चों के लिए अलग से स्कूल तथा कॉलेज स्थापित किये गये थे।
- 1875 ई. में मेयो कॉलेज की स्थापना।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

जयसिंह-

- पहले गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया।
- BHU, AMU व सनातन धर्म कॉलेज को आर्थिक सहायता दी।
- 'चैम्बर्स ऑफ प्रिंसेज' का नाम बदलकर 'नरेन्द्र मण्डल' किया।
- हिन्दी को अलवर की 'राष्ट्रभाषा' घोषित किया।

[महाराजा किशनसिंह → हिन्दी → भरतपुर राष्ट्रभाषा]

- गाँव में पंचायतों की स्थापना की।
- यह स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग करता था।
- 10 दिसम्बर, 1909 अलवर में बालविवाह व अनमेल विवाह पर रोक लगाई।
- 'Duke of Edinburgh' के आगमन पर 'सरिस्का महल' का निर्माण करवाया।
- 1933 ई. → तिजारा दंगों के बाद अंग्रेजों ने हटा दिया।
  - ↳ यह पेरिस चला गया तथा वहीं पर मृत्यु हो गई।

तेजसिंह-

- यह आजादी के समय अलवर का राजा था।
- गाँधीजी की हत्या में उसे नजरबंद कर लिया तथा बाद में सुप्रीम कोर्ट ने उसे निर्दोष करार दिया।

★ गाँधीजी की हत्या के समय अलवर के प्रधानमंत्री 'भास्कर खरे' को संदिग्ध माना गया था।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

गुहिल वंश/ सिसोदिया वंश

- गुहिल सूर्यवंशी हिन्दु थे।
- 566 ई. में गुहिल ने 'गुहिल वंश' की स्थापना की।

'गौरीशंकर हीराचन्द ओझा' के अनुसार 566 ई. में गुहिल ने शासन किया।'

- यह जानकारी 'सामोली अभिलेख' (646 ई., उदयपुर) से मिलती है।
  - ↓ "गुहिल वंश की जानकारी देने वाला प्राचीनतम अभिलेख"
- यह अभिलेख 'शिलादित्य' से संबंधित है। यह गुहिल का पाँचवा वंशज था।
- यह अभिलेख 'जावर माता मन्दिर' (उदयपुर) व खनन उद्योग की जानकारी देता है।
- गुहिल वंश की 24 शाखाएँ थी।
- कर्नल जेम्स टॉड के अनुसार 'गुहिल' वल्लभी (गुजरात) के राजा शिलादित्य का पुत्र था।
- गुहिल की माता का नाम का नाम 'पुष्पावती' था।
- गुहिल रियासतें →
  1. मेवाड़
  2. डूंगरपुर
  3. बांसवाड़ा
  4. प्रतापगढ़
  5. शाहपुरा

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- अबुल फजल ने मेवाड़ के गुहिलों को ईरान के बादशाह '<u>नौशेरवा</u>' के वंश से उत्पन्न होना लिखा है।
- कवि श्यामलदास ने भी '<u>वीर-विनोद</u>' में गुहिलों का वल्लभी से आना लिखा है।
- 'D.R भण्डारकर' ने 'आहड़' से प्राप्त लेख के आधार पर मेवाड़ के गुहिलों को ब्राह्मण माना और गुहिल का आनन्दपुर से आना लिखा है।
- 'कुंभलगढ़ प्रशस्ति' व 'एकलिंग महात्म्य' भी गुहिल वंश को आनन्दपुर के ब्राह्मण वंश से संबंधित बताते है।
- मुहणोत नैणसी व गोपीनाथ शर्मा ब्राह्मण वंशी मानते है।

मेवाड़ का इतिहास

- प्राचीन नाम-
  1. मेदपाट
  2. प्राग्वाट
  3. शिवि जनपद

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- मेवाड़ में 'गुहिल वंश' का शासन था।

<u>बप्पा/ बापा रावल-</u> (734-753 ई.)

- वास्तविक नाम- कालभोज
  → (गौरीशंकर हीराचन्द ओझा के अनुसार)
- यह 'हारित ऋषि' का अनुयायी था।
- 734 ई. में मानमौर्य को हराकर बप्पा रावल ने चित्तौड़ पर अधिकार कर लिया था।
  → (राजप्रशस्ति के अनुसार)

- राजधानी - नागदा (उदयपुर)
- नागदा में एकलिंग जी का मन्दिर बनवाया।
- मेवाड़ के राजा स्वयं को एकलिंग जी का दीवान मानते थे।
- इसने मेवाड़ में 'सोने के सिक्के' चलाए थे।
  - (115 ग्रेन का)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- मुस्लिम सेना को हराते हुए यह गज़नी तक चला गया था, व गजनी (अफगानिस्तान) के राजा सलीम को हराया तथा अपने भान्जे को वहाँ का राजा बनाया।
- इतिहासकार सी० वी वैद्य ने बप्पा रावल की तुलना फ्रांसीसी सेनापति 'चार्ल्स मार्टेल' से की है।
- बप्पा रावल के सैनिक शिविर के कारण पाकिस्तान के 'रावलपिण्डी' शहर का नामकरण हुआ।
- चित्तौड़ में सूर्यमन्दिर (कालिका माता मन्दिर) का निर्माण करवाया।

* उपाधियाँ -

  (i) हिन्दू सूरज (ii) राजगुरु (iii) चक्कवै

- कुंभलगढ़ प्रशस्ति (1460 ई.) बप्पा रावल को 'विप्र' बताती है।
- 'खुरासान' में बप्पा रावल की समाधि 'विषयक उक्ति' प्रचलित है।
- अन्तिम दिनों में सन्यास ग्रहण किया तथा अपने पुत्र 'खुमाण' को राजा घोषित किया।

अल्लट-

➤ अन्य नाम- आलु रावल

* सारणेश्वर प्रशस्ति (953 ई.) के अनुसार- उदयपुर

- अल्लट ने 'आहड़' को अपनी दूसरी राजधानी बनाया।
- आहड़ में 'वराह मन्दिर' का निर्माण करवाया।
- इस प्रशस्ति से 'कर व्यवस्था' की जानकारी मिलती है।
- अल्लट ने मेवाड़ में नौकरशाही की स्थापना की।
  जैसे-
  - (i) अमात्य – मुख्यमंत्री या प्रधानमंत्री
  - (ii) संधि विग्रहक – युद्ध व शान्ति का मंत्री
  - (iii) अक्षपटलिक – आय और व्यय का अधिकारी।
  - (iv) भिषगाधिराज – राजवैद्य
  - (v) बन्दिपती – राजा की प्रशंसा करने वाला व्यक्ति

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

➤ शक्तिकुमार के आटपुर अभिलेख (977 ई.) के अनुसार-

(i) अल्लट की हूण रानी हरियादेवी ने 'हर्षपुर' नामक गाँव की स्थापना की थी। अल्लट की माता महालक्ष्मी राष्ट्रकूट थी।

जैत्रसिंह (1213-1253 ई.)

* भूताला का युद्ध- 1227 ई.

(उदयपुर) जैत्रसिंह v/s इल्तुतमिश (दिल्ली)

↓

(विजेता)

- जयसिंह सूरि की पुस्तक 'हम्मीर मद मर्दन' से युद्ध की जानकारी मिलती है।
  - इस पुस्तक में इल्तुतमिश को 'हम्मीर' कहा गया है।
- इल्तुतमिश की भागती हुई सेना ने नागदा को लूट लिया था अतः जैत्रसिंह ने परमारों को हराकर चित्तौड़ पर अधिकार कर लिया तथा चित्तौड़ को अपनी राजधानी बनाया।
- जैत्रसिंह के सेनापति - बालक और मदन

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- इतिहासकार दशरथ शर्मा के अनुसार जैत्रसिंह का शासनकाल "मध्यकालीन मेवाड़ का स्वर्णकाल" था।
- 1248 ई. में जैत्रसिंह ने दिल्ली के नासिरुद्दीन मुहम्मद को हराया।
- चीरवा शिलालेख के अनुसार-

"जैत्रसिंह इतना शक्तिशाली था कि मालवा, गुजरात, मारवाड़, जांगल व दिल्ली के शासक पराजित नहीं कर पाये"।

तेजसिंह-

इसकी रानी जैतल देवी ने चित्तौड़ में "श्याम पार्श्वनाथ मंदिर" का निर्माण करवाया।

- "श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णि" - मेवाड़ का प्राचीनतम चित्रित ग्रन्थ है।
  - 1260 ई. में कमलचन्द्र ने इसे 'आहड़' में चित्रित किया गया था।

रत्नसिंह -(1302- 1303 ई.)

*** कुम्भकरण-**

- यह रत्नसिंह का छोटा भाई था।
- उसने नेपाल में गुहिल वंश की राणा शाखा का शासन स्थापित किया।

*** पद्मिनी-**

· पिता- गन्धर्वसेन

· माता - चम्पावती

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- यह रत्नसिंह की रानी थी।
- यह सिंहल द्वीप की राजकुमारी थी।
- राघव चेतन नामक ब्राह्मण ने अलाउद्दीन खिलजी को पद्मिनी की सुन्दरता के बारे में बताया।
- 1303 ई. में अलाउद्दीन ने चितौड़ पर आक्रमण कर दिया।

NOTE- 1540 ई. में मलिक मोहम्मद जायसी (जौनपुर) ने 'पद्मावत' नामक पुस्तक अवधि भाषा में लिखी।

*** आक्रमण के कारण-**

- अलाउद्दीन अपने साम्राज्य का विस्तार करना चाहता था, वह 1301 ई. में रणथम्भौर पर अधिकार कर चुका था।
- चितौड़गढ़ दुर्ग अपने सामरिक महत्व के लिए प्रसिद्ध था।
- चितौड़ दिल्ली से गुजरात तथा मालवा के व्यापारिक मार्ग पर स्थित था।

- गुजरात आक्रमण के दौरान मेवाड़ के समरसिंह ने अलाउद्दीन से 'कर' वसूला था। अतः यह अलाउद्दीन के लिए प्रतिष्ठा का विषय बन गया था। (१२९९ ई.)
- मेवाड़ की शक्तियाँ बढ़ रही थी तथा अलाउद्दीन उसे नियंत्रित करना चाहता था।
- रानी पद्मिनी की सुन्दरता।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

* प्रथम साका (चित्तौड़) 1303 ई.-

- रानी पद्मिनी ने 1600 महिलाओं के साथ जौहर किया।
- रत्नसिंह के नेतृत्व में केसरिया किया गया।
- रत्नसिंह के सेनापति- गोरा एवं बादल।
- २५/२६ Aug. 1303 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड़ पर अधिकार कर लिया तथा उसने चित्तौड़ में 30,000 लोगों का नरसंहार करवाया।
- अलाउद्दीन खिलजी ने अपने बेटे 'खिज्र खाँ' को चित्तौड़ सौंप दिया और चित्तौड़ का नाम बदलकर 'खिज्राबाद' कर दिया था।

  ↓

  ['धाईबी पीर की दरगाह लेख' (१३२५) के अनुसार]

- खिज्र खाँ ने गम्भीरी (नदी) चित्तौड़ पर पुल बनवाया तथा यहाँ मकबरे का निर्माण करवाया।
- मकबरे के अभिलेख (1310 ई.) में अलाउद्दीन खिलजी को तीन उपाधियाँ दी गई-
  - (i) दूसरा सिकन्दर
  - (ii) ईश्वर की छाया
  - (iii) संसार का रक्षक

- कालान्तर में चित्तौड़ का किला मालदेव सोनगरा को सौंप दिया गया। (मुंछाला मालदेव)

मालदेव सोनगरा-

- इसे 'मुंछाला मालदेव' भी कहा जाता है।
- यह जालौर के कान्हड़देव सोनगरा का भाई था।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

आक्रमण की जानकारी के स्रोत-

1. अमीर खुसरो – 'खजाईन-उल-फुतुह' (फारसी भाषा) (तारीख-ए-अलाई)
2. हेमरत्न सूरि – गौरा-बादल री चौपाई
3. मलिक मुहम्मद जायसी – पद्मावत (1540 ई.) (अवधी भाषा)

हम्मीर- (1326-64 ई.)

- इसने बनवीर सोनगरा को हराकर चित्तौड़ पर अधिकार कर लिया था।
- यह सिसोदा (राजसमंद) गाँव का था। यहाँ से गुहिल वंश की सिसोदिया शाखा का शासन प्रारम्भ हुआ।
- इसने 'राणा' उपाधि का प्रयोग किया।

[रत्नसिंह मेवाड़ का अंतिम राजा था जिसने 'रावल' उपाधि का प्रयोग किया था]

- हम्मीर को '<u>मेवाड़ का उद्धारक</u>' कहा जाता है।
- सिंगोली (बांसवाड़ा) के युद्ध (1326 ई.) में हम्मीर ने दिल्ली के सुल्तान 'मुहम्मद बिन तुगलक' को हराया।

- इसने चित्तौड़ में 'बरवड़ी माता' (अन्नपूर्णा माता) का मंदिर बनवाया।
  ↓
  "मेवाड़ के गुहिल वंश की इष्टदेवी"

NOTE – "मेवाड़ के गुहिल वंश की कुलदेवी - बाणमाता"

* हम्मीर की उपाधियाँ–

1. विषम घाटी पंचानन (कुंभलगढ़ प्रशस्ति के अनुसार, 1460 ई.)
2. वीर राजा (रसिक प्रिया)
3. प्रबल हिन्दू (कर्नल जेम्स टॉड के अनुसार)

NOTE – राहप ने 'सिसोदा गाँव' की स्थापना की।

राणा लाखा / लक्ष सिंह– (1382 ई.- 1421 ई.)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- जावर में चाँदी की खान प्राप्त हुई। (उदयपुर)
- एक बन्जारे ने 'पिछोला झील' (उदयपुर) का निर्माण करवाया था।
- इस झील के पास 'नटनी का चबूतरा' बना हुआ है।
- बन्जारा → घुमक्कड़ व्यापारी
- कुम्भा हाड़ा नकली बून्दी की रक्षा करते हुए मारा गया था।

मेवाड़ (गुहिल वंश) → राणा लाखा → चूण्डा ['मेवाड़ का भीष्म पितामह']

मारवाड़ (राठौड़ वंश) → चूण्डा → पुत्री हंसाबाई ; पुत्र रणमल

हंसाबाई → राणा लाखा (शादी हुई)

- मारवाड़ के राजा चूण्डा ने अपनी पुत्री का विवाह (हंसाबाई) मेवाड़ के राणा लाखा से किया।
- उस समय लाखा के बेटे चूण्डा ने प्रतिज्ञा की, कि वह मेवाड़ का अगला राजा नहीं बनेगा, बल्कि हंसाबाई के बेटे को मेवाड़ का अगला राजा बनाया जायेगा।
- इसीलिए चुण्डा को 'मेवाड़ का भीष्म पितामह' कहा जाता है।
- इस त्याग के कारण चूण्डा को सबसे बड़ा ठिकाना 'सलूम्बर' दिया गया तथा 'सलूम्बर' के सामन्त को कई विशेषाधिकार दिये गये।

(i) सलूम्बर का सामन्त मेवाड़ के राजा का राजतिलक करेगा।

(ii) यह मेवाड़ की सेना का सेनापति होगा।

(iii) यह मेवाड़ के राजा के साथ सभी कागज पत्रों पर हस्ताक्षर करेगा।

(iv) राणा की अनुपस्थिति में यह राजधानी को सम्भालेगा।

हरावल →	सेना का अगला भाग
चन्द्रावल →	सेना का पिछला भाग

- मेवाड़ में 16 प्रथम श्रेणी के ठिकाने थे जिनमें से 4 चुण्डा के वंशजों को दिये गये –

1. सलूम्बर (उदयपुर)
2. आमेट (राजसमन्द)
3. बेगू (चितौड़गढ़)
4. देवगढ़ (राजसमन्द)

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

- मेवाड़ में तीन प्रकार के सामन्त थे-

(i) प्रथम श्रेणी-

- इस श्रेणी में 16 सामन्त थे जिन्हें 'उमराव' कहा जाता था।
- इनमें सलूम्बर सबसे प्रमुख था।
- देवगढ़ (राजसमन्द) अन्तिम प्रथम श्रेणी का ठिकाना था।

(ii) द्वितीय श्रेणी- इसमें 32 सामन्त होते थे।

(iii) तृतीय श्रेणी- इसमें 100 से अधिक सामन्त होते थे, जिन्हें 'गोल के सामन्त' कहा जाता था।

मोकल (1421-33 ई.)

- पिता- राणा लाखा
- माता- हंसाबाई
- संरक्षक (प्रथम) = चूण्डा और,
  द्वितीय = रणमल (हंसाबाई का भाई)
- हंसाबाई के अविश्वास के कारण चूण्डा मालवा चला गया था।
  (↓ होशंगशाह के पास)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

*सांस्कृतिक उपलब्धियाँ-

1) एकलिंग जी मन्दिर का परकोटा बनवाया।

2) चित्तौड़ में 'समिद्धेश्वर मन्दिर' का पुनर्निर्माण करवाया।

[पहले इस मन्दिर को त्रिभुवन नारायण मन्दिर कहा जाता था, जो की भोज परमार ने बनवाया था]

3) चित्तौड़ में द्वारिकानाथ (विष्णु) मन्दिर तथा जलाशय बनवाया।

4) भाई बाघसिंह की याद में बाघेला तालाब का निर्माण करवाया।
→ (उदयपुर)

5) शृंगी ऋषि बावड़ी (उदयपुर)

→ 1433 ई. में गुजरात के अहमदशाह ने मेवाड़ पर आक्रमण कर दिया।

* रामपुरा (भीलवाड़ा) का युद्ध- 1428 ई.

मोकल v/s फिरोज खाँ (नागौर)
↓
(जीत)

→ जीलवाड़ा (राजसमन्द) नामक स्थान पर चाचा, मेरा व महपा पंवार (मोकल के सेनापति) ने मोकल की हत्या कर दी।

* शृंगी ऋषि का अभिलेख (1428 ई.) –

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

→ जानकारी-

I. हम्मीर से मोकल तक की जानकारी।

II. राणा लाखा ने काशी, प्रयाग, गया तीर्थस्थलों का 'कर' माफ किया।

III. मोकल ने नागौर के फिरोज व गुजरात के अहमदशाह को हराया।

IV. रानी गौराम्बिका की याद में बावडी का निर्माण।

V. मोकल ने तुलादान करवाये (प्रमुख - पुष्कर के वराह मन्दिर)

राणा कुम्भा (1433-68 ई.)

- पिता- मोकल
- माता- सौभाग्यवती परमार
- संरक्षक - रणमल
- रणमल की सहायता से कुम्भा ने अपने पिता की हत्या का बदला लिया। (चाचा व मेरा को मारकर)
  - ↳ यह जानकारी पदराड़ा (उदयपुर) अभिलेख - 1433 ई. से प्राप्त होती है।
- अतः रणमल का प्रभाव मेवाड़ दरबार में बढ़ गया।
- रणमल ने सिसोदियों के नेता राघवदेव (चूण्डा का भाई) की हत्या करवा दी।
- हंसाबाई ने चूण्डा को वापस बुलाया।
- भारमली की सहायता से रणमल को मार दिया गया।
- रणमल के बेटे जोधा ने बीकानेर के पास 'कावणी' गाँव में शरण ली। (कावणी → बीकानेर)
- चुण्डा ने राठौड़ो की राजधानी मण्डौर पर अधिकार (1438 ई.) कर लिया।

आवल - बावल की सन्धि - (1453 ई.)

- कुम्भा + जोधा
- सोजत को मेवाड़ व मारवाड़ की सीमा बनाया।
- जोधा को मारवाड़ वापस दे दिया गया।
- जोधा ने अपनी राजकुमारी शृंगार कंवर का विवाह कुम्भा के पुत्र रायमल के साथ किया।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

सारंगपुर का युद्ध- (1437 ई.) → (M.P)

- कुम्भा v/s महमूद खिलजी-I (मालवा)
- कारण-
- दोनों अपने साम्राज्य का विस्तार करना चाहते थे।
- महमूद खिलजी ने मोकल के हत्यारों को शरण दी थी।
- कुम्भा, महमूद खिलजी के विद्रोही उमर खाँ की सहायता कर रहा था तथा उमर खाँ ने सारंगपुर पर कब्जा कर लिया था।
- कुम्भा इस युद्ध में जीत गया।
- इस जीत की याद में 'विजयस्तम्भ' (चितौड़) का निर्माण करवाया।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

नागौर का उत्तराधिकार संघर्ष- (फिरोज खाँ के पुत्रों में)

नागौर

- शम्स खाँ (कुंभा ने सहायता की)
- मुजाहिद खाँ (कुंभा ने इससे युद्ध किया

- कुछ समय बाद शम्स खाँ कुम्भा के खिलाफ विद्रोह कर देता है तथा वह गुजरात के कुतुबुद्दीन शाह के पास चला जाता है।
- लेकिन कुम्भा ने दोनों को हरा दिया।

* चम्पानेर की सन्धि (1456 ई.)-

महमूद खिलजी (मालवा) + कुतुबुद्दीन शाह (गुजरात)

- **उद्देश्य-**
  - कुम्भा को हराकर मेवाड़ का विभाजन करना चाहते थे।

* **बदनौर (भीलवाड़ा) का युद्ध** (1457 ई.)

- कुम्भा ने मालवा तथा गुजरात की संयुक्त सेना को हरा दिया।
- कुम्भा ने सिरोही के 'सहसमल देवड़ा' को भी हराया।

कुम्भा की सांस्कृतिक उपलब्धियाँ

स्थापत्य कला-

कुम्भा को राजस्थान की '<u>स्थापत्य कला का जनक</u>' कहा जाता है।

1. **विजयस्तम्भ-**

- अन्य नाम - 1. कीर्ति स्तम्भ
  2. विष्णु ध्वज
  3. गरुड़ ध्वज
  4. मूर्तियों का अजायबघर
  5. भारतीय मूर्तिकला का विश्वकोष

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

- ऊँचाई = 122 Feet और चौड़ाई = 30 feet
- यह चित्तौड़ दुर्ग में स्थित एक नौ मंजिला इमारत है। (1440-48 में निर्माण)
- इसकी 8वीं मंजिल में कोई मूर्ति नहीं है।
- इसकी 6वीं मंजिल में वास्तुकारों के नाम उल्लेखित है-
  - जैता,
  - पूंजा,
  - पोमा,
  - नापा।

- इसकी तीसरी मंजिल पर अरबी भाषा में नौ बार अल्लाह शब्द लिखा हुआ है।

- भगवान विष्णु को समर्पित, 15 वीं शताब्दी में निर्मित।

"कीर्ति स्तम्भ प्रशस्ति" के लेखक अत्रि भट्ट व महेश भट्ट थे।

→ इस प्रशस्ति में कुंभा के विजयी, अभियान, साहित्य तथा निर्माण कार्यों, उपाधियों की जानकारी मिलती है।

- मेवाड़ के महाराणा स्वरूप सिंह ने इसका पुनर्निर्माण करवाया।

तुलना (विजयस्तम्भ)

जेम्स टॉड (कुतुबमीनार से)	फर्ग्यूसन (टार्जन टावर, रोम)

- राजस्थान की पहली इमारत जिस पर डाक टिकट जारी किया गया

- प्रतीक चिह्न (i) राजस्थान पुलिस
  (ii) राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
  (iii) अभिनव भारत (वीर सावरकर का क्रांतिकारी संगठन)

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

* <u>कीर्तिस्तम्भ</u>-

- यह चित्तौड़गढ़ के किले में सात मंजिला इमारत है।

- 12 वीं शताब्दी में 'जीजाशाह बघेरवाल' (कुमारसिंह के शासनकाल में जैन व्यापारी) ने इसका निर्माण करवाया था।

- यह भगवान आदिनाथ (ऋषभदेव) को समर्पित है, अतः इसे 'आदिनाथ स्तम्भ' भी कहते है।
- कविराजा श्यामलदास जी की पुस्तक 'वीर विनोद' के अनुसार कुम्भा ने मेवाड़ के 84 किलों में से 32 का निर्माण करवाया।

* प्रमुख किले-

1. कुम्भलगढ़ (राजसमन्द) -

वास्तुकार - मण्डन

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- 'कुम्भलगढ़' मेवाड़ की संकट कालीन राजधानी थी।
- मौर्य राजा सम्प्रति ने इसका निर्माण करवाया था।
- कालान्तर में कुंभा ने इस किले का निर्माण करवाया था।
- इसे मेवाड़-मारवाड़ का सीमा प्रहरी कहा जाता है।
- परकोटे की लम्बाई- 36 KM
  - चौड़ाई- 4 घोड़े एक साथ दौड़ सकते है।
- ऊँचाई- अबुल फजल के अनुसार
  "यदि इस किले को नीचे से ऊपर की ओर देखने पर उसकी पगड़ी गिर जाती है"।
- जेम्स टॉड ने इसकी तुलना 'एट्रुस्कन' किले से की थी।
- इसका सबसे ऊपरी भाग 'कटारगढ़' है जो कुम्भा का निजी आवास था।
- इसे मेवाड़ की आँख भी कहा जाता है।

* कुंभलगढ़ प्रशस्ति - 1460 ई.

- कुंभलगढ़ प्रशस्ति का लेखक - महेश भट्ट
- कुंभलगढ़ प्रशस्ति में कुम्भा को धर्म एवं पवित्रता का अवतार तथा कर्ण एवं भोज के समान दानवीर बताया गया है।

2. अचलगढ़ (सिरोही)-

- परमारों ने इसका निर्माण करवाया था।
- 1452 ई. में कुम्भा ने इसका पुनर्निर्माण करवाया।
- इस किले में कुम्भा तथा उनके बेटे ऊदा की मूर्तियाँ है। इन मूर्तियों को 'सावन-भादो' कहा जाता है।

3. बसंतगढ़ (सिरोही)
4. मचान दुर्ग (सिरोही) - मेर जनजाति के विद्रोह को दबाने के लिए।
5. भोमट दुर्ग - उदयपुर → भीलों पर नियंत्रण हेतु बनाया गया।

* प्रमुख मन्दिर-

1. कुंभस्वामी मन्दिर - विष्णु मन्दिर →
   - चितौड़गढ़
   - कुम्भलगढ़
   - अचलगढ़
2. कुंथुनाथ जैन मन्दिर - देलवाड़ा (सिरोही)
3. शांतिनाथ जैन मन्दिर - (शृंगार चंवरी मन्दिर)
   - चितौड़ में कुम्भा के कोषाध्यक्ष 'वेल्का भण्डारी' ने इस मन्दिर का निर्माण करवाया।

THE NOTES HUB * Notes are Available * All Competition Books 7300134518, 7610010054

4. रणकपुर जैन मन्दिर (पाली)

- 1439 ई. में जैन व्यापारी धरणकशाह ने इन मन्दिरों का निर्माण करवाया। इसमें सबसे प्रमुख 'चौमुखा मन्दिर' है। इसमें भगवान 'आदिनाथ' की मूर्ति है। → वास्तुकार – देपाक
- इसमें 1447 स्तम्भ है अतः इसे 'स्तम्भों का अजायबघर' कहा जाता है।

*** कुम्भा का साहित्य-**

- कुम्भा एक अच्छा संगीतज्ञ था।
- वह वीणा बजाया करता था।
- संगीतगुरु – सारंग व्यास

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

*** कुम्भा की पुस्तकें-**

1. सुधा प्रबन्ध
2. कामराज रतिसार (7 भाग)
3. संगीत सुधा
4. संगीत मीमांसा
5. संगीत क्रम दीपिका
6. संगीत राज (5 भाग) →
   1. पाठ्य रत्न कोष
   2. गीत रत्न कोष
   3. नृत्य रत्न कोष
   4. वाद्य रत्न कोष
   5. रस रत्न कोष
7. हरिकार्तिक

*** कुम्भा की टीकाएँ-** (बड़ी पुस्तक का छोटा रूप)

- गीत गोविन्द (जयदेव) – रसिक प्रिया
- संगीत रत्नाकर (सारंगधर) – टीका
- चंडी शतक (बाणभट्ट) – टीका

नाटक-
- अतुल्य चातुरी – संस्कृत भाषा मे लिखा गया।
- मुरारि संगीत – कन्नड़ भाषा

- नन्दिनी वृति — मराठी भाषा
- रसनन्दिनी — मेवाड़ी भाषा

कुम्भा के दरबारी विद्वान-

1. कान्हव्यास - एकलिंग महात्मय
   ↳ इसका पहला भाग -'राजवर्णन' कहलाता है, जो की कुम्भा द्वारा लिखा गया।

2. मेहाजी - तीर्थमाला
   ↳ 120 तीर्थों की जानकारी है।

3. मंडन
   ↓
   कुंभलगढ़ का वास्तुकार था।

   (i) वास्तुसार
   (ii) देवमूर्ति प्रकरण
   (iii) राजवल्लभ
   (iv) रूप मण्डन (मूर्तिकला की जानकारी)
   (v) कोदण्ड मण्डन (धनुष निर्माण की जानकारी)

4. नाथा -(मण्डन का भाई)
   वास्तुमंजरी

5. गोविन्द-(मण्डन का पुत्र था)

   (a) द्वार दीपिका
   (b) उद्धारधोरिणी (पुनर्निर्माण)
   (c) कलानिधि (मंदिरों के शिखर से संबंधित)
   (d) सार सम्मुचय (आयुर्वेद की जानकारी)

6. हीराचन्द मुनि → कुम्भा के गुरु
   ↳ उपाधि - कविराज

7. तिल्लाभट्ट

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- कुम्भा एक धर्मनिरपेक्ष राजा था, उसने जैनों की तीर्थ यात्रा कर समाप्त कर दिया था।

- जैन विद्वानों को संरक्षण प्रदान किया-
जैसे- सोमसुन्दरसूरि, सोमदेवसूरि, जयशेखर, भुवनकीर्ति।

* कुम्भा की उपाधियाँ-

1. हिन्दू सुरताण → हिन्दुओं की मुस्लिम आक्रमणों से रक्षा करने वाला।
2. अभिनव भरताचार्य / नव्य भारत
→ संगीत की जानकारी रखने के कारण।
3. वीणा वादन प्रवीणेन (वीणा बजाने के कारण)
4. राणा रासौ - साहित्य
5. हाल गुरु - पहाड़ी दुर्गों पर कब्जा
6. चाप गुरु - धनुष में प्रवीण
7. परम भागवत ┐
8. आदि वराह ┘ — विष्णु भक्त के कारण।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

कुम्भलगढ़ किले में मामादेव कुण्ड के पास कुम्भा की हत्या उसके बेटे उदा ने कर दी थी।

रमाबाई-

- यह कुम्भा की बेटी थी। पिता की तरह संगीत में रुचि रखती थी।
- रमाबाई को 'जावर' परगना दिया गया।
- जावर में रमाबाई ने 'रामास्वामी मन्दिर' का निर्माण करवाया।

- उपाधि- वागीश्वरी

रायमल (1473-1509 ई.)

- कुम्भा का बेटा। इसने अपने भाई ऊदा को जावर तथा दाड़िमपुर के युद्धों में हराया।
- मालवा के ग्यासशाह को हराया। (जानकारी - एकलिंग प्रशस्ति से)
- एकलिंग जी मन्दिर का वर्तमान स्वरूप बनाया।
- इसकी रानी शृंगार कंवर ने 'घोसुण्डी बावड़ी' बनवाई।
- चित्तौड़ में अद्‌भुत शिव मन्दिर (अद्बद जी) का निर्माण करवाया।

शृंगार कंवर जोधा की पुत्री थी

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

घोसुण्डी अभिलेख-

- यह दूसरी शताब्दी ईसापूर्व का अभिलेख है।
- यह राजस्थान का प्राचीनतम अभिलेख है।
- इस अभिलेख से भागवत् (वैष्णव) धर्म की जानकारी मिलती है।
- इस अभिलेख के अनुसार गजवंश के राजा सर्वतात ने अश्वमेध का आयोजन करवाया।

पृथ्वीराज-

- यह रायमल का बेटा था। इसे 'उड़णा राजकुमार' भी कहा जाता है।
- इसकी रानी तारा के कारण अजमेर किले का नाम 'तारागढ़' रखा गया।
- छतरी - कुम्भलगढ़ (12 खम्भों की)

जयमल-

- यह रायमल का बेटा था।
- यह सोलंकियों के खिलाफ लड़ता हुआ युद्ध में मारा गया।

राणा सांगा (1509-28 ई.)

- यह भी रायमल का बेटा था।
- अपने भाईयों से विवाद होने के बाद सांगा को 'सेवन्त्री' (राजसमन्द) नामक गाँव में 'बीदा जैतमालोत' ने बचाया था।
- कर्मचन्द पंवार ने श्रीनगर गाँव (अजमेर) में सांगा को शरण दी थी।
- रायमल की मृत्यु के पश्चात् सांगा मेवाड़ का राजा बना।

सांगा के राजतिलक के समय

- दिल्ली (सिकन्दर लोदी)
- मालवा (नासिरशाह)
- गुजरात (महमूद बेगड़ा)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

सांगा V/s इब्राहिम लोदी (दिल्ली)

- खातोली (कोटा) का युद्ध (1517 ई.)
- बाड़ी (धोलपुर) का युद्ध (1518 ई.)

- इन युद्धों में सांगा ने इब्राहिम लोदी को हराया।

* गागरोण का युद्ध (1519 ई.)-

सांगा V/s महमूद खिलजी-II (मालवा)

- कारण-
- दोनों अपने साम्राज्य का विस्तार करना चाहते थे।
- मेवाड़ तथा मालवा की लम्बे समय से दुश्मनी चली आ रही थी।

- सांगा ने महमूद खिलजी-II के विद्रोही 'चन्देरी के मेदिनीराय' को शरण दी थी।
  ↓ "सांगा ने इसे गागरोण का किला दिया"
- सांगा इस युद्ध में जीत गया।
- हरिदास चारण ने महमूद खिलजी-II को गिरफ्तार कर लिया था, अतः सांगा ने इसे 12 गाँव दान में दिये।

सांगा V/S मुजफ्फरशाह-II (गुजरात)

↳ 'ईडर का युद्ध'

- संघर्ष के कारण-
- दोनों अपने साम्राज्य का विस्तार करना चाहते थे।
- नागौर को लेकर मेवाड़ तथा गुजरात में लम्बे समय से दुश्मनी थी।
- मुजफ्फरशाह-II सांगा के खिलाफ महमूद खिलजी-II की सहायता कर रहा था।
- तात्कालिक कारण- ईडर का उत्तराधिकार संघर्ष।

भारमल	रायमल
मुजफ्फरशाह-II (गुजरात)	↓ सांगा

- सांगा ने भारमल व मुजफ्फरशाह-II को हरा दिया।

* बयाना का युद्ध- (16 Feb. 1527)

सांगा V/S बाबर

- उस समय यह किला 'मेहन्दी ख्वाजा' के पास था।
- बाबर का सेनापति - सुल्तान मिर्जा
- इस युद्ध में सांगा जीत गया तथा उसने बयाना पर कब्जा कर लिया।

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books 7300134518, 7610010054

* **खानवा का युद्ध-** (17 मार्च 1527 ई.) → (भरतपुर)

- कविराजा श्यामलदास (वीर विनोद) के अनुसार, 16 मार्च 1527 ई.
- सांगा v/s बाबर
- कारण-

(i) दोनों अपना साम्राज्य विस्तार करना चाहते थे।

(ii) सांगा ने बयाना किले पर अधिकार कर लिया था।

(iii) सांगा ने दिल्ली सल्लतनत के 200 गाँवों पर अधिकार कर लिया था।

(iv) सांगा व अफगान (महमूद लोदी) बाबर के खिलाफ गठबंधन बना रहे थे।

(v) बाबर ने सांगा पर वादा खिलाफी का आरोप लगाया।

- युद्ध से पहले बाबर ने जिहाद की घोषणा की।
- उसने मुस्लिम व्यापारियों का 'तमगा कर' समाप्त कर दिया।
- बाबर ने शराब न पीने की प्रतिज्ञा की थी।
- सांगा ने राजस्थान के लगभग सभी राजाओं को पत्र (पाती- परवन) लिखे तथा उन्हें खानवा के युद्ध में सहायता के लिए बुलाया।

1. आमेर → पृथ्वीराज
2. मारवाड़ → मालदेव (राजा गांगा)
3. बीकानेर → कल्याणमल (राजा जैतसी)
4. मेड़ता → वीरमदेव
5. ईडर → भारमल

THE NOTES HUB Notes are Available All Competition Books 7300134518, 7610010054

6. सिरोही → अखैराज देवड़ा

7. चन्देरी → मेदिनीराय

8. वागड़ → उदयसिंह

9. देवलिया → बाघसिंह

10. बिजौलिया → अशोक परमार

11. सादड़ी → झाला अज्जा

12. सलूम्बर → रतनसिंह चूंडावत

13. मेवात → हसन खाँ मेवाती ⎤ अफगान सेवा

14. इब्राहिम लोदी का भाई – महमूद लोदी ⎦

- युद्ध में बाबर की जीत हुई तथा जीतने के बाद उसने 'गाजी' की उपाधि धारण की।

- घायल होने के कारण सांगा को युद्ध भूमि से बाहर जाना पड़ा अतः झाला अज्जा ने युद्ध का नेतृत्व किया।

* सांगा की हार के कारण-

(i) सांगा की सेना में एकता की कमी थी तथा उसकी सेना अलग-अलग सेनापतियों के नेतृत्व में लड़ रही थी।

(ii) बाबर का तोपखाना।

(iii) बाबर की तुलगुमा युद्ध पद्धति।

(iv) बयाना के युद्ध के बाद सांगा ने बाबर को युद्ध की तैयारी का पर्याप्त समय दे दिया।

(v) घायल सांगा स्वयं युद्ध के मैदान से चला गया था। (80 घाव)

THE NOTES HUB * Notes are Available * All Competition Books * 7300134518, 7610010054

(vi) सांगा के कुछ साथियों ने उससे विश्वासघात किया था तथा बीच युद्ध में ही बाबर से मिल गये थे-

जैसे- रायसीन (MP) का सलहदी तँवर

नागौर के खानजादे मुस्लिम

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

(vii) बाबर की सेना ने घोड़ो का प्रयोग किया जबकि सांगा के सैनिकों ने हाथियों का प्रयोग किया।

(viii) बाबर की सेना ने सांगा की सेना की अपेक्षा हल्के हथियारों का प्रयोग किया था।

* खानवा के युद्ध का महत्व-

- सांगा की हार के बाद बाबर के लिए भारत में राज करना आसान हो गया था।
- खानवा अंतिम युद्ध था जिसमें राजस्थान के राजपूत राजाओं में एकता दिखाई दी।
- सांगा अंतिम राजा था जिसने दिल्ली को चुनौती देने का साहस किया था।
- सांगा के बाद बड़े राजा नहीं बने जिससे कला व संस्कृति को नुकसान हुआ।
- राजपूतों की सामरिक कमजोरियों उजागर हो गई।
- इस युद्ध ने मुगलों की राजपूतों के प्रति भविष्य की नीति का निर्धारण कर दिया था
  तथा कालान्तर में अकबर ने संघर्ष के स्थान पर सहयोग की नीति अपनाई थी।

• बसवा (दौसा) → यहाँ पर घायल सांगा का इलाज किया गया था।

- ईरिच (U.P) ➝ यहाँ पर सांगा को साथियों ने जहर दिया था।
- कालपी (U.P) ➝ सांगा की मृत्यु।
- माण्डलगढ़ (झालावाड़) ➝ छतरी बनी हुई है।

* उपाधियाँ-
  - हिन्दुपत
  - सैनिकों का भग्नावेश (80 घाव)

➝ बाबरनामा के अनुसार सांगा के दरबार में 7 राजा, 9 राव तथा 104 सरदार थे।

भोजराज- यह सांगा का पुत्र था।
➝ इसकी शादी मीराबाई से हुई।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

रत्नसिंह- यह भी सांगा का पुत्र था।
➝ सांगा की मृत्यु के पश्चात् राजा बना।

➝ यह बून्दी के सूरजमल के खिलाफ लड़ता हुआ मारा गया था।

विक्रमादित्य- (1531-1536 ई.)
- पिता - सांगा
- माता/ संरक्षिका - कर्मावती (बूंदी की राजकुमारी)

➝ 1533 ई. में गुजरात के बहादुरशाह ने मेवाड़ पर आक्रमण कर दिया।

➝ रानी कर्मावती ने रणथम्भौर किला देकर सन्धि की।

➝ 1534-35 ई. में बहादुरशाह ने मेवाड़ पर पुनः आक्रमण कर दिया।

➝ रानी कर्मावती ने मुगल बादशाह हुमायूँ को राखी भेजी तथा सहायता की माँग की।

* 1535 ई. में चित्तौड़ का दूसरा साका-

- जौहर (कर्मावती)
  ↓
  पुर ताम्रपत्र
  (दान की जानकारी)

- केसरिया (बाघसिंह देवलिया)
  ↓ छतरी → पाण्डूपोल (चित्तौड़गढ़ किले में)
  ↓ देवलिया दीवान

बनवीर-

- बनवीर को मेवाड़ का प्रशासक बनाया गया।
- उड़णा राजकुमार पृथ्वीराज की दासी का बेटा था।
- बनवीर ने विक्रमादित्य की हत्या कर दी, वह उदयसिंह को भी मारना चाहता था परन्तु पन्नाधाय ने अपने बेटे चन्दन का बलिदान देकर उसे बचा लिया।
- कुंभलगढ़ के आशादेवपुरा ने पन्नाधाय तथा उदयसिंह को शरण दी थी।

उदयसिंह - (1537-72 ई.)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- पिता- सांगा
- माता- कर्मावती

* मावली का युद्ध (1540 ई.)
  ↓
  उदयपुर

उदयसिंह v/s बनवीर

- इस युद्ध में उदयसिंह जीत गया था।
- बनवीर की चुनौती पूर्ण रूप से समाप्त हो गई थी।

- 1559 ई. में उदयपुर की स्थापना की गई थी।

- यहाँ पर 'उदयसागर झील' तथा 'मोती मगरी के महलों' का निर्माण करवाया था।

- 1567-68 ई० में अकबर ने मेवाड़ पर आक्रमण किया।

- उदयसिंह गिरवा (उदयपुर) की पहाड़ियों में चला गया तथा जयमल (वीरमदेव का पुत्र) एवं पत्ता ने चितौड़ किले का मोर्चा सम्भाला।

* 1568 ई० में चितौड़ का तीसरा साका-

जौहर → फूलकँवर

केसरिया → जयमल एवं पत्ता

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- यह जयमल की बहन एव पत्ता की रानी थी।

- घायल होने के कारण जयमल ने कल्ला राठौड़ के कन्धों पर बैठकर युद्ध किया। इसलिए कल्ला राठौड़ को 4 हाथों का देवता कहा जाता है।

- 25 Feb. 1568 ई० को अकबर ने चितौड़ पर अधिकार अधिकार कर लिया तथा चितौड़ में 30,000 लोगों का कत्लेआम करवाया।

- इस जीत के बाद अकबर ने एलची नामक सिक्का चलवाया था।

- अकबर ने जयमल एवं पत्ता की वीरता से प्रभावित होकर दोनों की मूर्तियाँ आगरा के किले में लगवाई।

- फ्रांसीसी यात्री बर्नियर ने इन मूर्तियों का वर्णन अपनी पुस्तक मे किया है- "Travels in the Mughal Empire"

- बीकानेर के जूनागढ़ किले मे 'सूरजपोल' पर 'जयमल' एवं 'पत्ता' की मूर्तियाँ है।

* **जयमल-**

- यह मेड़ता का राजा था।
- 1562 ई. में अकबर ने मेड़ता पर अधिकार कर लिया था।
- जयमल तथा कल्ला राठौड़ की छतरियाँ चित्तौड़ किले में 'हनुमान पोल' तथा 'भैरव पोल' के मध्य स्थित है।

* **पत्ता-**

- यह आमेट (राजसमन्द) का सामन्त था।
- चित्तौड़ किले में 'रामपोल' पर 'पत्ता की छतरी' बनी हुई है।

* **फूल कँवर-**

- यह जयमल की बहन तथा पत्ता की रानी थी।

* **संग्राम-** अकबर की बन्दूक का नाम।

* **28 Feb. 1572 ई०-** होली के दिन उदयसिंह की मृत्यु हो गई थी।
  ↓
  उदयसिंह की छतरी - गोगुन्दा (उदयपुर)

- उदयसिंह ने अपने बड़े बेटे प्रताप को राजा नहीं बनाया, जबकि छोटे बेटे जगमाल को राजा बनाया।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

महाराणा प्रताप (1572- 1597 ई.)- (25 वर्ष)

- जन्म- 9 मई 1540
- पिता - उदयसिंह
- माता - जयवन्ता बाई सोनगरा
  (अखेराज सोनगरा' की पुत्री)
- बचपन का नाम - कीका
- पत्नी - अजबदे पंवार (रामरख पंवार की पुत्री)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

➤ सलूम्बर के 'कृष्णदास चूण्डावत' ने गोगुन्दा में प्रताप का राजतिलक किया।

➤ कुम्भलगढ़ में 'राजतिलक समारोह' आयोजित किया गया था।

➤ मारवाड़ का चन्द्रसेन भी इस समारोह में उपस्थित था।

➤ प्रताप को समझाने के लिए अकबर ने 4 दूत भेजे थे- (शिष्टमण्डल)

(i) जलाल खाँ कोरची (1572 ई.)
(ii) मानसिंह
(iii) भगवन्त दास
(iv) टोडरमल ← अकबर का वित्तमंत्री

(ii)–(iv) — (1573 ई.)

हल्दीघाटी का युद्ध- (18 जून 1576 ई.)

↓ (राजसमन्द)

↳ गोपीनाथ शर्मा के अनुसार = 21 जून 1576

प्रताप v/s अकबर

प्रताप की ओर:
- ➤ कृष्णदास चूंडावत (सलूम्बर)
- ➤ रामशाह तोमर (ग्वालियर)
- ➤ हाकिम खाँ सूर (अफगान)
- ➤ राणा पुंजा (भील सेना)

अकबर की ओर:
- मानसिंह
  (प्रथम बार स्वतंत्र सेनापति
- आसफ खाँ

- हरावल भाग का नेतृत्व → हाकिम खाँ सूर
- मिहत्तर खाँ नामक सैनिक ने युद्ध में अकबर के आने की झूठी सूचना दी थी।
- चेतक के घायल होने के कारण प्रताप को युद्ध भूमि से बाहर जाना पड़ा।
- झाला बीदा (मान) ने युद्ध का नेतृत्व किया।
- मानसिंह प्रताप को अकबर की अधीनता स्वीकार करवाने में असफल रहा।
- अतः अकबर ने मानसिंह व आसफ खाँ का दरबार में आना बंद करवा दिया।
- 1576 ई. में अकबर स्वयं मेवाड़ पर आक्रमण कर देता है।
- अकबर ने उदयपुर पर अधिकार कर उसका नाम 'मुहम्मदाबाद' कर दिया।
- अकबर ने "जगन्नाथ कच्छवाहा" तथा 'फखरुद्दीन' को उदयपुर का प्रशासन सौंप दिया था, तथा स्वयं 'बागड़' की तरफ चला गया।
- मुगल सेनापति "शाहबाज खाँ" ने कुम्भलगढ़ पर तीन बार आक्रमण किया था – 1577, 1578, 1579 ई.।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

* <u>शेरपुर घटना</u> – (1580 ई.)

- अमरसिंह ने मुगल सेनापति अब्दुल रहीम की बेगमों को गिरफ्तार कर लिया था, लेकिन प्रताप ने उन्हें ससम्मान वापस पहुँचाया था।

* <u>दिवेर का युद्ध</u> – (1582 ई.), राजसमन्द

- ईडर, बांसवाड़ा तथा प्रतापगढ़ ने इस युद्ध में मेवाड़ की सहायता की।

- दशहरे के दिन प्रताप ने मुगल सेना को हराया।
- अमरसिंह ने मुगल सेनापति सुल्तान खाँ को मार दिया था।
- ★ 'कर्नल जेम्स टॉड' ने इस युद्ध को 'मेवाड़ का मैराथन' कहा है।
- 1585 ई॰ में जगन्नाथ कच्छवाहा ने मेवाड़ पर आक्रमण किया।
- यह प्रताप पर अकबर का अन्तिम आक्रमण था।
- प्रताप, आमेर रियासत पर आक्रमण कर देता है तथा मालपुरा (टोंक) पर अधिकार कर लेता है।

प्रताप की सांस्कृतिक उपलब्धियाँ –

मालपुरा
- झालरा तालाब
- नीलकण्ठ महादेव मन्दिर

- प्रताप ने चावण्ड (उदयपुर) को अपनी नई राजधानी बनवाया।
  → (12 साल तक राजधानी)
- चावण्ड में महल, मन्दिर, बावड़ी व चामुण्डा माता मंदिर का निर्माण करवाया।
- चावण्ड से मेवाड़ चित्रकला प्रारम्भ हुई।
- मुख्य चित्रकार- नासिरुद्दीन

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

★ दरबारी विद्वान-

1. चक्रपाणि मिश्र – • राज्याभिषेक (राजतिलक की जानकारी)
   • मुहूर्त माला
   • विश्व वल्लभ (बागवानी की जानकारी)

2. हेमरत्न सूरि – गौरा-बादल पद्मिनी चौपाई

3. सार्दुलनाथ त्रिवेदी - प्रताप ने इन्हें मंडेर नामक गाँव दान में दिया था।

↳ यह जानकारी 1588 ई. के उदयपुर अभिलेख से मिलती है।

4. माला सांदू

5. रामा सांदू

- 19 Jan. 1597 → चावण्ड में प्रताप की मृत्यु हो गई।
- प्रताप की छतरी - बांडोली (उदयपुर) → 8 खम्भों की छतरी।
- चित्तौड़गढ़ और माण्डलगढ़ को छोड़कर प्रताप ने अपने जीवनकाल में शेष मेवाड़ पर पुनः अधिकार कर लिया।

* भामाशाह व ताराचन्द-

- इन्होंने चूलिया नामक गाँव में प्रताप से मुलाकात की तथा प्रताप को आर्थिक सहायता की।
- (25 लाख नकद व 20 लाख का सोना)
- उस धन से प्रताप 25,000 की सेना 12 वर्षों तक रख सकता था।
- प्रताप ने भामाशाह को अपना प्रधानमंत्री बनाया।
- भामाशाह को '<u>मेवाड़ का उद्धारक</u>' कहा जाता है।
- आवरगढ़ (उदयपुर) - प्रताप की अस्थाई राजधानी
- मायरा की गुफा - प्रताप का शस्त्रागार
- बलीचा (राजसमन्द) - चेतक (घोड़ा) की छतरी

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

* हल्दीघाटी युद्ध का महत्व-

1. यह युद्ध साम्राज्यवादी शक्ति एवं क्षेत्रीय स्वतन्त्रता के बीच का संघर्ष था।

2. इस युद्ध ने मुगलों की अजेयता को तोड़ दिया था।

3. प्रताप ने कम संसाधनों के बावजूद अकबर का सामना किया, जिससे मेवाड़ की जनता में आशा व नैतिकता का संचार हुआ।

4. इस युद्ध ने मेवाड़ की जनता व जनजातियों में राष्ट्रवादी भावनाओं का संचार किया था।

	मुगल	मेवाड़
➤ सैनिक शिविर	मोलेला	लोसिंग
➤ बंदायूनी	5000 सैनिक	3000 सैनिक
➤ श्यामदास जी	80,000 सैनिक	20,000 सैनिक
➤ हाथी	• मरदाना • गजमुक्ता	• लूणा • रामप्रसाद (पीर प्रसाद)

इतिहासकार	हल्दीघाटी युद्ध के नाम
1. अबुल फजल	खमनौर का युद्ध
2. बंदायूनी	गोगुन्दा का युद्ध
3. आदर्शी लाल श्रीवास्तव	बादशाह बाग का युद्ध
4. जेम्स टॉड	मेवाड़ की थर्मोपोली

➤ बंदायूनी ने इस युद्ध में भाग लिया था।
↳ पुस्तक - "मुन्तखब-उत-तवारीख"

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

अमरसिंह -I (1597-1620 ई.)

- मुगल- मेवाड़ संधि - 5 Feb. 1615 ई.

जहाँगीर + अमरसिंह-I

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

शर्तें-

(i) मेवाड़ का राणा मुगल दरबार में नहीं जायेगा।

(ii) मेवाड़ का युवराज, मुगल दरबार में हाजिर होगा।

(iii) मेवाड़ मुगलों को 1000 घुड़सवार सैनिकों की सहायता देगा।

(iv) चितौड़ का किला मेवाड़ को वापस दिया जायेगा लेकिन मेवाड़ उसका पुनर्निर्माण नहीं करवा सकता।

(v) किसी भी प्रकार के वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित नहीं किये जायेंगे।

सन्धि का महत्व-

(i) सांगा तथा प्रताप के समय से चली आ रही स्वतन्त्रता की भावना को आघात पहुँचा।

(ii) युद्ध बन्द होने से मेवाड़ में शान्ति व्यवस्था सुनिश्चित हुई, जिससे कलात्मक गतिविधियों को बढ़ावा मिला।

(iii) अमरसिंह ने यह संधि युवराज कर्णसिंह के दबाव में की थी।

(iv) मेवाड़ की तरफ से हरिदास तथा शुभकरण संधि का प्रस्ताव लेकर गये थे।

(v) मुगलों की तरफ से खुर्रम (शाहजहाँ) ने सन्धि की थी।

* <u>सन्धि की जानकारी के स्त्रोत-</u>

(i) जहाँगीर के पुष्कर महल का अभिलेख - 1615 ई.

(ii) शाहजहाँनी मस्जिद अभिलेख (अजमेर) - 1637 ई.

(iii) 'सर टॉमस रॉ' के अनुसार, मुगल बादशाह ने मेवाड़ के राणा को बुद्धि से अधीन किया था बल से नहीं।

➤ युवराज कर्णसिंह मुगल बादशाह जहाँगीर के दरबार में गया था।

➤ जहाँगीर ने उसे 5000 का मनसबदार बनाया था।

➤ अमरसिंह इस सन्धि से बेहद निराश था तथा वह 'नौ चौकी' नामक स्थान पर जाकर रहने लगा।

➤ कालान्तर में यहाँ 'राजसमन्द झील' का निर्माण करवाया गया।

➤ जहाँगीर ने अमरसिंह व कर्णसिंह की मूर्तियाँ आगरा के किले में लगवाई थी।

कर्णसिंह -(1620-28 ई.)

➤ उदयपुर में 'कर्णविलास' तथा 'दिलखुश' महल का निर्माण करवाया।

➤ जगमन्दिर का निर्माण शुरू करवाया था। (पिछोला झील में।)

➤ विद्रोह के दौरान खुर्रम जगमन्दिर महल में रुका था।

जगतसिंह-I (1628-52 ई.)

➤ जगमन्दिर महल का निर्माण करवाया था।

➤ उदयपुर में जगदीश मन्दिर (जगन्नाथ राय) का निर्माण करवाया।

↳ इसे 'सपने में बना मन्दिर' कहते है।

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

↳ यह मन्दिर पंचायतन शैली में बना हुआ है।

↳ वास्तुकार - अर्जुन, भाणा, मुकुन्द।

- "जगन्नाथ राय प्रशस्ति" के लेखक - कृष्ण भट्ट
  - ↳ जगदीश मन्दिर में लगी है, इस प्रशस्ति से 'हल्दीघाटी युद्ध' की जानकारी मिलती है।
- उदयपुर में नौजूबाई ने विष्णु का मन्दिर बनवाया।
  - ↳ जगतसिंह की धाय माँ थी।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- जगतसिंह दानवीरता के लिए प्रसिद्ध था।

राजसिंह (1652-80 ई.)

- इसने शाहजहाँ के खिलाफ आक्रामक नीति अपनाई तथा चित्तौड़ किले का पुनर्निर्माण करवाया।
- शाहजहाँ के सेनापति 'सादुल्ला खाँ' ने इस पुनर्निर्माण को रुकवाया।
- मुगल उत्तराधिकार संघर्ष में इसने औरंगजेब का साथ दिया।
- इस समय राजसिंह ने टीका दौड़ का आयोजन करवाया तथा कई मुगल क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया था।
- औरंगजेब के '<u>जजिया कर</u>' का विरोध किया था।
- औरंगजेब के खिलाफ मारवाड़ के अजीतसिंह का समर्थन किया। इसे 'राठौड़ - सिसोदिया गठबन्धन' भी कहते है।
- औरंगजेब के खिलाफ हिन्दू देवी-देवताओं की मूर्तियों की रक्षा की थी।
- औरंगजेब के खिलाफ हिन्दू राजकुमारियों की रक्षा की थी, जैसे-
  रूपनगढ़ (किशनगढ़) की राजकुमारी चारुमति।

* **उपाधियाँ-**
1. विजयकटकातु → 'सेनाओं को जीतने वाला'
2. हाइड्रोलिक रूलर

* **राज प्रशस्ति-**

- यह नौ चौकी नामक स्थान पर राजसमन्द झील के पास स्थित है।
- यह २५ पत्थरों पर संस्कृत भाषा में लिखा गया सबसे बड़ा अभिलेख है।
- इसमें बप्पा रावल से राजसिंह तक के मेवाड़ राजाओं की जानकारियाँ मिलती है।
- इसमें 'मुगल-मेवाड़ सन्धि', हल्दीघाटी युद्ध व प्रताप के भाई शक्ति सिंह की जानकारी मिलती हैं।
- इस प्रशस्ति से 'पृथ्वीराज रासो' तथा 'गुरूकुल प्रणाली' की जानकारी मिलती है।
- इस प्रशस्ति में अकाल राहत कार्यों की जानकारी मिलती है।
("राजसमन्द झील का निर्माण") (1662-76 ई.)

* **अमरकाव्य वंशावली-**

- यह पुस्तक अमरसिंह-II से संबंधित है।
- इसमें शक्तिसिंह व उसके घोड़े चेतक की जानकारी मिलती है।
  → प्रताप के छोटे भाई।

* **दरबारी विद्वान-**
1. किशोरदास (राजप्रकाश)
2. सदाशिव भट्ट (राज रत्नाकर)
3. कवि मान (राज विलास)

THE NOTES HUB * Notes are Available * All Competition Books * 7300134518, 7610010054

4) गिरधर आसियां (सगतसिंह रासौ)
↳ प्रताप के छोटे भाई शक्तिसिंह की जानकारी मिलती है।
5) कल्याणदास (गुण गोविन्द)

रणछोड़ भट्ट तैलंग - राजप्रशस्ति, अमरकाव्य वंशावली

* सहलकंवर -

- सलूम्बर के सामन्त रत्नसिंह चूण्डावत की हाड़ी रानी थी।
- अपने पति के द्वारा निशानी मांगने पर अपना सिर काटकर दे दिया था।
  ↳ मेघराज मुकुल की कविता - 'सैनाणी'

राजसिंह की सांस्कृतिक उपलब्धियाँ -

* मन्दिर -

1. श्री नाथ जी मन्दिर, राजसमन्द (सिहाड़, नाथद्वारा) (नाथद्वारा का पुराना नाम)
2. द्वारिकाधीश मन्दिर, कांकरोली (राजसमन्द)
3. अम्बा माता मन्दिर (देबारी, उदयपुर)

THE NOTES HUB * Notes are Available * All Competition Books * 7300134518, 7610010054

1672 ई. में गोविन्द दास व दामोदर दास, श्री नाथ जी की मूर्ति मथुरा से लाये थे।

* जल स्रोत -

1. त्रिमुखी बावड़ी / जया बावड़ी, उदयपुर
   (राजसिंह की रानी रामरस दे द्वारा निर्मित)
2. जानासागर तालाब, उदयपुर (बड़ी)
   (राजसिंह की माता जाना दे द्वारा निर्मित)
3. राजसमन्द झील

जयसिंह (1680-98 ई.)-

- 1681 ई. में इसने औरंगजेब से सन्धि की तथा 'राठौड़-सिसोदिया गठबन्धन' से अलग हो गया।
- जजिया कर के बदले में पुर, मांडल व बदनौर औरंगजेब को दिये।
- उदयपुर में जयसमन्द झील का निर्माण करवाया, इसके पास नर्मदेश्वर मन्दिर बना है।
  - इस झील में 'बाबा का मगरा' तथा पाइरी नामक कई टापू स्थित है।
- इसके पास अपनी परमार रानी कोमला देवी के लिए महलों का निर्माण करवाया।
- इन्हें रुठी रानी का महल भी कहा जाता है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

अमरसिंह-II (1698-1710 ई.)

- इस समय मेवाड़ में 'अमरशाही पगड़ियाँ' लोकप्रिय हुई थी।
  - (अटपटी पगड़ियाँ)

* देबारी समझौता (1708 ई.)-(उदयपुर)

- अमरसिंह-II (मेवाड़) + सवाई जयसिंह (आमेर) + अजीत सिंह (जोधपुर)
  V/S
- यह समझौता मुगल बादशाह बहादुर शाह-I के खिलाफ हुआ था।

समझौते की शर्तें-

- सवाई जयसिंह व अजीतसिंह को उनके राज्य दिलाने में सहायता की जायेगी।

- अमरसिंह -II की पुत्री चन्द्रकंवर की शादी सवाई जयसिंह से गई तथा यह निश्चित किया गया कि चन्द्रकंवर का बेटा आमेर का अगला राजा बनेगा।

संग्राम सिंह -II (1710-34 ई.)

* बांदनवाड़ा का युद्ध- 1711 ई.

- कारण- पुर, माण्डल तथा बदनौर के परगने।
- इस युद्ध में मुगल सेनापति रणबाज खाँ को हरा दिया था।
- इस युद्ध की जानकारी 'वैद्यनाथ प्रशस्ति' से मिलती है।
  - बांदनवाड़ा युद्ध की जानकारी ← → लेखक - रूप भट्ट
- सीसारमा (उदयपुर) में वैद्यनाथ मन्दिर का निर्माण करवाया।
- उदयपुर में 'सहेलियों की बाड़ी' का निर्माण करवाया।
- मराठों ने मेवाड़ से चौथ (Tax) वसूलना प्रारम्भ किया।

जगतसिंह -II -(1734-51 ई.)

- हुरड़ा सम्मेलन (भीलवाड़ा) - 17 July 1734 ई. → (सवाई जयसिंह द्वारा)
- यह राजपूत राजाओं का मराठों के साथ एक सम्मेलन था।
  - मेवाड़ → जगतसिंह -II (अध्यक्ष)
  - मारवाड़ → अभयसिंह
  - नागौर → बख्तसिंह
  - बीकानेर → जोरावर सिंह
  - आमेर → सवाई जयसिंह
  - बून्दी → दलेल सिंह

THE NOTES HUB * Notes are Available * All Competition Books 7300134518, 7610010054

- किशनगढ़ → राजसिंह
- करौली → गोपाल पाल

सम्मेलन का निर्णय-

- सभी राजा मराठों के खिलाफ एकदूसरे की सहायता करेंगे।
- वर्षा ऋतु समाप्त होने के बाद रामपुरा (मालवा) के मराठों के खिलाफ युद्ध किया जायेगा।

सम्मेलन का परिणाम-

- राजाओं के आपसी मतभेदों के कारण हुआ सम्मेलन असफल रहा।
- खानवा युद्ध में किसी दूसरी शक्ति के खिलाफ एकता दिखाई दी।

उदयपुर में 'जगतनिवास महल' का निर्माण करवाया। (पिछोला झील के पास)

दरबारी विद्वान-
1. नन्दराम → जगत निवास, सेवार भाव
2. देवकर्ण → 'वाराणसी विलास'
   ↳ जगतसिंह-II का दीवान था।

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

भीमसिंह (1778-1828 ई.)

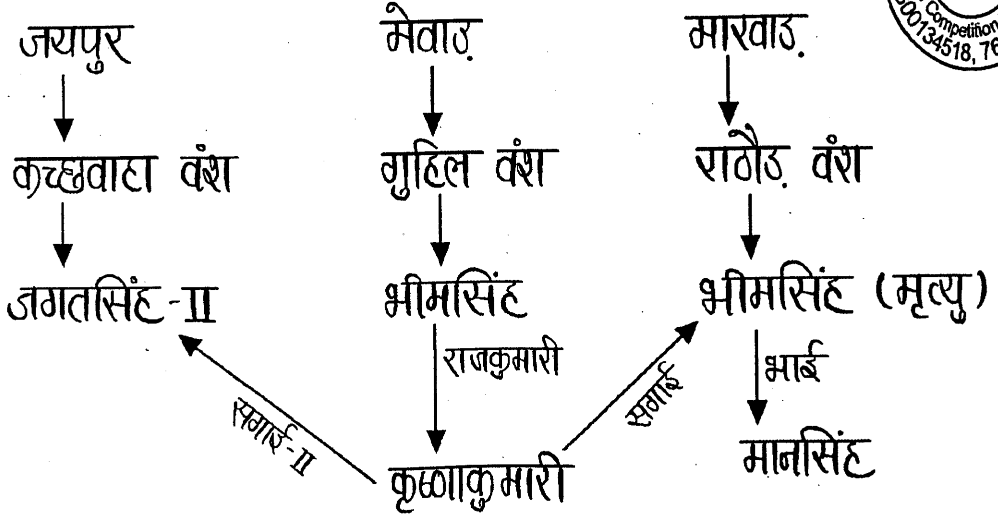

गिंगोली / परबतसर का युद्ध- नागौर (1807 ई.)

जगतसिंह-II v/s मानसिंह
(जयपुर) (मारवाड़)

- 1810 ई. में अमीर खाँ पिण्डारी तथा अजीतसिंह चुण्डावत के कहने पर कृष्णा कुमारी को जहर दे दिया था।
- 13 जनवरी, 1818 ई. को भीमसिंह अंग्रेजों के साथ सन्धि कर लेता है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

डूँगरपुर का इतिहास

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- डूँगरपुर में गुहिल वंश का शासन था।

सामन्त सिंह-

- यह मेवाड़ का गुहिल शासक था।
- 1179 ई. में यह कीर्तिपाल सोनगरा से हारकर वागड़ चला गया।
- उसने परमारों को हराकर वागड़ में गुहिल राज्य की स्थापना की।
- उसने बड़ौदा (डूँगरपुर) को अपनी राजधानी बनाया।

(उसके छोटे भाई कुमारसिंह ने कीर्तिपाल सोनगरा को हराकर मेवाड़ पर अधिकार कर लिया)

- तराइन के दूसरे युद्ध में सामन्तसिंह पृथ्वीराज चौहान की तरफ से लड़ता हुआ मारा गया।

डूँगरसिंह- उसने डूँगरपुर को वागड़ की राजधानी बनाया।

गोपीनाथ- डूँगरपुर मे गेपसागर तालाब का निर्माण करवाया।

उदयसिंह-

यह खानवा के युद्ध में लड़ता हुआ मारा गया।

- उसकी मृत्यु के बाद वागड़ राज्य दो भागों में विभाजित हो गया।

माही नदी

(पूर्वी) बाँसवाड़ा → जगमाल | डूँगरपुर → पृथ्वीराज (पश्चिमी)

आसकरण-

- इसने मारवाड़ के चन्द्रसेन को अकबर के खिलाफ शरण दी थी।
- 1577 ई. में अकबर ने डूँगरपुर पर आक्रमण किया तथा इसने अकबर से सन्धि कर ली।
- यह मुगलों की तरफ से किसी भी युद्ध में लड़ने के लिए नहीं गया।

जसवन्तसिंह-II→

- 1818 ई. में यह अंग्रेजों के साथ सन्धि कर लेता है।
- 1845 ई. में अंग्रेजों ने इसे हरा दिया था अतः यह वृन्दावन चला गया था।

विजयसिंह-

- इसने डूँगरपुर में राम-लक्ष्मण बैंक की स्थापना की।
- डूँगरपुर में एडवर्ड सागर तालाब का निर्माण करवाया।
- इसने विधवा विवाह को प्रोत्साहन दिया।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

लक्ष्मणसिंह-

- यह आजादी के समय डूँगरपुर के राजा थे।
- उन्हें राजस्थान का कनिष्ठ उपराजप्रमुख बनाया गया था।
- 1977 ई. में इन्हें राजस्थान विधानसभा का अध्यक्ष भी बनाया गया था।

बाँसवाड़ा का इतिहास

- बाँसवाड़ा में गुहिल वंश का शासन था।

जगमाल-

- इसने अपने पिता उदयसिंह के साथ ख़ानवा के युद्ध में भाग लिया था।
- इसने बाँसवाड़ा में स्वतंत्र गुहिल राज्य की स्थापना की थी।

प्रतापसिंह-

- यह महाराणा प्रताप के समकालीन था।
- 1576 ई० में अकबर ने बाँसवाड़ा पर आक्रमण कर दिया, अतः इसने अकबर के साथ सन्धि कर ली।

उम्मेदसिंह-

- 1818 ई. में अंग्रेजों के साथ सन्धि कर लेता है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

प्रतापगढ़ का इतिहास

→ गुहिल वंश का शासन था।

1. क्षेमकर्ण-

- यह कुम्भा का छोटा भाई था।
- कुम्भा ने इसे सादड़ी (चितौड़) की जागीर दी।
- इसने कुम्भा के खिलाफ विद्रोह कर दिया तथा मालवा चला गया था।

२. सूरजमल- मालवा की सहायता से देवलिया (प्रतापगढ़) का शासक बना।

3. बाघसिंह-

- इसने खानवा के युद्ध में भाग लिया था।
- चितौड़ के दूसरे साके में इसने केसरिया का नेतृत्व किया था। अतः इसे देवलिया दीवान भी कहते है।
- छतरी - पांडुपोल

4. सामन्त सिंह- 1818 ई. में इसने अंग्रेजों से संधि कर ली थी।

5. उदयसिंह- इसने प्रतापगढ़ को राजधानी बनाया था।

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books 7300134518, 7610010054

शाहपुरा का इतिहास

→ शाहपुरा में गुहिल वंश का शासन था।

सुजानसिंह-

- मेवाड़ महाराणा जगतसिंह-I ने इसे फुलिया परगना (शाहपुरा) दिया था।
- 1631 ई. में मुगल बादशाह शाहजहाँ ने इसे स्वतंत्र राजा घोषित कर दिया था।
- इसे शाहपुरा को अपनी राजधानी बनाया।
- यह राजस्थान की सबसे छोटी रियासत थी। (क्षे० की दृष्टि से)

मध्यकालीन राजस्थान की प्रशासनिक एवं राजस्व व्यवस्था

- हमारी मध्यकालीन प्रशासनिक व्यवस्था को सामंती व्यवस्था कहा जाता है।
- इस व्यवस्था में बड़ा भाई राजा होता था तथा वह अन्य भाईयों को भूमि का आवंटन करता था, इस भूमि को जागीर / ठिकाना कहा जाता था, तथा इन भाइयों को सामन्त कहा जाता था।
- इस प्रकार यह व्यवस्था रक्त संबंधों पर आधारित थी।
- प्रशासन संभालने तथा जीवन निर्वाह के लिए राजा द्वारा भाइयों को भूमि दी जाती थी।
- सामन्तों के द्वारा निम्नलिखित कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जाती थी-
  - कर प्राप्त करना
  - सैनिक सहायता
  - न्याय प्रशासन
  - उत्तराधिकारी का चयन

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- जेम्स टॉड के अनुसार यूरोपीय सामन्ती व्यवस्था में राजा स्वामी की तरह होता था तथा सामन्त उसके सेवक होते थे, लेकिन हमारी सामन्ती व्यवस्था, सम्मान एवं कर्तव्यों पर आधारित थी।
- अतः इसमें सामन्त सहयोगी थे।
- हमारी सामन्ती व्यवस्था टेन्ट के समान थी जिसमें राजा मध्य का स्तम्भ होता था।
- मुगलकाल में मनसबदारी व्यवस्था के कारण हमारी सामंती व्यवस्था में परिवर्तन हुआ-

जैसे- (i) श्रेणी व्यवस्था

(ii) राजा के सामन्तों पर सैनिक निर्भरता समाप्त।

(iii) सामन्त उत्तराधिकारी का चयन करते थे।

(iv) राजा ने सामन्तों पर नये कर लगाए, जैसे- उत्तराधिकार शुल्क

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

(v) सामंतों की सहयोगी की भूमिका।

- इन परिवर्तनों के बावजूद हमारी सामन्ती व्यवस्था का मूल ढाँचा टेन्ट के समान बना रहा था।
- हमारी सामन्ती व्यवस्था बन्धुत्वों पर आधारित थी।

सामन्तों द्वारा राजा को दिये जाने वाले कर / राजस्व-

1. <u>रेख-</u>

- सामन्तों द्वारा राजा को भू- राजस्व जमा करवाया जाता था।
- रेख दो प्रकार की होती थी-

(i) <u>पट्टा रेख-</u> यह अनुमानित भू- राजस्व था जो जागीर के पट्टे में दर्ज किया जाता था।

(ii) <u>भरतु रेख-</u> यह वास्तविक भू- राजस्व था, जो सामन्त द्वारा राजा को जमा करवाया जाता था।

- महाराणा अमरसिंह-II ने मेवाड़ में रेख व्यवस्था का निर्धारण किया था अतः इसे अमरशाही रेख कहा जाता था।

मेवाड़ → तलवार बंधाई / नजराणा / कैद खालसा (अन्य नाम)

मारवाड़ → हुक्मनामा / पेशकशी

अपवाद- जैसलमेर में सामन्त राजा को उत्तराधिकार शुल्क जमा नहीं करवाते थे।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

सामन्तों के विशेषाधिकार-

(i) ताजीम-

- जब सामन्त दरबार में आता था तो राजा खड़े होकर उसका स्वागत करता था।
- यह दो प्रकार की होती थी-

(A) इकेवड़ी ताजीम – केवल आने पर
(B) दोवड़ी ताजीम – आने व जाने पर

(ii) बाँह पसाव- सामन्त अपनी तलवार को राजा के घुटनों को स्पर्श करता था तथा राजा उसके कंधे थपथपाता था।

(iii) हाथ कुरब- सामन्त अपनी तलवार को राजा के घुटनों को स्पर्श करता था तथा राजा उसके कंधे थपथपाता था तथा अपने हाथ को अपने हृदय के लगाता था।

जागीर के प्रकार-

(i) सामन्त जागीर- राजा अपने भाईयों को यह जागीर देता था। यह वंशानुगत होती थी।

(ii) हुकुमत जागीर- राजा प्रशासनिक अधिकारियों को यह जागीर देता था। यह वंशानुगत होती थी।

(iii) भौम जागीर- राजा शहीदों को यह जागीरें देता था। ये वंशानुगत व अवंशानुगत दोनों प्रकार की थी।

(iv) सासण जागीर- राजा द्वारा मन्दिर, मस्जिद, दरगाह इत्यादी को ये जागीर दी जाती थी। ये 'कर' मुक्त जागीर होती थी, अतः इसे 'माफी जागीर' भी कहते थे।

सामन्तों की श्रेणियाँ-

(i) मेवाड़- यहाँ सामन्तों की तीन श्रेणियाँ थी।

(ii) मारवाड़- यहाँ सामन्तों की 4 श्रेणिया थी।

(A.) राजवी- ये राजा के निकट तीन पीढ़ी के सामन्त होते थे, इन्हें रेख, हुक्मनामा तथा चाकरी नहीं देनी पड़ती थी।

(B) सिरदार- राजा के निकट तीन पीढ़ी के अलावा अन्य राठौड़ सामन्त, सिरदार सामन्त कहलाते थे।

(C) गिनायत- वे सामन्त जिनसे राजा वैवाहिक संबंध करता था।

(d) मुत्सद्दी- प्रशासनिक अधिकारी

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

3. बीकानेर- यहाँ सामन्तों की तीन श्रेणियाँ थी

(A.) बीका के वंशज

(B.) बीका के वंशजो के अलावा अन्य राठौड़ सामन्त

(C.) बीका से पहले के बीकानेर क्षेत्र के सामन्त

4. जैसलमेर- हरराज ने सामन्तों की दो श्रेणियाँ बनाई थी।

(A.) डावी- राजा के Left के सामन्त → कम शक्तिशाली

(B) जीवणी- राजा के Right के सामन्त → शक्तिशाली

5. कोटा-

यहाँ 30 मुख्य सामन्त थे।

- इनमें हाड़ा चौहानों की संख्या थी।
- इनको दो श्रेणियों में बांटा गया था
  - 'देशथी - कोटा के अन्दर
  - हजुरथी - कोटा के बाहर

6. आमेर-

पृथ्वीराज ने 12 मुख्य सामन्त बनाये थे, जिसे "बारहकोटड़ी व्यवस्था" कहा जाता था।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

राज्य के प्रशासनिक अधिकारी-

1. राजा-

- राज्य का सर्वोच्च अधिकारी।
- यह प्रशासनिक, न्यायिक, तथा सैनिक शक्तियों का मुख्य केन्द्र होता था।
  लेकिन राजा निरकुंश नहीं होता था।
- राजा मंत्रियों, पुरोहित तथा युवराज की सहायता से प्रशासन संभालता था।
  वह समकक्षों में प्रथम होता था।
- राज्य, राजा की व्यक्तिगत सम्पति नहीं थी बल्कि सभी भाईयों की सामूहिक धरोहर था।
- यदि राजा कम उम्र में बनता है, तो उसकी माता शासन संभालती थी।

- राजा पर नीतिगत दबाव तथा धर्मशास्त्रों का नियंत्रण होता था।

2. <u>प्रधान-</u>

- यह राजा को सैनिक तथा प्रशासनिक मामलों में सलाह प्रदान करता था।
- अलग-अलग रियासतों में इसे अलग-अलग नाम से पुकारा जाता था।

जैसे-
(i) कोटा/ बूँदी → दीवान / फौजदार
(ii) बीकानेर / भरतपुर → मुख्त्यार
(iii) जयपुर → मुसाहिब
(iv) मेवाड़ / मारवाड़ / जैसलमेर → प्रधान

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

3. <u>दीवान-</u>

- यह राजा को वित्त एवं राजस्व मामलों में सलाह देता था।
- राजा की अनुपस्थिति में दीवान राज्य को संभालता था अतः उसे देश दीवान कहा जाता था।
- यह परगनों में हाकीम की नियुक्ति करता था।

4. <u>बक्षी-</u> यह सेना की भर्ती, प्रशिक्षण, तथा अनुशासन के मामले देखता था।

5. <u>नायब बक्षी-</u>

- किले तथा सेना पर होने वाले खर्च का ध्यान रखता था।
- यह रेख का भी ध्यान रखता था।

MAHECHA PUBLICATION

(6.) शिकदार- यह नगर का प्रशासनिक अधिकारी होता था।

- यह गैर-सैनिक खर्च का प्रबन्धन करता था।
- मुगल प्रशासन में इसे कोतवाल कहा जाता था।

(7.) खानसामा- यह राजकीय महल की आवश्यकता की पूर्ति करता था एवं राजकीय 'उद्योगों का प्रबन्धन करता था।

- बेहद ईमानदार व्यक्ति की नियुक्ति इस पद पर की जाती थी।
- कालान्तर में इसे दीवान बनाया जाता था।

(8.) मीर मुंशी- यह राजा की तरफ से पत्र व्यवहार करता था।

(9) नैमेतिक- राजा का ज्योतिषि

(10) वकील- यह राजधानी में सामंत का प्रतिनिधी होता था।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

न्यायिक प्रशासन-

राजा सबसे बड़ा न्यायिक अधिकारी होता था लेकिन वह बड़े अपराध तथा मृत्युदण्ड के मामले देखता था।

- खालसा में हाकीम न्याय अधिकारी होता था।
- जागीर में सामन्त द्वारा न्याय का कार्य किया जाता था।
- छोटे मामले, ग्राम पंचायत तथा जातीय पंचायत द्वारा सुलझा दिये जाते थे।
- धर्म शास्त्रों के आधार पर न्याय किया जाता था।
- सामाजिक एवं धार्मिक स्थिति के आधार पर दण्ड/न्याय दिया जाता था।

- अपराध व्यक्ति के खिलाफ माना जाता था, राज्य के खिलाफ नहीं।
- मुकदमों तथा गवाही का लिखित रिकॉर्ड नहीं रखा जाता था।
- दण्ड अत्यधिक सरल थे, न्याय शीघ्र तथा सस्ता था।
- कई सामन्तों के पास शरण देने का अधिकार प्राप्त था, अतः कई बार बड़े अपराधी बच जाया करते थे।

भू- राजस्व प्रशासन-

भूमी दो प्रकार की होती थी-

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

A. कृषि भूमि

B. चरणोता भूमि- • इसे गोचर भी कहते थे।
• यह सार्वजनिक भूमि होती थी। इस पर सभी लोगों का सामूहिक अधिकार होता था।
• राजा इसे खालसा घोषित नहीं कर सकता था।

- कृषि भूमि दो प्रकार की होती थी-

(i) उन्नाव / पीवल- वह भूमि जिसमें कृत्रिम संसाधनों से सिंचाई की जाती है।

(ii) बारानी- वह भूमि जो वर्षा पर आधारित थी।

भू- स्वामित्व

सैद्धान्तिक → राजा

वास्तविक → किसान

MAHECHA PUBLICATION

भू- राजस्व

भोग / भोज / लगान / हासिल

- अनाज → भोग
- नकद → हिरण्य

किसान

1. बापीदार

- इनके पास खुद की भूमि होती है।
- इन्हें भूमि का पट्टा दिया जाता था जिसे दाखिला कहा जाता था।
- किसान इस भूमि में कुआँ खुदवा सकता था तथा लकड़ियाँ प्राप्त कर सकता था।
- अकाल की स्थिति में यदि किसान बाहर चला जाता था तो भी राजा उसकी भूमि को खालसा नहीं कर सकता था।

2. गैर-बापीदार

इनके पास खुद की भूमि नहीं होती थी।

ये दूसरों की भूमि पर खेती करते थे।

अन्य नाम - • शिकमी
• खेतिहर

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

1857 ई. की क्रान्ति

- 1803 ई. में भरतपुर तथा अलवर रियासतों ने अंग्रेजों से पहली बार सन्धियाँ की थी। उस समय 'लॉर्ड वेलेजली' अंग्रेजों का गवर्नर जनरल था।
- 1817-18 ई. में राजस्थान की अन्य रियासतें के साथ संधिया कर लेती है। उस समय गवर्नर जनरल = 'लॉर्ड हैस्टिंग्स' था।
- इन संधियों के दौरान अंग्रेजों का प्रतिनिधि 'चार्ल्स मैटकॉफ' था।
- दक्षिण राजस्थान की रियासतों से संधियों के दौरान 'जॉन मैलकम' अंग्रेजों का प्रतिनिधि था।

1803 ई. < भरतपुर, अलवर] — सहायक सन्धि

आर्थिक पार्थक्य
- 1817 ई. < करौली, कोटा
- 1818 ई. — All Rajasthan
- 1823 ई. — सिरोही (अन्तिम)

– दक्षिण राजस्थान की रियासतें- डूंगरपुर, बाँसवाड़ा, प्रतापगढ़

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

- प्रत्येक रियासत में एक अंग्रेज अधिकारी की नियुक्ति की जाती थी, जिसे पॉलिटिकल एजेन्ट (P.A) / रेजीडेंट कहा जाता था।

* डेविड ऑक्टरलोनी
- → यह राजपुताने का पहला रेजीडेंट था।
- → इसका मुख्यालय दिल्ली था
- ↓ उपाधि - नसीर (Protector)

- 'अब्राहम लॉकेट' राजस्थान का पहला AGG था। → (H.Q - अजमेर)

- 1845 ई० में A.G.G का मुख्यालय आबू (सिरोही) बनाया गया था।

- 1864 ई० अजमेर तथा आबू दोनों जगह AGG के लिए व्यवस्था की गई। (6 महीने = अजमेर, 6 महीने - मा० आबू)

- 1857 ई. की क्रान्ति के समय 'जॉर्ज पैट्रिक लॉरेन्स' राजस्थान का AGG था।

- क्रान्ति के दौरान राजस्थान में अंग्रेजों की छः सैनिक छावनियाँ थी।

1. नसीराबाद (अजमेर) → सबसे शक्तिशाली छावनी
2. नीमच (वर्तमान M.P)
3. देवली (टोंक) → कोटा कन्टिनजेंट
4. एरिनपुरा (पाली) → जोधपुर लीजियन
5. ब्यावर (अजमेर) → मेर रेजीमेन्ट
6. खैरवाड़ा (उदयपुर) → M.B.C

(5, 6) → क्रान्ति में शामिल नहीं हुई

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- ब्यावर तथा खैरवाड़ा छावनियों के सैनिकों ने क्रान्ति में भाग नहीं लिया।

1. नसीराबाद-

28 मई को 15 वीं बंगाल Native Infantry के सैनिको ने राजस्थान में क्रान्ति की शुरुआत की।
इसमें दो अंग्रेज अधिकारियों को मार दिया गया -

(i) कर्नल न्यूबरी
(ii) कैप्टन स्पोर्टिसवुड

- कर्नल पेन्नि की हृदयाघात से मृत्यु हो गई।
- दो अंग्रेज अधिकारी घायल हो गये → 1. लेफ्टिनेंट लॉक, 2. कैप्टन हार्डी

- 30 वीं B.N.I के सैनिक भी क्रान्ति में शामिल हो गये। सभी विद्रोही दिल्ली चले गये। (30 मई)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

2. नीमच- (M.P)

- 2 जून को मोहम्मद अली बेग नामक सैनिक ने कर्नल एबोट के सामने अंग्रेजों के प्रति वफादारी की प्रतिज्ञा करने से मना कर दिया।
- 3 जून को 'हीरा सिंह' के नेतृत्व में क्रान्ति प्रारम्भ हो गई।
- शाहपुरा (भीलवाड़ा) के 'राजा लक्ष्मण सिंह' ने विद्रोहियों का साथ दिया।
- इन्होंने एबोट के बच्चे एवं पत्नी को मार दिया था।
- देवली (टोंक) छावनी की महीदपुर बटालियन भी विद्रोहियों के साथ जुड़े तथा सभी विद्रोही दिल्ली की ओर चले गये।
- 40 अंग्रेज नीमच छावनी से भाग गये थे। 'रूघाराम' नामक किसान ने इन्हें डूंगला (चित्तौड़गढ़) नामक गांव में शरण दी।
- मेवाड़ के पॉलिटिकल एजेन्ट (P.A) शॉवर्स ने इन्हें बचाया तथा उदयपुर लेकर गया। मेवाड़ महाराणा स्वरुपसिंह ने इन्हें जगमन्दिर महल में रखा।

महाराणा स्वरूपसिंह ने मेवाड़ में स्वरूपशाही सिक्के चलाये जिन पर दोस्ती लन्दन लिखवाया था।

3. एरिनपुरा-

- 21 अगस्त को पूर्बिया सैनिकों ने आबू में क्रान्ति कर दी तथा इन्होंने अंग्रेज अधिकारी हॉल के घर पर हमला किया।
- विद्रोही एरिनपुरा आये तथा बाकी साथियों को लेकर दिल्ली की तरफ जाने का प्रयास किया। खैरवा (पाली) नामक स्थान पर विद्रोहियों की मुलाकात 'आउवा' के सामन्त 'कुशालसिंह चम्पावत' से हुई, तथा इन्होंने सैनिकों को अपना नेतृत्व प्रदान किया।

बिठौड़ा (पाली) का युद्ध- (8 Sep. 1857 ई.)

- कैप्टन हीथकोट + कुशलराज सिंघवी v/s कुशाल सिंह चम्पावत
  (जोधपुर राजा तख्त सिंह की तरफ से)
- इस युद्ध में जोधपुर का 'ओनाड़ सिंह पंवार' लड़ता हुआ मारा गया।
- इस युद्ध मे कुशाल सिंह चम्पावत जीत गया।

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

चेलावास (पाली) का युद्ध- (18 Sep. 1857 ई.)

जॉर्ज पैट्रिक लॉरेंस + मैकमेसन v/s कुशालसिंह चम्पावत
(A.G.G) (जोधपुर P.A)

- इस युद्ध को 'काले-गोरे का युद्ध' भी कहा जाता है।
- इस युद्ध में भी कुशालसिंह की जीत हुई तथा मैकमेसन को को मार दिया गया।
- मैसन का सिर काटकर आहुवा किले पर लटकाया था।

आउवा का युद्ध (20 जनवरी 1858 ई.)

- कर्नल होम्स + हंसराज जोशी (जोधपुर) v/s कुशालसिंह चम्पावत
- कुशालसिंह सहायता प्राप्त करने के लिए मेवाड़ चला गया। पृथ्वीसिंह लाम्बिया ने युद्ध का नेतृत्व किया।
- इस युद्ध में अंग्रेजों की जीत हुई। 24 जनवरी को अंग्रेजों ने आउवा पर अधिकार कर लिया तथा सुगाली माता की मूर्ति को उठाकर ले गये।

*** सुगाली माता-**

- यह एक काले संगमरमर की मूर्ति है जिसमें सुगाली माता के 10 सिर व 54 हाथ हैं।
- अंग्रेजों ने इस मूर्ति को अजमेर के राजपूताना म्यूजियम में रखा था लेकिन बाद में इसे पाली के बांगड़ म्यूजियम में भेज दिया था। वर्तमान में ये मूर्ति यहीं है।

- मेवाड़ में सलूम्बर (उदयपुर) के केसरीसिंह तथा कोठारिया (राजसमन्द) के जोधसिंह ने कुशालसिंह को शरण दी।
- 8 Aug. 1860 ई. को कुशालसिंह ने नीमच में आत्मसमर्पण कर दिया।
- कुशालसिंह की जाँच के लिए अंग्रेजों ने 'टेलर कमीशन' का गठन किया।
- कुशालसिंह ने अपना अंतिम समय उदयपुर में बिताया था तथा 1864 ई. में यहीं पर इनकी मृत्यु हो गई।
- कई अन्य सामन्तों ने भी कुशालसिंह का साथ दिया, जैसे-
  - (i) शिवनाथ सिंह आसोप (आसोप, जोधपुर)
  - (ii) बिशनसिंह (गूलर, नागौर)
  - (iii) अजीतसिंह (आलणियावास, नागौर)

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

- 10.Oct.1857 →

शिवनाथ सिंह आसोप के नेतृत्व में विद्रोहियों ने दिल्ली की ओर जाने का प्रयास किया था, लेकिन नारनौल (HR) के पास वे अंग्रेज अधिकारी 'गेरार्ड' से हार गये थे।

- शिवनाथ सिंह का नारा- "चलो दिल्ली-मारो फिरंगी"

- बड़लू (जोधपुर) नामक स्थान पर शिवनाथ सिंह ने जोधपुर के राजा के खिलाफ 08 दिनों तक संघर्ष किया था।

- बिशनसिंह और अजीतसिंह डाकू बन गये थे।

- कैप्टन शॉवर्स ने कोटा, बूंदी व मेवाड़ की राजकीय फौजों की सहायता से नीमच पर पुनः अधिकार कर लिया।

- आउवा में क्रान्ति का केन्द्र
  - सुगाली माता मन्दिर (पाली)
  - कामेश्वर मन्दिर (पाली)

- <u>तख्तसिंह</u> - क्रान्ति के दौरान यह जोधपुर (मारवाड़) का राजा था।

- <u>कानजी</u> - यह विठौड़ा का सामन्त था तथा कुशालसिंह ने इसकी हत्या कर दी।

मॉरीशन → मैकमेसन के बाद मारवाड़ का कार्यवाहक P.A बना।

<u>कोटा का जनविद्रोह</u> (15 Oct. 1857 ई.)

विद्रोही - (i) वकील जयदयाल (मथुरा)

(ii) <u>रिसालदार</u> मेहराब खान (करौली)

रिसाल → सेना, दार → मालिक

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- विद्रोहियों ने P.A बर्टन तथा कुछ अन्य लोगों को मार दिया था -

1. फ्रैंक } बर्टन के पुत्र
2. आर्थर }
3. सेल्डर } डॉक्टर
4. सेविल कॉल्म }
5. देवीलाल —— महाराव का प्रतिनिधि

- महाराव रामसिंह-II को नजरबन्द कर दिया गया।
- मथुरेश जी मन्दिर के मंहत कन्हैयालाल गोस्वामी ने राजा तथा विद्रोहियों के मध्य एक समझौता करवाया तथा बर्टन की हत्या की जिम्मेदारी राजा पर डाल दी गई। (समझौते में 9 शर्तें थी)
- करौली के राजा मदनपाल ने रामसिंह-II को मुक्त करवाया।
- 30 मार्च 1858 ई. को अंग्रेज अधिकारी रॉबर्ट्स ने कोटा को विद्राहियों से पूर्णतया मुक्त करवाया था।
- अंग्रेजों ने जयदयाल तथा मेहराब खान को फाँसी लगाई।
- रामसिंह-II को भी दण्डित किया गया तथा उसकी तोपों की सलामी 15 से 11 कर दि गई।
- करौली के राजा मदनपाल को सम्मानित किया गया तथा उसे 17 तोपों की सलामी दी गई
- कोटा के अन्य विद्रोही – 1. रतनलाल
  2. जियालाल

NOTE- • कोटा जनविद्रोह → राजस्थान का सबसे बड़ा जनविद्रोह
- राजस्थान में सबसे पहले कोटा की जनता द्वारा तिरंगा फहराया गया।
- मदनपाल की उपाधि- GSCI ↓ [Grand Commander of the star of India.]

टोंक-

- नवाब - वजीरुद्दौला अंग्रेजों का समर्थक था।
- विद्रोही- 1. मीर आलम खाँ
  2. अहमदयार खाँ (निम्बाहेडा)

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

3. मोइनुद्दीन (पलोद) → बहादुरशाह ज़फर से मुलाकात की।

- अहमदयार खां, शहज़ादा फिरोज (मंदसौर में क्रांति कर रहा था) के संपर्क में था।
- निम्बाहेड़ा में जनता ने नीमच के विद्रोहियों का स्वागत किया था।
- ताराचन्द पटेल ने अंग्रेज अधिकारी जेक्सन का सामना किया था। जेक्सन नीमच के विद्रोहियों का पीछा कर रहा था।
- टोंक के विद्रोह में महिलाओं ने भी भाग लिया था। मोहम्मद मुजीब के नाटक आजमाईश से यह जानकारी प्राप्त होती है।
- अंग्रेजों ने ताराचन्द पटेल को फाँसी दी थी।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

धौलपुर- (June)

- देवा गुर्जर ने विद्रोह की शुरुआत की थी। कालान्तर में ग्वालियर तथा इन्दौर के सैनिकों ने धौलपुर में विद्रोह किया था।
- विद्रोहियों के नेता – • राव रामचन्द्र (इंदौर)
  • हीरालाल (ग्वालियर)
- विद्रोह को दबाने के लिए धौलपुर महाराजा भगवन्तसिंह को पटियाला से सेना बुलानी पड़ी थी।

NOTE- पहला विद्रोह जिसमें दोनों सेनाएँ बाहर से आई थी।

भरतपुर- (31 Aug. 1857)

- गुर्जर तथा मेव समुदाय के लोगों ने अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह किया।
- महाराजा जसवन्त सिंह ने P.A मॉरीसन को भरतपुर छोड़ने की सलाह दी।

- नेता- सदरुद्दीन, राजा - जसवन्त सिंह
- राजस्थान का II विद्रोह- भरतपुर (प्रथम - नसीराबाद)

अलवर-

- महाराजा विनयसिंह व शिवदान सिंह अंग्रेजों के समर्थक थे।
- अंग्रेजों की सहायता के लिए उसने 'आगरा सेना भेजी थी, लेकिन मेव विद्रोहियों ने अछनेरा (आगरा) के पास इस सेना को हरा दिया था।
- दीवान फैजुल्ला खाँ ने विद्रोहियों का साथ दिया।

जयपुर-

- P.A. ईडन के कहने पर महाराजा रामसिंह-II ने विद्रोहियों को गिरफ्तार कर लिया था।
  - विद्रोही -
    1. सादुल्ला खाँ
    2. विलायत खाँ
    3. उस्मान खाँ
    4. लियाकत खाँ

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- अंग्रेजों ने रामसिंह -II को कोटपुतली परगना (→ इलाका) तथा 'सितार-ए-हिन्द' की उपाधि दी।

बीकानेर-

- बाडलू (हिसार के पास) नामक स्थान पर महाराजा सरदार सिंह ने विद्रोह को दबाया।
- यह राजस्थान का एकमात्र राजा था जिसने अपनी रियासत के बाहर जाकर स्वयं अंग्रेजों की सहायता की थी।
- अंग्रेजों ने इसे टिब्बी (हनुमानगढ़) परगने के 41 गाँव दिये।

* अमरचन्द बाँठिया-

- यह मूल रूप से बीकानेर के थे। क्रान्ति के दौरान ग्वालियर में झाँसी की रानी की आर्थिक सहायता की।
- इन्हें "1857 की क्रान्ति का भामाशाह" कहा जाता है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- अंग्रेजों ने अमरचन्द बाँठिया को फाँसी दी थी।
  → यह 1857 ई. की क्रान्ति के राजस्थान के प्रथम शहीद थे।

तात्या टोपे-

- क्रान्ति के दौरान तात्या टोपे दो बार राजस्थान आये थे।
  → (Aug. 1858, Dec. 1858)
- सर्वप्रथम मांडलगढ़ (भीलवाड़ा) आये थे।

* कुआड़ा का युद्ध- (9 Aug. 1858)

तात्या टोपे v/s रॉबर्ट्स
→ विजयी हुआ।

(4 दिन बाद)

* रकमगढ़ का युद्ध- (13 Aug. 1858)

- अंग्रेजों ने तात्या टोपे को रकमगढ़ (राजसंमद) के युद्ध मे पराजित किया था।
- इस युद्ध में कोठारिया के जोधसिंह ने तात्या टोपे की सहायता की।

* रलायता का युद्ध-

- झालावाड़ के राजा पृथ्वीसिंह ने तात्या टोपे के खिलाफ रलायता नामक स्थान पर सेना भेजी।

- गोपाल पलटन को छोड़कर बाकि सेना ने तात्या टोपे के खिलाफ लड़ने से मना कर दिया।

- तात्या टोपे ने झालावाड़ पर अधिकार कर लिया तथा पृथ्वीसिंह को तात्या टोपे को 5 लाख रु देने पड़े।

* तात्या टोपे का दूसरी बार प्रवेश-

- तात्या टोपे ने बाँसवाड़ा रियासत पर भी अधिकार किया था उस समय बाँसवाडा का राजा लक्ष्मणसिंह था।

- प्रतापगढ़ में अंग्रेज अधिकारी मेजर रॉक ने उसे हराया। उस समय दलपत सिंह प्रतापगढ़ का राजा था।

* जीरापुर का युद्ध- कर्नल बेसेन ने तात्या टोपे को हराया।

* दौसा का युद्ध- शॉवर्स व होनर्स ने तात्या टोपे को हराया।

* सीकर का युद्ध- कर्नल होमस ने तात्या टोपे को हराया।

- तात्या टोपे के 600 सैनिको ने बीकानेर के राजा सरदारसिंह के सामने सीकर में आत्मसमर्पण कर दिया।

- मानसिंह के विश्वासघात के कारण नरवर (M.P) के जंगलों से उसे गिरफ्तार कर लिया गया था तथा 18 अप्रेल 1859 को फांसी लगा दी गई। (शिवपुरी में)

- अंग्रेज अधिकारी L.C शॉवर्स ने तात्या टोपे की फाँसी का विरोध किया।

- BOOK- 'A Missing Chaptor of Indian Mutiny'
  └→ (मेवाड़ पालीटिकल एजेन्ट)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- जैसलमेर को छोड़कर तात्या टोपे सहायता प्राप्त करने के लिए राजस्थान की सभी रियासतों में गया।

तात्या टोपे के सहायक-

- मेवाड़ में सलूम्बर के केसरीसिंह तथा कोठारिया के जोधसिंह ने तात्या टोपे की सहायता की थी।
- जोधसिंह ने कई अन्य लोगों को भी शरण दी थी-
  1. पेशवा नाना साहब
  2. राव साहब
  3. भीमजी चारण
- टोंक के नासिर मुहम्मद खाँ ने भी तात्या टोपे की सहायता की थी।
- बीकानेर महाराजा सरदारसिंह ने तात्या टोपे को 10 घुड़सवारों की सहायता की।
- सीकर में तात्या टोपे की छतरी है।
- सीकर के सामन्त ने तात्या टोपे को शरण दी अतः अंग्रेजों ने उसे फाँसी लगा दी।

1857 ई. की क्रान्ति के कारण-

1. राजनीतिक कारण-

(i) P.A रियासत के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करता था।

(ii) अंग्रेज उत्तराधिकार के मामलों में हस्तक्षेप करते थे।

(iii) अंग्रेजों ने पुरानी रियासतों को तोड़कर नई रियासतें बनाई -

(i) धौलपुर
(ii) टोंक
(iii) झालावाड़

THE NOTES HUB All Notes are Available All Competition Books 7300134518, 7610010054

(iv) <u>नई सेनाओं का संगठन-</u> रियासतों की सुरक्षा के लिए अंग्रेजों द्वारा कई नयी सेनाओं का गठन किया गया,
जैसे-

- 1822 ई. → कोटा कन्टिनजेंट (देवली)
- 1822 ई. → मेरवाड़ा बटालियन (ब्यावर)
- 1835 ई. → शेखावाटी ब्रिगेड
- 1835 ई. → जोधपुर लीजियन (एरिनपुरा)
- 1841 ई. → मेवाड़ भील कोर (खैरवाड़ा)

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books 7300134518, 7610010054

2. <u>प्रशासनिक कारण-</u>

(i) सामन्तों के विशेषाधिकार समाप्त कर दिये थे।

(ii) सामन्तों द्वारा लिये जाने वाले 'कर' हटा दिये गये थे।

(iii) सामन्तों की सेनाएँ भंग कर दी गई थी जिससे सैनिक बेरोजगार हो गये थे।

3. <u>आर्थिक कारण-</u> (कृषि, उद्योग, व्यापार)

- <u>कृषि-</u>

राज्यों की सुरक्षा के लिए राजा अंग्रेजों को धन देते थे तथा यह धन बहुत अधिक था अतः राजाओं ने किसानों पर कर बढ़ा दिया। (भू- राजस्व)

- <u>उद्योग-</u>

ब्रिटिश माल की अधिकता के कारण हमारे घरेलू उद्योग धन्धे बन्द हो गए थे।

• व्यापार-

➤ अंग्रेजों ने नये व्यापारिक मार्गों का विकास किया तथा व्यापारियों को सुविधाएँ प्रदान की, अतः व्यापारी ब्रिटिश भारत की तरफ चले गये।

अर्थात् व्यापारिक मार्गों में अब स्थलीय मार्गों की जगह समुद्री मार्गों का प्रयोग होने लगा।

4. सामाजिक - धार्मिक कारण-

➤ अंग्रेजों ने हमारी सामाजिक रीति-रिवाजों में हस्तक्षेप किया था।

➤ ईसाई मिशनरीज के द्वारा हिन्दू तथा मुस्लिम धर्म का मजाक उड़ाया जा रहा था।

5. सैनिक कारण

अंग्रेज भारतीय सैनिकों के साथ पद व वेतन को लेकर नस्लीय भेदभाव करते थे।

6. साहित्यिक कारण-

➤ हमारे विद्वानों ने अंग्रेज विरोधी पुस्तकें लिखी जिससे जनता में राष्ट्रवादी भावनाओं का संचार हुआ।

जैसे- • कविराज बांकीदास जी – "आयो अंग्रेज मुल्क रै ऊपर" (गीत)

• सूर्यमल्ल मीसण – वीर सतसई (BOOK)

• राघोदास

• गंगजी सांदू

7. तात्कालिक कारण-

➤ अंग्रेजों ने ब्राउनबेस राइफल्स के स्थान पर नई एनफील्ड राइफलों का प्रयोग किया तथा उनमें चर्बी वाले कारतूसों का प्रयोग किया जाता था।

↳ (गाय व सूअर की चर्बी)

1857 ई. की क्रान्ति के प्रभाव-

1. क्रान्ति के दौरान राजाओं ने अंग्रेजों का साथ दिया था, अतः क्रान्ति के बाद राजाओं को सम्मानित किया गया था तथा उपाधियाँ दी गई थी।

2. क्रान्ति के दौरान सामन्तों ने विद्रोहियों का सहयोग किया अतः क्रान्ति के बाद सामन्तों को शक्तिहीन बना दिया गया।

3. क्रान्ति के दौरान व्यापारी वर्ग ने अंग्रेजों का साथ दिया था, अतः क्रान्ति के बाद अंग्रेजों ने इन्हें संरक्षण प्रदान किया।

4. क्रान्ति के बाद राजस्थान में यातायात एवं संचार के साधनों का विकास हुआ।

5. राजाओं तथा जनता के आपसी सम्पर्क को तोड़ने के लिए 1869 ई. में वाल्टर द्वारा एक योजना दी गई तथा इसके तहत राजा-महाराजाओं के बच्चों के लिए अलग से स्कूल तथा कॉलेज की स्थापना की जाने लगी,
   जैसे-
   1875 ई., मेयो कॉलेज (अजमेर) की स्थापना।

6. अंग्रेजी शिक्षा के कारण समाज में मध्यम वर्ग का विकास हुआ जिसने आगामी राष्ट्रीय आन्दोलन का नेतृत्व किया।
   जैसे- विजयसिंह पथिक
   अर्जुनलाल सेठी

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

7. अंग्रेजों ने अयोग्य राजाओं को संरक्षण प्रदान किया जिससे राजाओं की विलासिता में वृद्धि हुई तथा उन्होंने किसानों पर भू- राजस्व कर बढ़ा दिये, अतः राजस्थान मे किसान आन्दोलन प्रारम्भ हुए।

8. राजस्थान में अंग्रेजों का प्रभाव बढ़ रहा था तथा राजाओं ने अपने सिक्कों पर दोस्ती लन्दन तथा विक्टोरिया एम्प्रेस लिखवाया।

9. 1857 ई. की क्रान्ति ने राष्ट्रीय आन्दोलन के लिए प्रेरणास्रोत का कार्य किया तथा कुशालसिंह चम्पावत राजस्थान की लोक-कहानियों तथा लोकगीतों का नायक बन गया।

10. राजस्थान की आम जनता ने क्रान्ति में भाग लिया जिससे यह सिद्ध हो गया था कि राजस्थान की जनता अंग्रेजी शासन की समर्थक नहीं है।

THE NOTES HUB * Notes are Available * All Competition Books * 7300134518, 7610010054

क्रान्ति की असफलता के कारण-

(i) 1857 ई. की क्रान्ति में आपसी समन्वय, उचित रणनीति तथा कुशल नेतृत्व का अभाव था।

(ii) क्रान्ति अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग समय में हुई। अतः अंग्रेजों को क्रान्ति दबाने का पर्याप्त मौका मिला।

(iii) क्रान्ति के बड़े नेताओं मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर तथा पेशवा नाना साहेब ने राजस्थान के क्रान्तिकारियों से कोई सम्पर्क स्थापित नहीं किया।

(iv) राजस्थान के राजा-महाराजा अंग्रेजों के समर्थक थे, अतः उन्होंने क्रान्ति दबाने में अंग्रेजों की सहायता की।

(v) तात्या टोपे का आगमन राजस्थान में बहुत देरी से हुआ तथा अंग्रेज अन्य स्थानों पर क्रान्ति दबा चुके थे अतः उन्होंने अपना पूरा ध्यान तात्या टोपे पर लगा दिया था।

(vi) अंग्रेजों ने क्रान्ति को अत्यधिक क्रूरता से कुचला था अतः आमजन क्रान्ति में शामिल होने का साहस नहीं जुटा पाए।

(vii) विद्रोहियों ने अजमेर पर कब्जा करने का प्रयास नहीं किया था।

(viii) अंग्रेजों के पास विद्रोहियों की तुलना में अत्याधुनिक हथियार थे व अच्छे/प्रशिक्षित सेनापति थे।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

क्रान्ति का स्वरुप / प्रकृति-

(i) सैनिक विद्रोह-

- अंग्रेजी इतिहासकारों के अनुसार सेवा संबंधी शर्तों तथा चर्बी वाले कारतूसों के कारण सैनिको ने विद्रोह कर दिया था लेकिन यह तथ्य सही नहीं है क्योंकि असैनिक तत्वों ने भी क्रान्ति में भाग लिया था तथा ब्यावर व खैरवाड़ा छावनी क्षेत्र में क्रान्ति नहीं हुई थी।

(ii) सामन्तों का विद्रोह-

- ऐसा माना जाता है कि अंग्रेजी शासन के बाद सामन्तों को प्रभावहीन बना दिया गया था अतः उन्होंने अपने निजी स्वार्थों के लिए क्रांति की थी, लेकिन यह क्रांति का एकपक्षीय मूल्यांकन है, क्योंकि मारवाड़ के सामन्तों ने दिल्ली तक विद्रोहियों का साथ दिया था तथा मेवाड़ के सामन्तों ने अंग्रेज विरोधी तत्वों को शरण दी।
- यदि वे अपने स्वार्थों के लिए लड़ते तो लोकगीतों में नहीं गाये जाते।

(iii) धार्मिक असंतोष-

- इतिहासकारो के एक वर्ग के अनुसार 1857 की क्रान्ति ईसाई मिशनरियों के विरुद्ध आक्रोश था लेकिन यह तथ्य भी सही नहीं है, क्योंकि राजस्थान में ईसाई मिशनरियों का प्रभाव अधिक नहीं था।

(iii) स्वतन्त्रता संग्राम-

- क्रान्ति के दौरान सभी विद्रोही दिल्ली की तरफ गये थे तथा बहादुर शाह जफर को अपना नेता माना था।
- क्रान्ति में सैनिक व असैनिक दोनों तत्व शामिल थे अतः यह सिद्ध होता है कि जनता अंग्रेजी शासन को उखाड़ फेंकना चाहती थी।

- नाथूराम खड़गावत के अनुसार विद्रोहियों में बहादुर शाह जफर के प्रति सहानुभूति थी तथा अंग्रेजों के प्रति विद्रोही भावनाएँ थी।

- नसीराबाद छावनी के सैनिक अधिकारी I.T प्रिचार्ड के अनुसार यह क्रान्ति एक सैनिक विद्रोह के रूप में प्रारम्भ हुई थी लेकिन बाद में यह स्वतन्त्रता संग्राम में बदल गई थी।

BOOKS-

- नाथूराम खड़गावत - Role of Rajasthan in Struggle of 1857
- I.T प्रिचार्ड - Mutinies in Rajputana.

विद्रोहियों ने अजमेर पर कब्जा करने का प्रयास नहीं किया था, क्योंकि-

1. दिल्ली विद्रोह का प्रमुख केन्द्र था तथा बहादुरशाह जफर क्रान्ति के प्रमुख नेता थे। अतः सभी विद्रोही दिल्ली जाकर बहादुर शाह जफर से अनुमति प्राप्त करना चाहते थे।
2. विद्रोहियों के पास लूट का धन, महिलाएँ, बच्चे साथ थे। अतः वे अजमेर जाकर अपना समय बर्बाद नही करना चाहते थे।
3. अजमेर की सुरक्षा को तोड़ना इतना आसान भी नहीं था क्योंकि वहाँ पहले से ही मेरवाड़ा बटालियन (ब्यावर) तैनात की जा चुकी थी।
   - मेर रेजीमेन्ट
   - लेफ्टिनेट कारनेल के नेतृत्व में।
4. एक युरोपीयन बटालियन अजमेर की सुरक्षा के लिए डीसा (गुजरात) से आ रही थी।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

क्रान्ति की शुरुआत नसीराबाद से हुई थी क्योंकि-

- 15 वीं N.I के सैनिक मेरठ से अजमेर आये थे, अतः ये चर्बी वाले कारतूसों के बारे में जानते थे।

- इन सैनिकों को अजमेर से नसीराबाद भेज दिया गया था अतः इनमें अंग्रेजों के प्रति असंतोष था।
- इन सैनिकों को हथियार रखने के लिए कहा गया था।
- बॉम्बे लॉंसर्स के सैनिको को इनके खिलाफ लगा दिया गया था।

कोटा में जनविद्रोह का कारण-

- अंग्रेजों ने कोटा में दो शक्ति केन्द्र बनाए थे।

  राजा दीवान (PM)

- अंग्रेजों ने कोटा का विभाजन कर झालावाड़ नयी रियासत बना दी (1838 ई.)
- जयदयाल को वकील पद से हटा दिया गया था।
- सैनिकों में चर्बी वाले कारतूसों के प्रति असंतोष था।
- अंग्रेजों ने अफीम की खेती को बन्द कर दिया था। (License वाले ही खेती कर सकते थे)

- राजस्थान में सर्वाधिक विप्लवकारी प्रदर्शन → कोटा
- क्रान्तिकारियों के अधीन सर्वाधिक समय तक → कोटा दुर्ग

Important facts:-

- हेनरी लॉरेन्स को जिंदा जलाया गया - लखनऊ में
- तात्या टोपे को शरण देने के कारण फाँसी - सीकर के सामंत को
- आजमगढ़ घोषणा - 1857 की क्रान्ति से संबंधित
- सिंहभूम में 1857 के विद्रोह का नेतृत्व → गोनू

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- कॉलिन केम्पबेल ने 1857 के विद्रोह का दमन < कानपुर, झाँसी
- भारत में एनफिल्ड राइफल का उत्पादन व प्रशिक्षण स्थल – सियालकोट (Pak.)
- महलपरी – रानी लक्ष्मीबाई
- 1857 ई. में मेरठ का commanding officer – जनरल हैविट

- राजपूताना में सर्वप्रथम संधियों का उल्लंघन – 1. मानसिंह राठौड़ (जोधपुर)
  2. रणजीत सिंह (Bh)
- क्रान्ति का चिह्न – कमल का फूल & रोटी
  - कमल का फूल ↓ भारतीय सैनिक
  - रोटी ↓ सामंत
- नसीराबाद विद्रोह की सैनिक टुकड़िया –
  (i) 15th BNI
  (ii) 30th BNI
  (iii) मुम्बई लांसर्स
  (iv) मेरवाड़ा लांसर्स
- जोधपुर (तख्तसिंह) की सेना द्वारा एरिनपुरा क्रान्तिकारियों पर कोई कार्यवाही नहीं करने के कारण कहा –
  "The during orders of Rules" – use पैट्रिक लॉरेंस

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books 7300134518, 7610010054

रियासतें	शासक	P.A (Political Agent)
1. जोधपुर (मारवाड़)	तख्तसिंह →	मैकमेसन
2. जयपुर	रामसिंह-II →	मेजर ईडन
3. मेवाड़ (उदयपुर)	स्वरूपसिंह →	मेजर शॉवर्स

4. कोटा	रामसिंह-II → मेजर बर्टन
5. भरतपुर	जसवन्त सिंह — मेजर मॉरीसन
6. धौलपुर	भगवन्त सिंह — मेजर निक्सन

➤ NOTE- विद्रोह से पूर्व मेजर बर्टन नीमच गया हुआ था, वह वापस लौटा

↓ 5 दिन (RBSE के अनुसार)

↓ 12 दिन (इतिहासकारों के अनुसार)

क्रान्ति के प्रभाव / परिणाम-

1. भारतीय शासन - EIC —छीनकर→ ब्रिटेन महारानी
2. गवर्नर जनरल —नया पद→ वॉयसराय

गवर्नर जनरल ↓ अंतिम → **लॉर्ड कर्जन** ← प्रथम ↓ वॉयसराय

1857 की क्रान्ति के संबंध में कथन-

① V.D. सावरकर → 1857 - प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम

② प. जवाहरलाल नेहरू → स्वतन्त्रता प्राप्ति हेतु भारतीयों द्वारा किया जाने वाला प्रथम प्रयास

③ सर आउट्रम + W. टेलर → हिन्दु - मुस्लिम विद्रोह

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books 7300134518, 7610010054

④ R. मजूमदार → ना तो राष्ट्रीय, ना सैनिक यह जनविद्रोह था

NOTE- क्रान्ति के समय इंग्लैण्ड के PM - पामेरस्टोन

राजस्थान के किसान आन्दोलन

बिजौलिया किसान आन्दोलन - (1897 - 1941 ई.) → 44 साल

- बिजौलिया का पुराना नाम - विजयावली / ऊपरमाल
- बिजौलिया मेवाड़ रियासत का प्रथम श्रेणी का ठिकाना था।
- राणा सांगा ने अशोक परमार को ऊपरमाल की जागीर दी थी तथा बिजौलिया इस जागीर का मुख्यालय था।
- अशोक परमार ने खानवा के युद्ध में भाग लिया था -

* आन्दोलन के कारण -

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

(i) 84 प्रकार के कर

(ii) अधिक भू - राजस्व

(iii) लाटा - कून्ता व्यवस्था

(iv) बेगार

(v) चंवरी कर - 1903 ई. में कृष्ण सिंह ने यह कर लगाया था। यह कर किसानों से उनकी लड़कियों की शादी के समय लिया जाता था।

(vi) तलवार बंधाई कर - 1906 ई. में पृथ्वीसिंह ने यह कर किसानों पर लगाया था।
↓
पहले यह कर नये सामन्तों द्वारा राजा को दिया जाता था)

(A) प्रथम चरण - (1897 - 1914 ई.)

- धाकड़ जाति के किसानों द्वारा गिरधरपुरा नामक गाँव से आंदोलन प्रारम्भ हुआ।

- साधुसीताराम दास के कहने पर नानजी पटेल तथा ठाकरी पटेल किसानों की समस्याएँ लेकर मेवाड़ के महाराणा फतेहसिंह से मिले।
- मेवाड़ महाराणा ने हामिद को जाँच अधिकारी बनाया, लेकिन पहले चरण में किसानों को अधिक सफलता नहीं मिली।
  - ↳ हामिद हुसैन समिति ने - कोई कार्यवाही नहीं की।
- स्थानीय नेताओं द्वारा यह आन्दोलन चलाया गया -
  जैसे- प्रेमचन्द भील, फतेहकरण चारण, ब्रह्मदेव।

(B) <u>दूसरा चरण</u> (1916-23 ई.)-

- साधु सीताराम दास के कहने पर विजयसिंह पथिक आन्दोलन से जुड़ते हैं।

* <u>ऊपरमाल पंच बोर्ड</u>-
- स्थापना - 1917 ई. (हरियाली अमावस्या)
- संस्थापक - विजयसिंह पथिक
- स्थान - बैरीसाल
- अध्यक्ष - मन्ना पटेल

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- विजयसिंह पथिक ने 'ऊपरमाल सेवा समिति' का गठन भी किया तथा ऊपरमाल का डंका नामक एक पर्चा प्रकाशित किया।
- विजयसिंह पथिक से प्रेरित होकर माणिक्यलाल वर्मा आन्दोलन में शामिल हो गये। यह पहले बिजौलिया ठिकाने में कार्य करते थे।
- 1919 ई. के कांग्रेस के अमृतसर के अधिवेशन में विजयसिंह पथिक के कहने पर बाल गंगाधर तिलक ने बिजौलिया आन्दोलन के पक्ष में प्रस्ताव रखा लेकिन गाँधीजी ने उसका विरोध किया।

- 1920 ई. के कान्ग्रेस के नागपुर अधिवेशन में विजयसिंह पथिक ने किसानों की एक प्रदर्शनी का आयोजन।
- प्रमुख किसान- कालू जी, गोकुल जी, नन्दलाल जी।
- इस अधिवेशन में गाँधीजी ने आन्दोलन को अपना नैतिक समर्थन दिया।
- मेवाड़ रियासत ने दो जाँच आयोगों का गठन किया -

(1919 ई.)
(बिंदुलाल भट्टाचार्य आयोग)
सदस्य
- बिंदुलाल भट्टाचार्य (अध्यक्ष)
- अमरसिंह
- अफजल अली

(1920 ई.)
(राजसिंह बेदला आयोग)
सदस्य
- राजसिंह बेदला (अध्यक्ष)
- तख्तसिंह मेहता
- रमाकान्त मालवीय

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- किसान इन जाँच आयोगों से संतुष्ट नहीं थे।
- 1922 ई. में अंग्रेजों के हस्तक्षेप के कारण किसानों के साथ एक समझौता किया गया -

समझौता - 1922 ई.

1. राबर्ट हालैण्ड (A.G.G.)
2. आजल्वी (A.G.G. का सचिव)
3. विलकिन्सन (P.A)

(किसान)
1. मोतीराम / मोतीचन्द
2. नारायण पटेल

4. प्रभाषचन्द्र चटर्जी (PCC)
5. बिहारी लाल
6. सीमा शुक्ला

3. रामनारायण चौधरी
4. माणिक्यलाल वर्मा

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- समझौते के तहत किसानों के 35 कर माफ किए गए और लगान 2/5 – 1/5 की।
  (84-35 = 49 कर बचे)
- बिजौलिया के सामन्त केसरीसिंह ने इस समझौते को लागू नहीं किया।
  → पृथ्वीसिंह के बाद का सामन्त।

③ <u>तृतीय चरण</u> – (1923-41 ई.)

- भूमि बंदोबस्त अधिकारी ट्रेंच ने असिंचित भूमि पर टैक्स बढ़ा दिये थे।
- विजयसिंह पथिक के कहने पर किसानों ने असिंचित भूमि सामंत को वापस लौटा दी और सामन्त ने उस भूमि को जब्त कर लिया।
- 1928-29 ई. में विजयसिंह पथिक आन्दोलन से अलग हो गये थे।
- गाँधीजी ने जमनालाल बजाज को आन्दोलन के लिए भेजा।
- जमनालाल बजाज ने हरिभाऊ उपाध्याय को आन्दोलन का नेता घोषित किया।
- 1941 ई. में मेवाड़ के PM वी. राघवाचारी और राजस्व मंत्री मोहनसिंह मेहता ने किसानों के साथ समझौता करवाया व जब्त जमीनें किसानों को वापस दिलवाई। 17 प्रकार की लाग-बाग समाप्त करवाई। (49-17 = 32)
- तिलक और गाँधीजी ने मेवाड़ महाराणा को पत्र लिखे।

जिन समाचार-पत्रों ने बिजौलिया आन्दोलन का समर्थन किया

- अपने 'मराठा' समाचार-पत्र में तिलक ने बिजौलिया के पक्ष में एक लेख लिखा।
- गणेश शंकर विद्यार्थी अपने 'प्रताप' समाचार पत्र में बिजौलिया आन्दोलन की खबरे प्रकाशित करते थे।

'प्रताप' समाचार पत्र → साप्ताहिक समाचार पत्र
→ कानपुर (U.P) से प्रकाशित।

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- विजयसिंह पथिक ने गणेश शंकर विद्यार्थी को चाँदी की राखी भेजी थी।
- मुंशी प्रेमचन्द का 'रंगभुमि उपन्यास' बिजौलिया आन्दोलन पर आधारित है।
- माणिक्यलाल वर्मा का गीत 'पंछीड़ा' व विजयसिंह पथिक का गीत 'पीड़ितों का पछीड़ा' सम्बन्धित है।
- भंवरलाल जी ने भी अपने गीतों से किसानो को प्रेरित किया।

* बिजौलिया आन्दोलन का महत्व-

- राजस्थान का प्रथम संगठित किसान आन्दोलन था।
- विश्व का सबसे लम्बा अहिंसक (लगभग 44 साल) आन्दोलन था।
- आन्दोलन के दौरान किसानों ने बाहरी धन ग्रहण नहीं किया था। यह किसानों के आत्मसम्मान को दर्शाता है।
- इस आन्दोलन ने राजस्थान के अन्य किसान आन्दोलनों के लिए प्रेरणा का काम किया।

- बिजौलिया आन्दोलन ने राजस्थान को राष्ट्रीय आन्दोलन से जोड़ा था।
- इस आन्दोलन ने किसानों में राजनीतिक चेतना का संचार किया।
- इसमें महिलाएँ भी शामिल हुई थी। जिससे महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा मिला जैसे- 1. अंजना देवी 2. रमा देवी
- राजनीतिक संगठनों ने भी इस आन्दोलन का समर्थन किया- जैसे-
  1. राजस्थान सेवा संघ - विजयसिंह पथिक
  2. राजपूताना मध्य भारत सभा - जमनालाल बजाज
- इस आन्दोलन पर "बोल्शेविक क्रान्ति"- 1917 (रूस) का प्रभाव था।

बेगू किसान आन्दोलन-

अन्य केन्द्र - चाँदखेड़ी, मण्डावरी

- यह मेवाड़ रियासत का प्रथम श्रेणी का ठिकाना था।
- 1921 ई. में धाकड़ किसानों द्वारा यह आन्दोलन प्रारम्भ किया गया।
  मैनाल (भीलवाड़ा-चितौड़) के भैरूकुण्ड नामक स्थान से यह आन्दोलन प्रारम्भ हुआ।

THE NOTES HUB * Notes are Available * All Competition Books * 7300134518, 7610010054

* आन्दोलन के कारण-

1. 53 प्रकार के कर
2. अधिक भू-राजस्व
3. लाटा-कुंता व्यवस्था
4. बेगार

- नेता- रामनारायण चौधरी

- 1922 ई. में अजमेर में विजयसिंह पथिक ने किसानों और बेगूं के सामन्त अनूपसिंह के बीच समझौता करवा दिया।
- ट्रेंच ने इसे 'बोल्शेविक समझौता' कहा।
- मेवाड़ रियासत ने इस समझौते को अस्वीकार कर दिया।
- अनूपसिंह को गिरफ्तार किया गया, और अमृतलाल को बेगूं का प्रशासक बना दिया गया।

* <u>गोविन्दपुरा हत्याकाण्ड</u>— 13 जुलाई 1923 ई.

- किसानों कि सभा पर ट्रेंच द्वारा फायरिंग की गई, जिसमें दो किसान शहीद हुए— 1. रूपाजी धाकड़ 2. किरपाजी धाकड़
- 10 Sep. 1923 को विजयसिंह पथिक को गिरफ्तार किया गया और आन्दोलन नेतृत्वहीन हो गया।
- 1925 ई. में किसानों के साथ समझौता किया गया। उनके 34 'कर' माफ कर दिये गये।
- आन्दोलन के अन्य केन्द्र— चाँदखेड़ी, मण्डावरी

मेवाड़ के खालसा क्षेत्र का आन्दोलन—

- अप्रैल-1921 में जाट किसानों ने उदयपुर से आन्दोलन प्रारम्भ किया।
- नेता- गोकुल जी (गाँव- पोडोली)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

पोडोली सम्मेलन (dec. 1921) के निर्णय—

- आन्दोलन को बिजौलिया आन्दोलन की तरह चलाया जायेगा।
- अगला सम्मेलन मातृकुण्डिया (चित्तौड़) में आयोजित किया जायेगा।

* मातृकुण्डिया सम्मेलन- 1922 ई. | मातृकुण्डिया - राजस्थान का हरिद्वार |

* इस सम्मेलन में किसानों की अधिकांश माँगें स्वीकार कर ली गई।

| अफीम कमीशन = 1893 |

* किसानों को अफीम की खेती का मुआवजा दे दिया गया।

बूंदी/ बरड़ किसान आन्दोलन-

गुर्जर किसानों द्वारा आरम्भ।

कारण-		
	1. 25 प्रकार के कर	4. लाटा-कुंता व्यवस्था
	2. अधिक भू-राजस्व	5. बेगार
	3. युद्ध कर (प्रथम विश्व युद्ध के समय)	6. चराई कर
		7. भ्रष्टाचार कर

* 1920 ई. में साधु सीताराम दास ने "डाबी किसान पंचायत" की स्थापना की तथा इसका अध्यक्ष 'हरला भड़क' को बनाया। धीरे-धीरे अन्य स्थानों पर भी किसान पंचायतों की स्थापना की गई।
जैसे-
बरड़, बरन्धन, गरदड़ा।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

* डाबी हत्याकाण्ड- 2 अप्रैल 1923

* इकराम हुसैन ने किसान सभा पर फायरिंग की और दो किसान शहीद हुए -
1. नानक जी भील
2. देवीलाल गुर्जर

| झण्डा गीत गाते हुए शहीद हुए। |

* नानक जी भील की याद में माणिक्यलाल वर्मा ने 'अर्जी' नामक गीत लिखा।

➤ <u>आन्दोलन के नेता-</u>
- नयनूराम शर्मा
- नारायण सिंह
- भंवरलाल सुनार

➤ 1927 ई. में राजस्थान सेवा संघ के बन्द हो जाने के कारण यह किसान आन्दोलन समाप्त हो गया था।

➤ आन्दोलन में महिलाओं ने भी बढ़- चढ़कर भाग लिया।

➤ 1936 ई. में आन्दोलन का द्वितीय चरण प्रारम्भ होता है- हिण्डौली से

➤ इस चरण में किसानों द्वारा समान सुधार किये गये।

* <u>हिण्डौली सम्मेलन-</u> (5 OG. 1936)

➤ यह धुलेश्वर महादेव मन्दिर पर आयोजित किया।

➤ इसमें 500 से ज्यादा गुर्जर व मीणा किसानों ने भाग लिया।

<u>अलवर किसान आन्दोलन-</u>

- नीमूचणा आन्दोलन
  - ↓ राजपूत किसानों द्वारा
    - वानसुर
    - थानागाजी
    - } स्थान
- (हिंसात्मक) ← मेव आन्दोलन
  - ↓ मेव किसानों द्वारा
  - ↓ मेवात क्षेत्र
    - रामगढ़
    - किशनगढ़
    - लक्ष्मणगढ़
    - तिजारा

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

1. नीमूचणा आन्दोलन-

- **कारण-** (i) महाराजा जयसिंह ने राजपूत, ब्राह्मण किसानों पर 40% 'कर' बढ़ा दिये थे।

  (ii) 'माफी जागीरों' को जब्त कर लिया गया।
  ↓
  (ब्राह्मणों को मुफ्त में दी गई जमीनें)

  (iii) किसानों के अस्त्र-शस्त्र रखने पर पाबन्दी।
  (जनसभा पर भी रोक)

- **नेता-**
  - माधोसिंह
  - अमरसिंह
  - गंगासिंह
  - गोविन्दसिंह

Trick= Maggi

- अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा ने आन्दोलन का समर्थन किया।

- किसानों ने 'पुकार' नामक पर्चा प्रकाशित किया।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

(Imp)
नीमूचणा हत्याकाण्ड - (14 May 1925)

- छाजू सिंह ने किसानों की सभा पर फायरिंग कर दी।
- 156 किसान शहिद हो गये।
- अपने 'यंग इंडिया' समाचार पत्र में गाँधीजी ने इसे दोहरी डायरशाही (दूसरा जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड) कहा।
- 'रियासत' समाचार पत्र ने इसकी तुलना जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड से की थी।

- 'तरुण राजस्थान' समाचार पत्र में इस घटना को 'सचित्र प्रकाशित' किया। (31 मई 1925)

- नवम्बर-1925 में समझौते के तहत पुराना भूमि बंदोबस्त पुनः प्रभावी।

मेव किसान आन्दोलन-

- कारण- • अधिक भू- राजस्व
  • माफी जागीर को जब्त किया गया।
  • जंगली सुअरों की समस्या

- नेता- यासीन खान, सैय्यद भीक नारंग, मुहम्मद हादी

- कई धार्मिक संगठनों ने आन्दोलन का समर्थन किया।

  1. अंजुमन-ए- खादिम-उल-इस्लाम
  2. जमीयत-ए-तबलिज-उल-इस्लाम

- इन संगठनों ने धार्मिक माँगें प्रस्तुत की-

जैसे-
  1. मस्जिदों पर सरकारी नियंत्रण समाप्त किया जाना चाहिए।
  2. उर्दू को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
  3. सरकारी नौकरियों में मुस्लिमों की संख्या बढ़ाई जानी चाहिए

- महाराजा जयसिंह ने एक जाँच समिति का गठन किया।

  ↓

  सदस्य- • दुर्जन सिंह
  • गणेशी लाल
  • गज्जनाफर अली

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- यासीन खां के कहने पर किसानों ने जाँच समिति का बहिष्कार किया।
- आंदोलन हिंसक व साम्प्रदायिक हो गया।
- 1933 ई. में तिजारा में साम्प्रदायिक दंगे हो गये।
  - अंग्रेजों ने महाराजा जयसिंह को हटा दिया और वे पेरिस चले गए वहाँ उनकी मृत्यु हो गई।
- इस आन्दोलन में बाहरी लोगों (पंजाब, हरियाणा) ने भी हिस्सा लिया।

शेखावाटी/ सीकर किसान आन्दोलन

- यह जयपुर रियासत के अन्तर्गत आता था। इस क्षेत्र में कच्छवाहा राजवंश की शेखावत शाखा का शासन था।
- जाट किसानों द्वारा आन्दोलन किया गया।

शेखावाटी

- सीकर → अर्द्ध स्वतंत्र ठिकाना
- पंचपाने →
  - डूंडलोद
  - मलसीसर
  - बिसाऊ
  - नवलगढ़
  - मण्डावा

  } झुंझनूं

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- 1922 ई. में सीकर के सामन्त कल्याणसिंह ने करो मे बढ़ोतरी की। अतः जाट किसानों ने आन्दोलन प्रारम्भ किया।

- नेता - रामनारायण चौधरी , हरिब्रह्मचारी
- रामनारायण चौधरी के सीकर में प्रवेश पर पाबन्दी लगा दी।
- 'तरुण राजस्थान' समाचार पत्र को भी प्रतिबंधित किया गया।
- 'House of Common' में पैथिक लॉरेन्स ने इस आन्दोलन की चर्चा की।
- लन्दन के 'डैली हेराल्ड' समाचार पत्र में आन्दोलन की खबरें प्रकाशित हुई।
- 1925 ई. के पुष्कर अधिवेशन में 'अखिल भारतीय जाट महासभा' ने आन्दोलन का समर्थन किया।
- ठाकुर देशराज (भरतपुर) ने आन्दोलन का मोर्चा संभाला।
- 1931 ई. 'जाट क्षेत्रीय महासभा' का गठन किया गया।
  ↓
  प्रथम अधिवेशन - 1933 ई. → पलथाना (सीकर)

* जाट प्रजापति महायज्ञ - 20 जनवरी 1934

- बसंत पंचमी के दिन ठाकुर देशराज ने आयोजन किया।
- पुरोहित - खेमराज शर्मा
- यजमान (यज्ञ करने वाला) → कुंवर हुकुम सिंह
- 15 मार्च 1935 ई. को सर छोटूराम चौधरी और रत्नसिंह ने किसानों के साथ समझौता करवाया।
- 1938 ई. में जयपुर प्रजामण्डल ने भी आन्दोलन का समर्थन किया।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- 1947 ई. में जयपुर के PM हीरालाल शास्त्री व राजस्व मंत्री टीकाराम पालीवाल ने किसानों के साथ समझौता किया।
  - (विद्यार्थी यूथ लीग)

नेता- 1. सरदार हरलाल सिंह
- हनुमानपुरा गाँव
- झुन्झुनू में विद्यार्थी भवन की स्थापना
  - (किसान आन्दोलन की गतिविधियों का मुख्य केन्द्र)

2. नेतराम सिंह गौरीर —पुत्री→ कमला बेनीवाल

3. पन्ने सिंह बाटडानाऊ

4. मास्टर चन्द्रभान

5. नरोत्तम लाल जोशी - झुन्झुनूं
   - शेखावाटी जकात आन्दोलन चलाया।
   - राजस्थान विधानसभा के प्रथम अध्यक्ष।

NOTE- जकात कर- खाद्यान्नों को एक-स्थान से दूसरे स्थान पर भेजने पर लगने वाला कर।

अमर सेवा समिति-

इस संगठन ने शेखावाटी क्षेत्र में राजनीतिक जागरुकता का संचार किया।

- स्थापना- मास्टर प्यारेलाल, चिड़ावा (झुन्झुनूं)
  - (चिड़ावा का गाँधी)
  - इन्होंने गाँधीजी के असहयोग आन्दोलन में भाग लिया था।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

कटराथल सम्मेलन (सीकर) - 25 अप्रैल 1934

- 10,000 से अधिक महिलाओं ने भाग लिया था।

- कारण- सोतिया का बाँस नामक स्थान पर सीहोट के सामंत मानसिंह ने महिलाओं से दुर्व्यवहार किया था।

- अध्यक्षता - किशोरी देवी , अन्य सदस्य - 1. रूपादेवी
  2. रूक्मा
  3. लक्ष्मी , दुर्गावति
- मुख्य वक्ता - उत्तमा देवी

कूदन हत्याकाण्ड - (25 अप्रैल 1935) → सीकर में

- धापी देवी के कहने पर किसानों ने कर देने से मना कर दिया।
- कैप्टन वेब ने किसानों पर फायरिंग की, जिससे 4 किसान शहीद हो गए-
  1. चेतराम
  2. टीकूराम
  3. तुलछाराम
  4. आशाराम

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- House of common में इस हत्याकाण्ड की चर्चा हुई।

जयसिंहपुरा हत्याकाण्ड - (21 जून 1934) → झुन्झुनूं

- यह राजस्थान का ऐसा प्रथम किसान हत्याकाण्ड था, जिसमें हत्यारों को सजा मिली थी।

- ईश्वरीसिंह के भाई द्वारा हत्याकाण्ड
  - ईश्वरीसिंह ↓ (डूँडलोद के सामन्त)
  - हत्याकाण्ड ↘ किसानों पर गोलीबारी

भरतपुर किसान आन्दोलन - 1931 ई.

➤ कारण- 1. अधिक भू- राजस्व

2. शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सड़क पर नये 'कर'

3. 1929 की महान आर्थिक मंदी

➤ नेता- लम्बरदार भोजी

↳ Tax लेने वाले अधिकारी

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

राजस्थान में किसान आन्दोलनों का कारण-

1. जनता पर ध्यान नहीं-

- अंग्रेजी संरक्षण के कारण राजा तथा सामन्तों ने किसानों पर ध्यान देना बन्द कर दिया था।

2. अंग्रेजी संरक्षण के कारण-

- राजाओं के जीवन में विलासिता बढ़ गई थी अतः इसलिए इन्होंने कर बढ़ाने शुरू कर दिये थे।
- भू- राजस्व अधिक था तथा कई अन्य प्रकार के कर भी लगाये गये थे।
- खालसा क्षेत्र में भू- राजस्व नकद के रूप में लिया जाता था अतः किसान साहूकारों के चंगुल में फंस गये थे।
- जागीरी क्षेत्रों में सामन्तों ने भूमि - बंदोबस्त नहीं करवाये थे तथा किसान न्याय के लिए सामन्त पर निर्भर थे तथा किसानों में (लाटा-कून्ता) के खिलाफ आक्रोश था।
- प्रथम विश्व युद्ध के दौरान मंहगाई बढ़ चुकी थी व राजाओं ने भूराजस्व बढ़ा दिये थे।

3. <u>व्यापार से संबंधित-</u>

- हमारी अर्थव्यवस्था अंग्रेजों के कारण विश्व अर्थव्यवस्था से जुड़ गयी थी तथा विश्व अर्थव्यवस्था में होने वाले उतार-चढ़ावों को किसान समझ नहीं पाते थे।
- राष्ट्रीय आन्दोलन में गाँधीजी के आगमन के बाद भारतीय जनता में राजनीतिक चेतना बढ़ रही थी अतः राजस्थान के किसानों पर यह प्रभाव दिखाई देता है।
- राजस्थान के राजनीतिक संगठनों ने किसानों की आवाज उठाई- जैसे-

  राजस्थान सेवा संघ

  राजपूताना मध्य भारत सभा

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- अंग्रेजी नीतियों के कारण हमारा उद्योग तथा व्यापार-वाणिज्य समाप्त हो गया था। अतः मजदूर कृषि की तरफ आ गये थे।

4. रूस की बोल्शेविक क्रान्ति (1917) के कारण किसानों में राजनीतिक चेतना का विस्तार हुआ।

5. <u>अन्य कारण-</u>

जकात कर, जंगली सुअरों की समस्या, बेगार प्रथा, चंवरी कर (1903-कृष्णसिंह), तलवार बंधाई कर (1906 पृथ्वीसिंह), युद्ध कर, चराई कर, भ्रष्टाचार, अफीम की खेती पर नियंत्रण, माफी जागीरों को जब्त किया गया, 1929 की महान आर्थिक मंदी, शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़कों पर नए कर।

राजस्थान में किसान आंदोलनों की विशेषताएँ

- हमारे अधिकांश किसान आन्दोलन जागीरी क्षेत्रों में सम्पन्न हुए थे क्योंकि इन क्षेत्रों में किसानों पर तिहरा नियंत्रण होता था।

(अंग्रेज → राजा → सामन्त → किसान)

- राजस्थान के किसान आन्दोलन अहिंसक थे।
(अपवाद—मेव किसान आन्दोलन)

- बाहरी नेताओं ने राजस्थान के किसान आन्दोलनों में मुख्य भूमिका निभाई थी।
जैसे- • विजयसिंह पथिक (U.P)
• हरिभाऊ उपाध्याय (M.P)
• यासिन खाँ (गुरुग्राम)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- पूँजीपतियों ने आन्दोलन के दौरान किसानों का साथ दिया था।
जैसे जमनालाल बजाज, राम नारायण चौधरी

- हमारे आन्दोलनों में महिलाओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया था।

- हमारे आन्दोलनों के दौरान कई जातीय पंचायतों का गठन किया गया तथा इन पंचायतों ने आन्दोलनों का नेतृत्व भी किया था।

- हमारे किसान आन्दोलनों के दौरान मेले तथा त्यौहारों का प्रयोग किया गया था क्योंकि इसमें लोगों को इकट्ठा करने में आसानी होती थी।

- किसानों ने आर्थिक असमानता के साथ-साथ राजनीतिक व सामाजिक असमानता का भी विरोध किया था।

- विभिन्न राजनीतिक संगठनों तथा समाचार पत्रों ने भी आन्दोलनों में सहयोग किया था।
जैसे- राजस्थान सेवा संघ, प्रजामण्डल

- हमारे आन्दोलनों के दौरान आर्य समाज द्वारा सामाजिक सुधारों के प्रयास किये थे।

- हमारे आन्दोलनों पर रूस की बॉल्शेविक क्रान्ति का भी प्रभाव पड़ा।

राजस्थान में किसान आन्दोलनों का प्रभाव-

1. राजस्थान में जागीरदारी प्रथा का उन्मूलन हुआ और किसानों को भूमि पर अधिकार प्राप्त हुए।

2. भूमि सुधारों के कारण किसानो की आर्थिक व सामाजिक स्थितियों में परिवर्तन आया।

3. किसानों में राजनैतिक चेतना का संचार हुआ।

4. आजादी के बाद किसान नेताओं ने राजनीति में प्रवेश किया जिससे राजस्थान की राजनीति कृषि केन्द्रित हो गई थी।

5. छोटे- छोटे नगर किसान आन्दोलन के केन्द्र थे, जिससे की राजस्थान में 'नगरीय राष्ट्रवाद' का उदय हुआ।

6. किसान आन्दोलनों ने राजस्थान को राष्ट्रीय आन्दोलन से जोड़ा था।

7. किसान आन्दोलनों में महिलाओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया जिससे महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा मिला।
जैसे - अंजना देवी, रमा देवी।

8. आन्दोलनों के दौरान समाचार पत्रों तथा पुस्तकों का प्रकाशन किया गया था जिससे अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता को बल मिला

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

Important facts-

1. अखिल भारतीय क्षेत्रीय महासभा – समर्थन
   - → नीमूचना
   - → अखिल भारतीय जाट महासभा
     - ↓ पुष्कर अधिवेशन – 1925
     - ↓ शेखावाटी / सीकर आन्दोलन

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

2. उपरमाल का डंका – विजयसिंह पथिक द्वारा
   - ↳ मेवाड़ी भाषा
   - ↳ हस्तलिखित समाचार-पत्र

3. "मेवाड़ का वर्तमान शासक" रचना – माणिक्यलाल वर्मा

4. नीमूचणा हत्याकाण्ड –
   - ↳ जाँच समिति → अलवर शासक जयसिंह द्वारा।
     - ↓ छज्जू सिंह आयोग → सदस्य – • छज्जू सिंह • सुल्तान • लाला रामचरण सिंह
   - ↓ खबर प्रकाशित 'पुकार' समाचार-पत्र में → क्षत्रिय महासभा द्वारा

5. जयपुर के किसान आन्दोलन में – 1918 चिड़ावा सेवा समिति
   - ↓ 'असहयोग आन्दोलन के प्रभाव स्वरूप'

6. खुड़ी हत्याकाण्ड – (20 मार्च 1935)
   - ↳ सीकर, बारात पर हमला

7. भूकरका / पलथाना हत्याकाण्ड (सीकर) – (24 अप्रेल 1935)

8. हनुमानपुरा काण्ड (16 May 1934)
   - ↳ सीकर, किसानो के घर जलाये गये।

जनजातीय आन्दोलन

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

* जनजातीय आन्दोलनों के कारण-

- अंग्रेजी शासन के कारण राज्यों में नई प्रशासनिक व्यवस्था आ गई थी परन्तु जनजातियाँ इन परिवर्तनों को समझ नहीं पाई थी।
- जनजातियों की परम्परागत स्थानांतरित कृषि को समाप्त कर दिया गया था।
- सामन्तों द्वारा लिया जाने वाला कर बहुत अधिक था तथा यह नकदी में लिया जाता था, अतः जनजातियाँ साहूकारों के चंगुल में फँस गई थी।
- जनजातियों द्वारा बोलाई कर (राजमार्ग कर) तथा रखवाली कर (गांवों की सुरक्षा के लिए) लिये जाते थे परन्तु अंग्रेजों/(जेम्स टॉड) ने ये कर हटा दिये थे।
- जनजातीय क्षेत्रों की सुरक्षा के लिए मेरवाड़ा बटालियन (१८२२ ई.) तथा मेवाड़ भील कोर (1841 ई.) का गठन किया गया तथा इन सेनाओं का खर्च जनजातियों पर डाल दिया गया।
- अंग्रेजों ने जनजातियों की परम्परागत न्याय व्यवस्था में हस्तक्षेप किया था।
- जनजातियों के सामाजिक रीति-रिवाजों में हस्तक्षेप किया था, जैसे-
  1853 ई. में मेवाड़ महाराणा स्वरूप सिंह ने 'डाकन प्रथा' पर रोक लगा दी थी।
- जनजातियों के वन अधिकार समाप्त कर दिये थे।

- नयी आबकारी नीति के तहत जनजातियाँ महुआ की शराब नहीं बना सकती थी।

- 1881 ई. की जनगणना के दौरान जनजातियों में कई अफवाहें थी, अतः इनमें सरकार के खिलाफ आक्रोश था।

भगत आन्दोलन-

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- वागड़ क्षेत्र में भील जनजाति द्वारा यह आन्दोलन शुरु किया गया।
- नेता- गोविन्द गिरी, सुरजी भगत

* **गोविन्द गिरी** → (गुरु- राजगिरी)

- जन्म- बेड़सा/बांसियाँ (डूँगरपुर) नामक गाँव में बंजारा (घुमक्कड़) परिवार में हुआ था।

- यह स्वामी दयानन्द सरस्वती से प्रेरित थे। इन्होंने स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग करना प्रारम्भ करवाया।

- आदिवासियों को हिन्दू धर्म में रखने के लिए इन्होंने 'भगत पंथ' की स्थापना की। इन्होंने भीलों का नैतिक तथा आध्यात्मिक उत्थान किया।

- भीलों की आपसी एकता को बढ़ाने के लिए 1883 ई. में इन्होंने सम्प सभा की स्थापना की।

(सिरोही) → गोविन्द गिरी, सूरजी भगत

- इन्होंने गाँवों में कोतवालों की नियुक्तियाँ की तथा पंचायतें स्थापित की गई।

* भगत पंथ (1911 ई.)- (गोविन्द गिरी द्वारा)

- 1903 ई. में मानगढ़ पहाड़ी (बांसवाड़ा) पर सम्प सभा का प्रथम अधिवेशन आयोजित किया गया।

- 1910 ई. में सम्प सभा ने 33 माँगे सरकार के सामने रखी लेकिन सरकार ने इन माँगों पर कोई ध्यान नहीं दिया।

- इन्होंने एकेश्वरवाद (एक ही ईश्वर) पर बल दिया।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

मानगढ़ हत्याकाण्ड (17 Nov. 1913 ई.)→ बांसवाड़ा

- सम्प सभा के अधिवेशन पर पुलिस द्वारा फायरिंग की गई तथा उसमें 1500 से अधिक भील शहीद हो गये।
इसे "राजस्थान का जलियाँवाला बाग हत्याकांड" कहा जाता है।

- गोविन्द गिरी तथा पूँजा धीरजी को गिरफ्तार कर लिया गया। 7 वर्ष बाद गोविन्द गिरी को रिहा कर दिया गया था। इन्होंने अपना शेष जीवन गुजरात के काम्बिया गाँव में शांतिपूर्वक गुजारा।

- गोविन्द गिरी अहिंसा के समर्थक थे, तथा इनका सफेद झण्डा शांति का प्रतीक था।

- झालोद (गुजरात) नामक स्थान पर गोविन्द गिरी अपने अनुयायियों को उपदेश देते थे।

* 1908 ई. में गोविन्द गिरी ईडर (गुजरात) चले गये थे, तथा भीलों में राजनीतिक चेतना का संचार किया।
* 1910 ई. में पालपट्टा (ईडर) के सामन्त को भीलों के साथ एक समझौता करना पड़ा था। (21 माँगे)

- वर्ष 2012 में मानगढ़ काण्ड की स्मृति में गहलोत सरकार ने शताब्दी वर्ष बनाया।

एकी आन्दोलन / भोमट या भील आन्दोलन-

- गोगुन्दा, झाडोल (भोमट) तथा कोटड़ा (उदयपुर) क्षेत्रों में भील तथा गरासिया जनजातियों द्वारा यह आन्दोलन किया गया।

- यह आन्दोलन मातृकुण्डिया (चित्तौड़गढ़) नामक स्थान से प्रारम्भ हुआ।
  - १९२१ ई० में

- नेता- मोतीलाल तेजावत
  - इनका जन्म एक ओसवाल परिवार में कोल्यारी नामक गाँव में हुआ।
  - यह झाडोल ठिकाने में कार्य करते थे लेकिन बाद में आन्दोलन में शामिल हो गये।
  - गोकुल जी जाट ने भी इनका समर्थन किया।

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- मोतीलाल तेजावत ने २१ माँगे सरकार (मेवाड़ महाराणा) के सामने रखी।
  - इन माँगों को 'मेवाड़ की पुकार' कहा जाता है।

- इन २१ माँगों में से १८ स्वीकार की गई- बेगार, वनसम्पदा, सुअर समस्या। लेकिन जनजातियाँ इससे संतुष्ट नहीं थी।

- धीरे- धीरे आन्दोलन अन्य क्षेत्रों में भी फैल गया।
  - वागड़
  - सिरोही
  - ईडर
  - विजयनगर (गुजरात)

नीमड़ा हत्याकाण्ड (७ मार्च १९२२ ई.)

- भीलों की एक सभा पर पुलिस द्वारा फायरिंग की गई तथा इसमें १२०० से अधिक भील शहीद हो गये।

- मोतीलाल तेजावत फरार हो गये।
- 1929 ई. में गाँधीजी के कहने पर इन्होंने ईडर (गुजरात) में आत्मसमर्पण कर दिया।
- 1936 ई. में माणिक्यलाल कोठारी (गाँधीजी के P.A) के हस्तक्षेप से महाइन्द्राज सभा ने मोतीलाल तेजावत को रिहा कर दिया था।
- इन्होंने अपना शेष जीवन गाँधीजी के रचनात्मक कार्यक्रम में बिताया।
- इन्हें 'आदिवासियों का मसीहा' कहा जाता है।
- आदिवासी इन्हें 'बावजी' कहते थे।
- कालान्तर में मोतीलाल तेजावत ने मेवाड़ प्रजामण्डल आन्दोलन में भी भाग लिया था।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

✱ महाइन्द्राज सभा–

- यह मेवाड़ का उच्चतम न्यायलय था।
- 1880 ई. में महाराणा सज्जनसिंह ने इसकी स्थापना की थी।
- अन्य नाम - इजलास खास

NOTE- गोविन्द गिरी को मृत्युदण्ड दिया गया था लेकिन R.P बारी ने इनकी सजा को आजीवन कारावास में बदलवाया था।

सिरोही का एकी आन्दोलन

- भील व गरासिया जनजाति द्वारा आन्दोलन चलाया गया।
- नेता- मोतीलाल तेजावत
- सिरोही के आदिवासी मोतीलाल तेजावत को 'मेवाड़ का गाँधी' कहते हैं।

- ईडर प्रजामण्डल ने आन्दोलन को समर्थन दिया। सिरोही के रमाकान्त मालवीय ने किसानों को समझाने के लिए विजयसिंह पथिक को बुलाया।

- विजयसिंह पथिक ने किसानों तथा मोतीलाल तेजावत से मुलाकात की।

हत्याकाण्ड
- सियावा (सिरोही) → (12 April 1922 ई.)
- भूला / बालोलिया (रोहिड़ा हत्याकाण्ड) → (5/6 May 1922 ई.)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- 1923 ई. में छोछर नामक स्थान पर तेजावत ने आन्दोलन को पुनः प्रारम्भ करने का प्रयास किया। लेकिन अब वे आदिवासी आन्दोलन से अलग हो गये।

मीणा आन्दोलन-

- 1924 ई. में आपराधिक जनजाति Act पारित किया गया तथा इसमें मीणा जनजाति को शामिल कर लिया गया।

- 1930 ई. में जरायम पेशा अधिनियम पारित किया गया। इसके तहत प्रत्येक मीणा महिला-पुरुष को थाने में हाजरी लगाने हेतु अनिवार्य किया गया।

- अतः इसके खिलाफ मीणा जनजाति ने आन्दोलन चलाया।

- नेता- छोटूराम, जवाहर राम, महादेव।

- 1933 ई. में 'मीणा क्षेत्रीय महासभा' का गठन किया गया।
  - माँग- जरायम पेशा कानून की समाप्ति।

MAHECHA PUBLICATION

नीम का थाना (सीकर) सम्मेलन- (1944 ई.)

- 'संत मगन सागर' जी ने इसका आयोजन किया।
  - इन्होंने मीन पुराण नामक पुस्तक लिखी तथा इसमें मीणाओं का गौरवशाली इतिहास बताया गया।

- 1944 ई. में मीणा सुधार समिति का गठन किया गया।

सदस्य-
- लक्ष्मीनारायण अग्रवाल
- बंशीधर शर्मा
- राजेन्द्र कुमार अजेय

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

बागावास (जयपुर) सम्मेलन (28 अक्टू. 1946 ई.)

- इस सम्मेलन में 26 हजार चौकीदार मीणाओं ने अपने पदों से इस्तीफा दे दिया, तथा इसे मुक्ति दिवस के रूप में मनाया।

- 1952 ई. में जरायम पेशा अधिनियम समाप्त कर दिया गया था।
  - NOTE - 1930 में शुरू - 1952 में समाप्त

- अन्य आन्दोलन- नागरिक असमानता
  - उनियारा
  - बैरवा जाति

मेर विद्रोह- (1818-24 ई.)

- मुख्य केन्द्र - झाक (जोधपुर)
- अंग्रेजों ने इसे दबा दिया।
- 1822 ई. - मेर रेजीमेंट का गठन।
  - मुख्यालय- ब्यावर (AJMER)

भील विद्रोह- (1881 ई.)

- मुख्य केन्द्र- बारापाल
- नेता - नीमा, खेमा, जोयता

महाराणा सज्जनसिंह के सचिव श्यामलदास जी ने ऋषभदेव नामक स्थान पर समझौता करवाया।

मीणा विद्रोह- (1851-60 ई.)

- मुख्य केन्द्र- जहाजपुर (भीलवाड़ा)
- अंग्रेजों ने इसे दबा दिया और 1855 ई. में 'मीणा बटालियन' का गठन किया गया।
  - H.Q.- देवली (टोंक)
  - 42 वीं देवली रेजीमेंट (अन्य नाम)

NOTE- 1921 ई. में 42 वीं देवली रेजीमेंट & 43 वीं एरिनपुरा रेजीमेंट को मिलाकर "मीणा कोर" का गठन किया गया।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

प्रजामण्डल आन्दोलन

- 1927 ई. → अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् (बॉम्बे)
  - → अध्यक्ष - दीवान रामचन्द्र राव
  - → उपाध्यक्ष - विजयसिंह पथिक
- राजपुताना एवं मध्य भारत के सचिव — रामनारायण चौधरी
- 1928 ई. → राजपुताना देशी राज्य लोक परिषद्
  - → प्रथम अधिवेशन — अजमेर - 1931 ई.
  - → अध्यक्ष - रामनारायण चौधरी
- 1928 ई. के कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में कांग्रेस ने रियासतों में उत्तरदायी शासन की माँग की (इस समय अध्यक्ष - मोतीलाल नेहरू)
- 1938 ई. में हरिपुरा (गुजरात) अधिवेशन में कान्ग्रेस ने प्रजामण्डल आन्दोलन को समर्थन दिया।
- कान्ग्रेस के अध्यक्ष - सुभाष चन्द्र बोस

- 1931 → • जयपुर • बूंदी
- 1934 → • मारवाड़ • हाड़ौती
- 1936 → • बीकानेर • धौलपुर
- 1938 → • मेवाड़ • शाहपुरा • अलवर • भरतपुर • करौली
- 1939 → • कोटा • किशनगढ़ • सिरोही
- 1942 → कुंभलगढ़
- 1943 → बाँसवाड़ा

- 1944 → डूँगरपुर
- 1945 → जैसलमेर, प्रतापगढ़
- 1946 → झालावाड़

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

जब	जयपुर	१९३१
	बूंदी	३१
माँ	मारवाड़	३४
हाबी	हाड़ौती	३४
	बीकानेर	३६
धो	धौलपुर	३६
मे	मेवाड़	३८
अभ	अलवर	३८
	भरतपुर	३८
से	शाहपुरा	३८
का	करौली	३८
की	किशनगढ़	३९
को	कोटा	३९
सकुशल	सिरोही	३९
	कुशलगढ़	४२
बड़ा	बांसवाड़ा	४३
	डूंगरपुर	४४
जाप	जै.	४५
	प्रतापगढ़	४५
झालूंगा	झालावाड़	४६

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

जयपुर प्रजामण्डल – १९३१ ई.

- संस्थापक – कर्पूर चन्द्र पाटनी
- १९३६ ई. में जमनालाल बजाज ने प्रजामण्डल का पुनर्गठन किया।
- अध्यक्ष – चिरंजीलाल मिश्र
- मंत्री – हीरालाल शास्त्री
- प्रजामण्डल ने शेखावाटी किसान आन्दोलन को समर्थन दिया।
- प्रथम अधिवेशन – ८/९ मई १९३८ ई.
- स्थान – नथमल का कटला (जयपुर) → अध्यक्ष – जमनालाल बजाज
- १० मई १९३८ को कस्तूरबा गाँधी ने महिलाओं की एक सभा को सम्बोधित किया।
- जयपुर रियासत ने प्रजामण्डल पर पाबन्दी लगा दी। प्रजामण्डल ने इसका विरोध किया तथा सत्याग्रह प्रारम्भ किया।
- जमनालाल बजाज को गिरफ्तार किया गया।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

मोतीलाल दिवस - 5 अप्रैल 1931

जेंटलमेन एग्रीमेंट (17 Sep. 1942 ई.)

- जयपुर प्रधानमंत्री मिर्जा इस्माइल तथा प्रजामण्डल के अध्यक्ष हीरालाल शास्त्री के मध्य।

समझौते की शर्तें-

- जयपुर रियासत उत्तरदायी शासन व्यवस्था की स्थापना करेगी।
- जयपुर रियासत अंग्रेजों की सहायता नहीं करेगी।
- जयपुर रियासत ब्रिटिश भारत के विद्रोही को गिरफ्तार नहीं करेगी तथा प्रजामण्डल उसे शरण दे सकता है।
- प्रजामण्डल शांतिपूर्ण धरना, जुलूस, प्रदर्शन इत्यादी कर सकता है।
- प्रजामण्डल भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग नहीं लेगा।

आजाद मोर्चा-

- प्रजामण्डल के असंतुष्ट कार्यकर्त्ताओं ने बाबा हरीशचन्द्र के नेतृत्व में इसका गठन किया था तथा भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया था।
- आजाद मोर्चा का अन्य सदस्य -
  - रामकरण जोशी
  - दौलतराम भण्डारी
  - गुलाब चन्द कासलीवाल
- 1945 ई. में नेहरू जी के कहने पर आजाद मोर्चा का प्रजामण्डल में विलय कर दिया।

* **देवीशंकर तिवाड़ी-**

- 1943 ई. में जमनालाल बजाज की याद में लोकवाणी नामक समाचार पत्र का प्रकाशन किया।
- 1946 ई. में इन्हें जयपुर रियासत में गैर सरकारी मंत्री बनाया गया था। (राजस्थान में पहली बार)
- कालान्तर में इन्हें RPSC का अध्यक्ष बनाया गया था। (सबसे लम्बा कार्यकाल)
- जयपुर प्रजामण्डल के अध्यक्ष भी रहे।

बून्दी प्रजामण्डल-

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- संस्थापक - 1. नित्यानन्द
  2. कांतिलाल चौथानी
  3. ऋषिदत्त मेहता
    - संगठन - बून्दी देशी राज्य लोक परिषद्
    - समाचार पत्र- राजस्थान (साप्ताहिक)
- 1923 ई. में यह समाचार पत्र ब्यावर से प्रकाशित होता था। इसमें हाड़ौती क्षेत्र की खबरें प्रकाशित होती थी।

मारवाड़ प्रजामण्डल :-

- 1918 ई. में मरुधर हितकारिणी सभा की स्थापना चांदमल सुराणा द्वारा की गई।
- 1923 ई. में इस सभा का पुनर्गठन (जयनारायण व्यास द्वारा) किया गया और इसका नाम बदलकर मारवाड़ हितकारिणी सभा कर दिया गया।

- बाद में इसे मारवाड़ यूथ लीग में मिला दिया गया।
- 1920 ई. में 'मारवाड़ सेवा संघ' की स्थापना जय नारायण व्यास द्वारा की गई।
  - → तौल आन्दोलन (1 सैर में 100 तौल के स्थान पर 80 तौल कर दिये थे)
- 1929 ई. में 'मारवाड़ देशी राज्य लोक परिषद' का गठन हुआ।
  - → (जयनारायण व्यास द्वारा)
- यह संगठन अपना प्रथम अधिवेशन जोधपुर में आयोजित करना चाहता था अतः रियासत ने नेताओं को गिरफ्तार कर लिया जैसे- जयनारायण व्यास, आनन्दराज सुराणा, भंवरलाल सर्राफ
- नागौर की एक विशेष अदालत में इनके खिलाफ मुकदमा चलाया गया था।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

* प्रथम अधिवेशन- पुष्कर (24, 25 Nov.-1931 ई. में)

- अध्यक्ष- चाँदकरण शारदा (अजमेर)
- उस अधिवेशन में मणिलाल कोठारी, काका कालेलकर तथा कस्तूरबा गाँधी ने भाग लिया था।
- 10 मई 1931 ई. में जयनारायण व्यास ने मारवाड़ यूथ लीग का गठन किया।
- इस संगठन का नाम बदलकर बाल भारत सभा कर दिया था।
- 1932 ई. में 'छगनराज चौपासनिवाला' ने जोधपुर में भारतीय झंडा फहराया था।
- 1934 ई. में मारवाड़ प्रजामण्डल का गठन किया तथा इसका अध्यक्ष भंवरलाल सर्राफ को बनाया गया।

1936 — कृष्णा दिवस (बॉम्बे)
1936 — शिक्षा दिवस (जोधपुर)

- 1936 ई. में अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद का अधिवेशन कराची में आयोजित किया गया।
- जयनारायण व्यास को इसमें महामंत्री बनाया गया। अतः जोधपुर रियासत ने जयनारायण व्यास के प्रवेश पर पाबन्दी लगा दी।
- बीकानेर महाराजा गंगासिंह ने जोधपुर के PM डोनाल्ड फील्ड को पत्र लिखा तथा उस पाबन्दी को हटवाया।
- भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान व्यास जी को सिवाणा किले में
- नजरबन्द कर दिया गया गया था तथा प्रजामण्डल के अन्य नेताओं को जालौर किले में नजरबन्द किया था।

* मारवाड़ लोकपरिषद - (1938 ई.)

- अध्यक्ष - रणछौड़ दास गट्टानी
  उद्देश्य - उत्तरदायी शासन की स्थापना।

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

- इस संगठन ने मारवाड़ के किसान आन्दोलनों का समर्थन किया था।
- 1941 ई. में जवाहरलाल नेहरू को जोधपुर नगरपालिका का अध्यक्ष बनाया गया।

जोधपुर नगरपालिका → 1945 में पुनः चुनाव → नये अध्यक्ष - द्वारिकादास पुरोहित

- 1945 ई. में नेहरु जी के सुझाव पर डोनाल्ड फील्ड के स्थान पर C.S वेकंटाचारी को जोधपुर का PM बनाया गया।

* <u>चण्डावल घटना (पाली)</u>- २८ मार्च १९४२

- चण्डावल के सामंत ने किसान सभा पर लाठीचार्ज करवाया। जिसमें 6 किसान शहीद हुए (मारवाड़ लोकपरिषद् की सभा पर हमला)
  - महात्मा गाँधी ने 'हरिजन' समाचार पत्र में प्रकाशित करवाया।
- जाँच आयोग - श्री प्रकाश

* <u>डाबड़ा काण्ड (डीडवाना, नागौर)</u>- 13 मार्च १९४७

- डीडवाना के सामंत ने किसान सभा पर लाठीचार्ज करवाया। जिसमें कई किसान शहीद हुए, Ex. मोतीराम जी, चुन्नीलाल जी
  - मथुरादास माथुर घायल हुए।
    - कथन- "जीवन को झकझोर देने वाली घटना"।

* <u>मारवाड़ सत्याग्रह दिवस</u>- २६ July १९४२

- महिमा देवी किंकर के नेतृत्व में महिलाओं ने भी सत्याग्रह में भाग लिया था।

* मारवाड़ दरबार पब्लिक सेफ्टी अध्यादेश - १९३२ ई.

* <u>मारवाड़ प्रजामण्डल में शामिल महिलाएँ</u>-

- गौरजा व्यास
- महिमा देवी किंकर
- सावित्री देवी भाटी
- रमादेवी व्यास
- दयावती
- कृष्णाकुमारी
- सुरजदेवी

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

जयनारायण व्यास

पुस्तकें	समाचार-पत्र
1. मारवाड़ की अवस्था	1. PeeP (English) दिल्ली से
2. पोपाबाई की पोल	2. अखण्ड भारत (हिन्दी) – बॉम्बे
3. मार्च से संघर्ष क्यों ?	3. तरुण राजस्थान (हिन्दी) - ब्यावर
4. गरीबों की आवाज	4. आगीवाण (राजस्थानी) - ब्यावर

आगीवाण → (राजस्थानी भाषा का पहला राजनीतिक समाचार पत्र) → पाक्षिक (15 days)

★ 1938 ई. में सुभाष चन्द्र बोस तथा विजयी लक्ष्मी पंडित (नेहरू जी की बहन) ने जोधपुर की यात्रा की।

हाड़ौती प्रजामण्डल :- 1934

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- संस्थापक - नयनूराम शर्मा
  हाजी फैज मोहम्मद
- प्रजामण्डल ने बेगार विरोधी आन्दोलन चलाया था।
- सूरजदेवी माथुर व सावित्री देवी ने एक सभा में उत्तरदायी शासन के गीत गाए। (मारवाड़ प्रजामण्डल से संबंधित)

बीकानेर प्रजामण्डल-

- कन्हैयालाल ढूंढ तथा स्वामी गोपालदास द्वारा 1907 ई. में 'सर्वहितकारिणी सभा (चुरु) का गठन किया गया जिसे 'चुरु की कांग्रेस' भी कहा जाता है।

➤ इस सभा द्वारा दो विद्यालयों की स्थापना की गई थी-

1. कबीर पाठशाला → दलितों हेतु
2. पुत्री पाठशाला → लड़कियों हेतु

➤ 20 जनवरी 1930 ई. को स्वामी गोपालदास तथा 'चन्दनमल बहड़' ने चुरु के धर्मस्तूप पर भारतीय झण्डा फहरा दिया था।

➤ 1931 ई. में दूसरे गोलमेज सम्मेलन के दौरान बीकानेर महाराजा गंगासिंह के खिलाफ 'बीकानेर दिग्दर्शन' नामक पर्चे बाँटे गये।

बीकानेर षड्यंत्र मुकदमा - 1932 ई.

➤ 'बीकानेर दिग्दर्शन' पर्चे के कारण कई राजनीतिक कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार किया गया था।

जैसे-
- स्वामी गोपालदास
- सत्यानारायण सर्राफ
- चंदमहल बहड़
- खूबराम सर्राफ

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

➤ 1936 ई. में कलकत्ता में प्रजामण्डल स्थापित किया गया था।

संस्थापक -
- वैद्य मघाराम
- लक्ष्मी देवी आचार्य (महिला)
- मुक्ता प्रसाद
- रघुवर दयाल गोयल

➤ 1942 ई. बीकानेर देशी राज्य लोक परिषद् का गठन रघुवर दयाल गोयल द्वारा किया गया था। (उत्तरदायी शासन की स्थापना हेतु)

➤ 26 अक्टूबर 1944 ई. को महाराजा सार्दुल सिंह के खिलाफ बीकानेर दमन विरोधी दिवस मनाया गया था।

➤ 1 जुलाई 1946 ई. को पुलिस ने प्रजामण्डल के जुलुस पर फायरिंग कर दी। इस घटना में बीरबल नामक व्यक्ति शहीद हो गया।
(रायसिंहनगर, श्री गंगानगर की घटना)

➥ 17 जुलाई को बीकानेर रियासत में बीरबल दिवस मनाया गया।

➥ इंदिरा गाँधी नहर की जैसलमेर शाखा का नाम बीरबल शाखा है।

बीकानेर के किसान आन्दोलन-

- उदरासर -1937 ई. — जीवणराम (बीकानेर रियासत का प्रथम जागीरी PM)
- महाजन -1938 ई.
- दुधवा खारा - 1944 ई. — हनुमान सिंह आर्य
- कांगड़ा (चुरु)- 1946 ई. — मेघसिंह आर्य
- गंगनहर - 1930-31 ई. — दरबार सिंह, करतार सिंह → जमीदारा संघ
- आबियाना - सिंचाई कर

- बीकानेर सुरक्षा अधिनियम (1932) — गंगासिंह द्वारा
  ↳ काला कानून की संज्ञा।
- शामिल महिलाएँ- रूकमा देवी, गीता देवी, लक्ष्मी देवी आचार्य

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

धौलपुर प्रजामण्डल – (1936 ई.)

- आर्य समाज के नेता स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती ने धौलपुर में राजनीतिक चेतना का संचार किया था।

1910	1934	1936
↓	↓	↓
आचार सुधारिणी सभा	नागरी प्रचारिणी सभा	प्रजामण्डल
↓	↓	↓
1. ज्वाला प्रसाद जिज्ञासु	1. ज्वाला प्रसाद जिज्ञासु	1. ज्वाला प्रसाद जिज्ञासु
2. यमुना प्रसाद	2. इन्दुलाल	2. कृष्ण दत्त पालीवाल
· समाज सुधार हेतु	· हिन्दी भाषा के प्रचार प्रसार हेतु	

तसीमो कांड (11 अप्रैल, 1947 ई.)

- प्रजामण्डल की सभा पर पुलिस द्वारा फायरिंग की गई तथा इसमें दो कार्यकर्ता शहीद हो गये –
  1. पंचम सिंह
  2. छत्तर सिंह

मेवाड़ प्रजामण्डल –

- इस प्रजामण्डल की स्थापना हरिपुरा अधिवेशन के ठीक बाद हुई।
  - → 24 अप्रैल 1938 ई.
  - → संस्थापक
    - बलवन्त सिंह मेहता (अध्यक्ष)
    - भूरेलाल बयां (उपाध्यक्ष)
    - माणिक्यलाल वर्मा (महामंत्री)

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

- प्रजामण्डल की स्थापना बलवन्त सिंह मेहता के घर (साहित्य कुटीर) पर की गई थी।

- मेवाड़ रियासत ने प्रजामण्डल पर रोक लगा दी। माणिक्यलाल वर्मा ने अजमेर से प्रजामण्डल चलाया।
- माणिक्यलाल वर्मा ने अजमेर में ही 'मेवाड़ का वर्तमान शासक' नामक पुस्तक लिखी। इस पुस्तक में मेवाड़ के शासन की आलोचना की गई।
- प्रजामण्डल ने सत्याग्रह प्रारम्भ कर दिया।
  - प्रथम सत्याग्रही = रमेशचन्द्र व्यास (भीलवाड़ा)
- भूरेलाल बया को सराड़ा किले (उदयपुर) में नजरबन्द कर दिया गया। सराड़ा किले को 'मेवाड़ का कालापानी' कहा जाता है।
- वर्मा जी को गिरफ्तार कर लिया गया। गाँधीजी ने अपने 'हरिजन' समाचार पत्र में इसकी आलोचना की

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

* **प्रथम अधिवेशन** - १९४५ ई.

- अध्यक्ष - माणिक्यलाल वर्मा, स्थान- उदयपुर
- J. B कृपलानी ने अधिवेशन का उद्घाटन किया।
- विजयलक्ष्मी पंडित ने 'खादी प्रदर्शनी' का उद्घाटन किया।
- भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान नारायणी देवी वर्मा तथा भगवती देवी बिश्नोई तथा सुशीला को जेल भेजा गया था।
- १९४६ ई. में अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद का ७ वाँ अधिवेशन उदयपुर के सलेटिया मैदान में आयोजित किया गया।
  - अध्यक्ष - प. जवाहर लाल नेहरू
  - इस अधिवेशन में शेख अब्दुल्ला ने भी भाग लिया।
- इस प्रजामण्डल में शामिल महिलाएँ —
  - नारायणी देवी
  - भगवती देवी
  - स्नेहलता
  - सीमा देवी

- प्रजामण्डल के अन्य केन्द्र —
  - मेवाड़ में
    - (i) भीलवाड़ा
    - (ii) नाथद्वारा (राजसमंद)
      नेता – (नरेन्द्रपाल)
  - मेवाड़ से बाहर
    - (i) बॉम्बे
    - (ii) नागपुर — महाराष्ट्र
    - (iii) जलगाँव — महाराष्ट्र
    - (iv) आकोला — महाराष्ट्र

शाहपुरा प्रजामण्डल –

- माणिक्यलाल वर्मा की प्रेरणा से प्रजामण्डल की स्थापना हुई।
- संस्थापक - लादूराम व्यास, रमेश चन्द्र ओझा
- सबसे पहले उत्तरदायी शासन शाहपुरा रियासत में स्थापित किया गया था।
- महाराजा सुदर्शन देव ने गोकुल लाल असावा को प्रधानमंत्री बना दिया था।

अलवर प्रजामण्डल –

- संस्थापक - हरिनारायण शर्मा
- प्रजामण्डल ने भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग नहीं लिया था।
- प्रथम अधिवेशन - 1944 ई.
  ↳ अध्यक्ष = भवानी शंकर शर्मा
- हरिनारायण शर्मा के अन्य संगठन –
  - आदिवासी संघ (जनजातियों के लिए)
  - वाल्मीकि संघ (दलित)
  - अस्पृश्यता निवारण संघ

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

भरतपुर प्रजामण्डल -

- संस्थापक - जुगल किशोर चतुर्वेदी (राजस्थान का नेहरू)
  मास्टर आदित्येन्द्र
  गोपीलाल यादव (अध्यक्ष)
  किशनलाल जोशी
  ↓
- (शेखावाटी किसान आन्दोलन में भाग लिया)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- प्रजामण्डल की स्थापना - रेवाड़ी (हरियाणा) में की गई।
- प्रजामण्डल का समाचार पत्र - वैभव

दिवस

- जापान दिवस
  16-17 Aug. 1945
  - महाराजा बृजेन्द्र सिंह के नेतृत्व में
- इण्डोनेशिया दिवस
  28 Oct. 1945 ई.
  - वसंत कुमार शर्मा के नेतृत्व में

* **हिन्दी साहित्य समिति** - 1912 ई.

- जगन्नाथ दास अधिकारी (संस्थापक)
  समाचार पत्र - 'वैभव'
- 1927 ई. में भरतपुर में हिन्दी सम्मेलन का आयोजन किया गया।
  ↓
  - अध्यक्ष - गौरीशंकर हीरानन्द ओझा
  - सदस्य - रवीन्द्रनाथ टैगोर
    जमनालाल बजाज

- महाराजा किशनसिंह ने हिन्दी को भरतपुर की राष्ट्रभाषा घोषित किया। अंग्रेजों ने किशनसिंह को हटा दिया।

- भरतपुर का नया प्रशासक – डंकन मैकेंजी

NOTE- भरतपुर शासक किशनसिंह द्वारा उत्तरदायी शासन की माँग को समर्थन देने के कारण राजगद्दी से हाथ धोना पड़ा।

प्रजामण्डल – संस्थापक –
- जुगलकिशोर चतुर्वेदी (राजस्थान का नेहरू)
- मास्टर आदित्येन्द्र नाथ
- गोपीलाल यादव (अध्यक्ष)
- किशनलाल जोशी
  - इन्होंने शेखावाटी किसान आन्दोलन में भाग लिया।

↓ स्थापना ↓ रेवाड़ी (HR)

- रियासत ने प्रजामण्डल का पंजीकरण करने से मना कर दिया था।
  - अतः प्रजामण्डल ने प्रारम्भ किया।
  - कई महिलाओं को जेल भेजा गया।

    Ex. • सुशीला त्रिपाठी
    • राजेश्वरी
    • धर्मवती

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

- कालान्तर में प्रजामण्डल का पंजीकरण 'भरतपुर प्रजा परिषद' नाम से किया गया।

करौली प्रजामण्डल- (1938 ई.)

- पूर्णसिंह व मदनसिंह → राजनीतिक चेतना का संचार
  ↓
  Wife- सरदार कंवर → दोनों ने किसान आन्दोलन चलाया

- संस्थापक -
  - त्रिलोकचन्द माथुर
  - चिरंजीलाल शर्मा
  - कुंवर सिंह वर्मा
    ↓

→ 1927 ई. में करौली में किसान आन्दोलन का नेतृत्व किया था।

कोटा प्रजामण्डल-

संस्थापक - नयनूराम शर्मा और अभिन्न हरि
↳ प्रथम अधिवेशन के अध्यक्ष

अधिवेशन

- 1939 ई. → मांगरोल (बारां) → अध्यक्ष - नयनूराम शर्मा
- 1940 ई. → कोटा → अध्यक्ष - अभिन्न हरि
  - इस अधिवेशन में विजयसिंह पथिक ने भी भाग लिया था।

- भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान मोतीलाल जैन के नेतृत्व में प्रजामण्डल के कार्यकर्ताओं ने कोटा के नगर प्रशासन पर अधिकार कर लिया था।
- कॉलेज की छात्राओं ने रामपुरा पुलिस थाने पर अधिकार कर लिया था।

किशनगढ़ प्रजामण्डल-

- संस्थापक -
  - कांतिचन्द चौथाणी
  - जमानशाह

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300794518, 7610010054

सिरोही प्रजामण्डल-

स्थापना → बॉम्बे

संस्थापक -
- गोकुलभाई भट्ट (राज. का गाँधी)
- वृद्धि शंकर त्रिवेदी (पहली बार स्थापना)

- प्रजामण्डल का सर्वाधिक बार प्रचार-प्रसार = चुन्नीलाल टेवटा

कुशलगढ़ प्रजामण्डल- 1942 ई. → संस्थापक - भंवरलाल निगम

बाँसवाड़ा प्रजामण्डल-

- संस्थापक-
  - भूपेन्द्र नाथ त्रिवेदी → समाचार पत्र -'संग्राम' (बॉम्बे से प्रकाशित)
  - मणिशंकर नागर
  - धूलजी भाई भावसार
- विजया बहिन भावसार (धूलजी भाई भावसार की पत्नी) ने "महिला मण्डल" का गठन किया।

डूँगरपुर प्रजामण्डल- (बाल गंगाधर तिलक की पुण्यतिथि के अवसर पर)

- संस्थापक - • भोगीलाल पांड्या (वागड़ का गाँधी)
  - हरिदेव जोशी
  - गौरीशंकर उपाध्याय → समाचार पत्र ↳ 'सेवक'

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- स्थापना- 1 Aug 1944 ई. (तिलक जी की पुण्यतिथि के अवसर पर)
- प्रजामण्डल ने प्रयाण सभाओं का आयोजन किया था।

रास्तापाल घटना (19 जून 1947 ई.)

- उस घटना में अध्यापक 'नानाभाई' तथा भील बालिका कालीबाई (13 वर्षीय) शहीद हो गये थे।
- उन दोनों की मूर्तियाँ 'गेपसागर तालाब' (डूँगरपुर) के पास स्थित है।
- बालिका शिक्षा के क्षेत्र में कालीबाई पुरस्कार दिया जाता है।
- उस घटना में एक अन्य अध्यापक सेंगा भाई घायल हो गये।

पूनावाड़ा घटना - मई 1947 ई.

- इस घटना में अध्यापक शिवराम भील घायल हो गये थे।

जैसलमेर प्रजामण्डल- (1945 ई.)

- संस्थापक - मीठालाल व्यास
- प्रजामण्डल की स्थापना - जोधपुर
- रघुनाथ सिंह ने 'माहेश्वरी नवयुवक मण्डल' का गठन किया था।
- 16 NOV. 1930 को जैसलमेर में 'जवाहर दिवस' मनाया गया।
- जैसलमेर को नेहरू जी ने 8 वां wonder (चमत्कार) कहा।

प्रतापगढ़ प्रजामण्डल- (1945 ई.)

- संस्थापक - अमृतलाल पाठक
  - चुन्नीलाल प्रभाकर
  - ठक्कर बापा → मीणा आन्दोलन के समय ठक्कर बापा ने जयपुर के PM को पत्र लिखा।
    - ठक्कर बापा ↓ 'भील सेवा मण्डल' की स्थापना (1922 ई.)
    - PM ↓ 'मिर्जा इस्माइल'

झालावाड़ प्रजामण्डल- (1946 ई.)

- संस्थापक— · मांगीलाल भव्य
  · मकबूल आलम
  · कन्हैयालाल मित्तल

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- राजराणा हरिशचन्द्र के नेतृत्व में उत्तरदायी शासन स्थापित किया गया और राजा स्वयं प्रधानमंत्री बना।

MAHECHA PUBLICATION

प्रजामण्डल आन्दोलनों का महत्व-

1. राजनीतिक महत्व-

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- रियासतों में उत्तरदायी शासन की स्थापना की गई।
  जैसे- गोकुल लाल असावा के नेतृत्व में शाहपुरा में राजस्थान की प्रथम उत्तरदायी सरकार स्थापित की गई।
- विभिन्न रियासतों में संविधान निर्माण की प्रकिया शुरु हुई, जिससे संवैधानिक शासन का मार्ग प्रशस्त हुआ।
  जैसे- KM मुंशी ने मेवाड़ रियासत का संविधान तैयार किया था।
- इन आन्दोलनों के कारण राजस्थान की जनता में राजनीतिक चेतना का विकास हुआ तथा प्रजामण्डल के नेताओं ने शासन में
- भागीदारी की माँग उठाई,
  जैसे- देवीशंकर तिवाड़ी को जयपुर मंत्रीमण्डल में शामिल किया गया।
- प्रजामण्डल के नेता कांग्रेस के अधिवेशनों में भाग लेते थे, जिससे राजस्थान राष्ट्रीय आन्दोलन से जुड़ा तथा राष्ट्रीय चेतना का संचार हुआ।
- हमारे प्रजामण्डलों ने भारत छोड़ो आन्दोलनों में भाग लिया था, जिससे हमारी राष्ट्रीय एकता को बल मिला।
- प्रजामण्डल ने रियासतों के भारत में विलय की माँग की अतः राज. का एकीकरण हुआ।
- प्रजामण्डलों द्वारा विभिन्न समाचार-पत्रों व पुस्तकों का प्रकाशन किया गया, जिससे अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता को बढ़ावा मिला।
  जैसे- वैभव संग्राम, विजय (जैसलमेर)

- अन्ततः राजस्थान में राजतंत्र की समाप्ति हुई तथा लोकतंत्र की स्थापना हुई।

सामाजिक महत्व-

1. प्रजामण्डलों ने सामाजिक कुरीतियों का विरोध किया था।
   जैसे- हरविलास शारदा के प्रयासों से बाल-विवाह निषेध एक्ट पारित किया गया।

2. प्रजामण्डलों ने सामाजिक भेदभाव कम करने का प्रयास किया था।
   जैसे- हरिनारायण शर्मा ने अस्पृश्यता निवारण संघ की स्थापना की।

3. प्रजामण्डल के नेताओं ने हिन्दू-मुस्लिम एकता पर बल दिया था।
   जैसे- नयनूराम शर्मा तथा हाजीफैज मुहम्मद ने हाड़ौती प्रजामण्डल की स्थापना की।

4. इन आन्दोलनों में महिलाओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया जिससे महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा मिला।
   जैसे-
   - विजया बहिन भावसार
   - लक्ष्मी देवी आचार्य
   - सावित्री देवी भाटी (जोधपुर)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

5. प्रजामण्डलों ने शिक्षा के प्रचार-प्रसार का कार्य किया था, अतः राज० में विभिन्न शिक्षण संस्थायें स्थापित की गई।

   जैसे- कबीर पाठशाला, पुत्री पाठशाला, सर्वहितकारिणी सभा।

6. प्रजामण्डलों ने नागरिक असमानता का विरोध किया था।
   जैसे- 1945 ई. में बैरवा जाति ने उणियारा (टोंक) में नागरिक असमानता विरोधी आन्दोलन चलाया था।

आर्थिक महत्व-

1. किसान आन्दोलनों को समर्थन / प्रोत्साहन।
   - ↳ जागीरदारी प्रथा का उन्मूलन।
     - ↳ किसानों को भूमि पर अधिकार प्राप्त किया।

2. बेगार प्रथा का विरोध।
   - ↳ शोषण से मुक्ति

3. स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग को बढ़ावा।
   - ↳ घरेलू उद्योग धंधो का फायदा / लाभ।

NOTE- • कांग्रेस का प्रजामण्डल को प्रत्यक्ष समर्थन - घोषणा
• हरिपुरा अधिवेशन (1938 ई.)
• घोषणा के तुरन्त बाद → मेवाड़ प्रजामण्डल - गठन

2. राजस्थान के बाहर स्थापित प्रजामण्डल।
   - बीकानेर → कोलकाता
   - सिरोही → बॉम्बे
   - भरतपुर → रेवाड़ी (हरियाणा)

3. राजस्थान का सबसे प्राचीनतम प्रजामण्डल।
   - ↳ जयपुर 1931

4. नवीनतम प्रजामण्डल → झालावाड़ (1946 ई.)

5. जैसलमेर प्रजामण्डल → जोधपुर में

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

राजस्थान का एकीकरण

- आजादी के समय राजस्थान में 19 रियासतें, 3 ठिकाने तथा 1 केन्द्र-शासित प्रदेश था।
  - 3 ठिकाने:
    - नीमराणा (अलवर)
    - लावा (टोंक)
    - कुशलगढ़ (बाँसवाड़ा)
- केन्द्रशासित प्रदेश = अजमेर-मेरवाड़ा

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- मालवा (M.P) + राजस्थान + सौराष्ट्र (GJ) की रियासतों को मिलाकर मेवाड़ महाराणा भूपाल सिंह 'राजस्थान यूनियन' बनाना चाहते थे इसके लिए उदयपुर में 2 सम्मेलन आयोजित किए गए।
  - 1946
  - 1947
- 5 July 1947 ई. को रियासती सचिवालय की स्थापना की गई थी।
- अध्यक्ष - सरदार वल्लभ भाई पटेल, HQ- नई दिल्ली
- सचिव - V.P मेनन
- 18 जुलाई 1947 ई. को भारतीय स्वतन्त्रता अधिनियम पारित किया गया था। इस अधिनियम की धारा 8 के अनुसार देशी रियासतों की अंग्रेजों के साथ की गई सन्धियाँ समाप्त कर दी गई।
- 7 अगस्त 1947 ई. को बीकानेर महाराजा शार्दुलसिंह ने विलय पत्र पर हस्ताक्षर किये थे। (राजस्थान में सर्वप्रथम)
- 14 अगस्त 1947 ई. को धौलपुर महाराजा उदयभान सिंह ने विलय पत्र पर हस्ताक्षर किये थे (सबसे अन्तिम में)
- रियासती सचिवालय ने घोषणा की, कि वे रियासते जिनमें जनसंख्या 10 लाख से अधिक तथा आय 1 करोड़ से अधिक हो स्वतंत्र रह सकती है।

- राजस्थान में ऐसी चार रियासतें थी-
  (i) मेवाड़
  (ii) जयपुर
  (iii) जोधपुर
  (iv) बीकानेर

- भारत सरकार ने जयपुर व अलवर रियासतों पर पहले ही नियंत्रण कर लिया था।

- राजस्थान एकीकरण पर सर्वप्रथम हस्ताक्षर – तेजसिंह (अलवर)

- एकीकरण में लगा समय → 8 वर्ष + 7 माह + 14 दिन

1. प्रथम चरण- (मत्स्य संघ)

- धौलपुर ↓ उदयभान सिंह ↓ (राजप्रमुख)
- करौली ↓ गणेशपाल ↓ उपराजप्रमुख
- अलवर ↓ राजधानी
- भरतपुर ↓ उद्घाटन ↓ 18 मार्च 1948 में नरहरि विष्णु गाडगिल ने किया।
- नीमराणा (ठिकाणा) ↓ शासक- राजेन्द्र सिंह

प्रधानमंत्री - शोभाराम कुमावत

उप प्रधानमंत्री - जुगल किशोर चतुर्वेदी

अन्य मंत्री –
- गोपीलाल यादव (धौलपुर)
- चिरंजीलाल शर्मा (करौली)
- डॉ. मंगल सिंह (धौलपुर)
- मास्टर भोलानाथ (अलवर)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- जनसंख्या - 18 लाख
- आय - 1.84 करोड़

- अलवर तथा भरतपुर रियासतों पर भारत सरकार ने पहले ही नियंत्रण स्थापित कर लिया था।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- KM मुंशी ने 'मत्स्य संघ' का नामकरण किया था।
- चारों रियासतों सहित कुल क्षेत्रफल = 12000 Km^2

२. द्वितीय चरण- राजस्थान संघ / पूर्ण राजस्थान

↓

25 मार्च 1948

कोटा | बूँदी | झालावाड़ | डूँगरपुर | बाँसवाड़ा

- कोटा → भीमसिंह → राजप्रमुख → राजधानी
- बूँदी → बहादुर सिंह → वरिष्ठ उपराजप्रमुख
- डूँगरपुर → लक्ष्मणसिंह → कनिष्ठ उपराजप्रमुख

राजधानी → उद्घाटन – 25 मार्च 1948 → N.V गाडगिल

प्रतापगढ़ | टोंक | किशनगढ़ | शाहपुरा + 1. कुशलगढ़ (ठिकाना) 2. लावा (टोंक)

- प्रधानमंत्री - गोकुल लाल असावा → शाहपुरा प्रजामण्डल नेता
- जनसंख्या - 23.5 लाख
- आय - 1.90 करोड़
- शाहपुरा तथा किशनगढ़ रियासतों ने अजमेर-मेरवाड़ा में विलय का विरोध किया था।
- विलय पत्र पर हस्ताक्षर के समय बाँसवाड़ा के राजा चन्द्रवीर सिंह ने कहा था कि " मैं अपने डेथ वॉरन्ट (death warrant) पर हस्ताक्षर कर रहा हूँ"

3. तृतीय चरण - संयुक्त राजस्थान -

राजस्थान संघ + मेवाड़

- उद्घाटन - उदयपुर में 18 अप्रैल 1948 ई. को प. जवाहर लाल नेहरू द्वारा किया गया।
- राजधानी - उदयपुर
- विधानसभा का एक अधिवेशन प्रतिवर्ष कोटा में आयोजित किया जायेगा तथा कोटा के विकास के लिए विशेष प्रयास किये जायेंगे।
- राजप्रमुख - महाराणा भूपाल सिंह (मेवाड़)
- वरिष्ठ उपराजप्रमुख - भीमसिंह (कोटा)
- कनिष्ठ उपराजप्रमुख -
  - बहादुर सिंह (बून्दी)
  - लक्ष्मण सिंह (डूँगरपुर)
- प्रधानमंत्री - माणिक्यलाल वर्मा
- उप-प्रधानमंत्री - गोकुल लाल असावा
- अन्य मंत्री -
  - भूरेलाल बयां — उदयपुर
  - प्रेम नारायण माथुर — उदयपुर
  - मोहन लाल सुखाड़िया — उदयपुर
  - भोगीलाल पाण्ड्या (डूँगरपुर)
  - अभिन्न हरि (कोटा)
  - बृज सुन्दर शर्मा (बूंदी)
- मंत्रीमण्डल में सामन्तों की भागीदारी को लेकर गतिरोध उत्पन्न हो गया था।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- मेवाड़ महाराणा भूपालसिंह ने २० लाख रुपये प्रीवीपर्स (Privy Purse) की माँग की थी।

  - 10 लाख औपचारिक प्रीवीपर्स
  - राजप्रमुख का वेतन 5 लाख ₹
  - धार्मिक अनुदान 5 लाख ₹

- राम मनोहर लोहिया ने "राजस्थान आन्दोलन समिति" का गठन किया तथा शेष रियासतों के जल्दी विलय की माँग की।

- माणिक्य लाल वर्मा का कथन-

  "मेवाड़ महाराणा भूपालसिंह & मंत्री राममूर्ति मेवाड़ के २० लाख लोगों के भाग्य का निर्धारण अकेले नहीं कर सकते"।

> * राजपूताना, मालवा एवं सौराष्ट्र की रियासतों को मिलाकर मेवाड़ के महाराणा भूपालसिंह ने "राजस्थान यूनियन" का प्रयास किया था। इसके लिए उदयपुर में दो सम्मेलन आयोजित किये गये थे। (1946 ई.- 1947 ई.)
>
> * K.M मुंशी मेवाड़ महाराणा के संवैधानिक सलाहकार थे।

4. चतुर्थ चरण - वृहद् राजस्थान → (30 मार्च 1949)

संयुक्त राजस्थान + जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर

↓

उद्घाटन

↓

चैत्र शुक्ल एकम् विक्रमी संवत् २००६ (30 मार्च, 1949 ई.) → "राजस्थान दिवस"

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- उद्घाटन स्थल - जयपुर में सरदार वल्लभ भाई पटेल ने किया था।

- महाराज प्रमुख - महाराणा भूपाल सिंह (मेवाड़)
- राजप्रमुख - सवाई मानसिंह-II जयपुर
- वरिष्ठ उप- राजप्रमुख
  - → भीमसिंह (कोटा)
  - → हनुवन्त सिंह (जोधपुर)
- कनिष्ठ उप-राजप्रमुख
  - → बहादुर सिंह (बून्दी)
  - → लक्ष्मणसिंह (डूँगरपुर)
- प्रधानमंत्री - हीरालाल शास्त्री (इस चरण में प्रधानमंत्री का पद हटाकर मुख्यमंत्री का पद आया)
  - ↓ प्रथम - CM
- अन्य मंत्री -
  - भूरेलाल बयां, प्रेमनारायण माथुर — मेवाड़
  - फूलचन्द बाफना, नृसिंह कच्छावा, राव राजा हनुवन्त सिंह — जोधपुर
  - सिद्धराज ढढ्ढा - जयपुर
  - रघुवर दयाल गोयल - बीकानेर
  - वेदपाल त्यागी - कोटा
    - → कालान्तर में राजस्थान उच्च न्यायलय के मुख्य न्यायधीश बने।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- प्रीवीपर्स - 1. जयपुर = 18 लाख ₹
  2. जोधपुर = 17.5 लाख ₹
  3. बीकानेर = 17 लाख ₹

- जयपुर तथा जोधपुर में राजधानी को लेकर विवाद था अतः इसके समाधान हेतु एक समिति का गठन किया गया था-
- समिति के सदस्य =
  1. B.R पटेल (अध्यक्ष)
  2. T.C पुरी
  3. S.P सिन्हा
- इस समिति की सिफारिश के आधार पर जयपुर को राजधानी बनाया गया तथा जोधपुर को उच्च न्यायलय दिया गया।

19 जुलाई 1948 ई. को लावा ठिकाना जयपुर रियासत में मिला लिया गया।

- 9 NOV. 1948 → जयनारायण व्यास ने सर्वप्रथम 'वृहत राजस्थान' की माँग की थी।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

5. पंचम चरण - संयुक्त वृहतर राजस्थान →

- मत्स्य संघ + वृहत् राजस्थान (4th चरण)
- 15 मई 1949 ई. को मत्स्य संघ का वृहत राजस्थान में विलय किया गया।
- मत्स्य संघ के विलय के लिए 'शंकर देव समिति' का गठन किया गया था समिति के अन्य सदस्य -
  1. R.K सिद्धवा
  2. प्रभु दयाल
- इस समिति की सिफारिश पर भरतपुर व धौलपुर की जनता को UP से राजस्थान में मिलाया गया।
- शोभाराम कुमावत को हीरालाल शास्त्री मंत्रिमण्डल में शामिल कर लिया गया।

6. छठा चरण – (२६ जनवरी १९५०)

- राजस्थान → वृहत्तर राजस्थान + सिरोही (आबू-देलवाड़ा को छोड़कर)
- सिरोही रियासत का विभाजन किया गया।
- आबू व देलवाड़ा सहित 89 गाँव बॉम्बे में मिलाये गये तथा शेष सिरोही राजस्थान को दिया जिसमें गोकुल भाई भट्ट का गाँव 'हाथल' भी शामिल था।
- इस अनुचित विलय पर वल्लभ भाई पटेल का जवाब था कि "राजस्थान वालों को गोकुल भाई भट्ट चाहिये था जो हमने दे दिया"
- यह प्रक्रिया २६ जनवरी १९५० ई. को सम्पन्न हुई तथा इसी दिन हमारे प्रदेश का नाम राजस्थान कर दिया गया था।
- हीरालाल शास्त्री को राजस्थान का प्रथम मनोनीत मुख्यमंत्री बनाया गया था।
- मनोनीत मुख्यमंत्री = (i) हीरालाल शास्त्री
  (ii) सी. एस. वेंकटाचारी (ICS)
  (iii) जय नारायण व्यास

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- निर्वाचित मुख्यमंत्री - (i) टीकाराम पालीवाल
  (ii) जयनारायण व्यास (उपमुख्यमंत्री - टीकाराम पालीवाल)
  (iii) मोहनलाल सुखाड़िया
  ↓
  (सबसे युवा, सबसे लम्बे समय तक CM, 17 वर्ष)

7. सातवाँ चरण- 1. NOV. 1956

- आधुनिक/वर्तमान राजस्थान → राजस्थान + आबू - देलवाड़ा (बॉम्बे प्रान्त) + अजमेर (मेरवाड़ा)

- राज्य पुनर्गठन आयोग की सिफारिश पर – 1956 ई.
  1. अजमेर- मेरवाड़ा राजस्थान में मिलाया गया।
  2. आबू-देलवाड़ा को राजस्थान में मिलाया गया।
  3. मध्यप्रदेश का सुनेल टप्पा राजस्थान को दिया गया।
  4. राजस्थान का सिरोंज मध्यप्रदेश को दिया गया।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- 1 नवम्बर 1956 ई. को राजस्थान का एकीकरण पूर्ण हुआ। इस समय मोहनलाल सुखाड़िया राजस्थान के मुख्यमंत्री थे।

- आबू-देलवाड़ा के विलय के लिए 'मुनि जिन विजय सूरी समिति' का गठन किया गया था इतिहासकार दशरथ शर्मा भी इस समिति के सदस्य थे।

- पहले अजमेर-मेरवाड़ा एक केन्द्रशासित प्रदेश था। यहाँ 30 सदस्यों की धारा सभा होती थी।

- हरिभाऊ उपाध्याय अजमेर-मेरवाड़ा के मुख्यमंत्री थे।

- हरिभाऊ उपाध्याय ने अजमेर-मेरवाड़ा के विलय का विरोध किया था।

- मुनि जिन विजय सूरी समिति–
  - आबू-देलवाड़ा के विलय के लिए
  - सदस्य - दशरथ शर्मा

- अजमेर को राजस्थान का 26 वाँ जिला बनाया गया था।

- जयपुर व अजमेर में राजधानी को लेकर विवाद था, तथा इसके समाधान हेतु एक समिति का गठन किया गया।

* सत्यनारायण राव समिति–

- इस समिति के सदस्य -
  1. सत्यनारायण राव (अध्यक्ष)
  2. बी. के गुहा
  3. बी. विश्वनाथन

- इस समिति की सिफारिश के आधार पर–
  - ✔ राजधानी - जयपुर
  - ✔ राजस्व विभाग - अजमेर
  - ✔ शिक्षा विभाग - बीकानेर
  - ✔ कृषि विभाग - भरतपुर
  - ✔ सहकारी विभाग - कोटा
  - ✔ वन विभाग - कोटा
  - ✔ खनन विभाग - उदयपुर
  - ✔ उच्च न्यायालय - जोधपुर

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

राज्य पुनर्गठन आयोग की सिफारिश के आधार पर–

- 7 वें संविधान संशोधन 1956 के द्वारा राजप्रमुख का पद समाप्त कर दिया गया, तथा राज्यपाल पद नया पद बनाया गया।
- सरदार गुरुमुख निहाल सिंह = राजस्थान के प्रथम राज्यपाल थे।
- 26 वें संविधान संशोधन 1971 द्वारा राजाओं के प्रीवीपर्स समाप्त किये गये थे।

MAHECHA PUBLICATION

- 1 नवम्बर 2000, को मध्यप्रदेश से छत्तीसगढ़ को अलग कर दिया गया। अतः इस दिन राजस्थान भारत का सबसे बड़ा राज्य बन गया।

- राज्य पुनर्गठन आयोग के सदस्य- (फजल अली आयोग)
  ↓
  (22 dec. 1953)
  1. फजल अली (अध्यक्ष)
  2. हृदयनाथ कुँजरु
  3. के.एम. पणिक्कर

- के.एम. पणिक्कर बीकानेर से संविधान सभा के सदस्य थे।

महत्वपूर्ण तथ्य-

- राजस्थान दिवस = 30 मार्च
- राजस्थान स्थापना दिवस = 1 NOV
- जोधपुर शासक हनुवंतसिंह पाकिस्तान में मिलना चाहते थे।
  ↳ योजना का पर्दाफाश
    ↳ सुमनेश जोशी ने
      ↳ समाचार पत्र - "रियासती"
- सर्वप्रथम 'पूर्ण उत्तरदायी शासन' की स्थापना।
  ↳ शाहपुरा - सुदर्शन देव
  ↳ नहीं करने वाली - बीकानेर रियासत

संघ बनाने का प्रयास करने वाले राजा-

1. हाड़ौती संघ → भीमसिंह (कोटा)
2. वागड़ संघ → लक्ष्मणसिंह (डूँगरपुर)
3. मेवाड़ संघ → भूपालसिंह (मेवाड़)
4. राजपूताना संघ → मानसिंह -II + भूपालसिंह

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books 7300134518, 7610010054

 MAHECHA PUBLICATION

प्रदेश नाम	प्रधानमंत्री	राजप्रमुख	राजधानी	उद्घाटनकर्ता
1. मत्स्य संघ	शोभाराम कुमावत	उदयभानसिंह	अलवर	N.V गॉडगिल
२. राजस्थान संघ	गोकुललाल असावा	भीमसिंह (कोटा)	कोटा	—"—
3. संयुक्त राजस्थान	माणिक्य लाल वर्मा	भूपालसिंह (मेवाड़)	उदयपुर	जवाहर लाल नेहरू
4. वृहत् राजस्थान	हीरालाल शास्त्री	मानसिंह-II	जयपुर	सरदार पटेल
5. वृहत्तर राजस्थान	हीरालाल शास्त्री	मानसिंह-II	जयपुर	—"—
6. राजस्थान (२6 Jan. 1950)	हीरालाल शास्त्री	मानसिंह-II	जयपुर	—"—
7. राजस्थान (1. Nov. 1956)	मोहनलाल सुखाड़िया	राजप्रमुख पद समाप्त	जयपुर	—"—

↓ नया पद – राज्यपाल
↓ (प्रथम) – गुरुमुख निहाल सिंह

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

NOTE (i) 1.Feb.1948 को सरदार पटेल ने सिरोही का विलय गुजरात में करना चाहा।

↳ विरोधी आन्दोलन = गोकुलभाई भट्ट + बलवन्त सिंह मेहता

- हीरालाल शास्त्री ने सरदार पटेल को पत्र लिखा-
  " सिरोही का अर्थ गोकुल भाई भट्ट है, और गोकुल भाई भट्ट के बिना हम राजस्थान नहीं चला सकेंगे "

7 वें संविधान संशोधन के प्रभाव- (1956)

(i) अजमेर मेरवाड़ा + आबू- देलवाड़ा का विलय राजस्थान में।

(ii) राज्यों की श्रेणियाँ समाप्त। (राज० की श्रेणी B- द्वितीय)

(iii) राजस्थान और M.P के गाँवों की अदला-बदली।

(iv) राजप्रमुख - राज्यपाल (गुरुमुख निहाल सिंह)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य-

- राजस्थान एकीकरण पर प्रथम हस्ताक्षर - तेजसिंह (अलवर)
- प्रथम स्वतन्त्रता दिवस नहीं मनाया- अलवर - भरतपुर ने
- पाकिस्तान में मिलना चाहती थी - जोधपुर (हनुवतसिंह)
- जैसलमेर में → उत्तराधिकारी कर / तलवार बंधाई कर नहीं था।
- मराठा आक्रमण से बची रहने वाली → जैसलमेर, बीकानेर
- उत्तरदायी शासन स्थापित नहीं करने वाली → जैसलमेर, बीकानेर
- शिक्षा पर प्रतिबंध लगाने वाली रियासत- डूँगरपुर
- शिकार एक्ट बनाने वाली रियासत - टोंक
- वन्यजीव सुरक्षा हेतु सर्वप्रथम - कानून ↓ जोधपुर (1910) ; अधिनियम पारित ↓ अलवर (1935)

• "जाट झण्डा खतरे में है" – मानसिंह ने कहा।

• राजस्थान की रियासतें – प्राचीनतम → मेवाड़; नवीनतम → झालावाड़ → झालामदन सिंह (1938) → अंग्रेजों द्वारा स्थापना

• राजस्थान की सबसे बड़ी रियासतें – जनसंख्या (आधार) → जयपुर; क्षेत्रफल (आधार) → जोधपुर

• राजस्थान की सबसे छोटी रियासत – शाहपुरा (क्षे॰ व जनसंख्या दोनों आधार पर)

• राजस्थान एकीकरण के समय विलय पत्र पर हस्ताक्षर करने वाली रियासतें –
1. हरिशचन्द्र – झालावाड़
2. सुमेरसिंह – किशनगढ़
3. रघुनाथ सिंह – जैसलमेर
4. गणेशपाल – करौली

• मत्स्य संघ की कौनसी रियासत जनता के बहुमत के आधार पर U.P में विलय होने के लिए तैयार थी – "धौलपुर"

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

MAHECHA PUBLICATION

राजस्थान के स्वतन्त्रता सेनानी

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

अर्जुन लाल सेठी-

- यह जयपुर के रहने वाले थे।
- इन्होंनें महाराजा महाविद्यालय से स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की थी।
- इन्होंने मथुरा की जैन पाठशाला में अध्यापन का कार्य किया था। चौमू के सामन्त देवी सिंह के सचिव के रूप में कार्य किया।
- जयपुर महाराजा माधोसिंह-II इन्हें प्रधानमंत्री बनाना चाहते थे, लेकिन इन्होंने कहा था कि
  " यदि अर्जुनलाल नौकरी करेगा तो अंग्रेजों को भारत से बाहर कौन निकालेगा"।
- 1905 ई. में इन्होंने 'जैन शिक्षा प्रचारक समिति' की स्थापना की।
- 1907 ई. में जयपुर में 'वर्धमान पाठशाला' की स्थापना की।
  - यह क्रान्तिकारियों की पाठशाला थी।
- 1912 ई. के दिल्ली षड्यंत्र मुकदमे से जुड़े हुए थे।
- 1913 ई. के नीमेज हत्याकाण्ड (आरा)-(बिहार) में इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया था तथा वैलूर (मद्रास) जेल में भेज दिया गया था।
- इन्होंने गाँधीजी के असहयोग आन्दोलन में भाग लिया था।
- राजपुताना तथा मध्य भारत में इन्हें कांग्रेस का अध्यक्ष बनाया गया।
- अपनी अजमेर यात्रा के दौरान गाँधीजी ने इनसे मुलाकात की थी।
- इन्होंने प्रसिद्ध क्रान्तिकारी अशफाक उल्ला खाँ को जयपुर में शरण दी थी।

- अपने अन्तिम दिनों में अजमेर की एक दरगाह में अरबी व फारसी पढ़ाया करते थे।

- मृत्यु के बाद इन्हें दफनाया गया था।

- पुस्तकें -
  (i) स्त्री मुक्ति
  (ii) शुद्र मुक्ति

  नाटक -
  (i) महेन्द्र कुमार
  (ii) मदन पराजय
  (iii) पार्श्व यज्ञ

नीमेज हत्याकाण्ड के अन्य क्रांतिकारी-

1. मोतीचंद (फाँसी की सजा)
2. विष्णुदत्त (काला पानी की सजा)
3. जयचन्द
4. जोरावर सिंह बारहठ

(3, 4) — फरार

5. माणिकचन्द
6. शिवनारायण

(5, 6) — सरकारी गवाह

केसरीसिंह बारहठ-

- जन्म स्थान - देवपुरा खेड़ा (शाहपुरा, भीलवाड़ा)
- उन्होंने मेवाड़ तथा कोटा रियासतों में कार्य किया था।
- इनके कहने पर श्यामजी कृष्ण वर्मा ने भी मेवाड़ रियासत में कार्य किया था।
- 1903 ई० में गवर्नर जनरल लॉर्ड कर्जन ने दिल्ली दरबार का आयोजन किया था।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- मेवाड़ महाराणा फतेहसिंह उसमें भाग लेने के लिए दिल्ली जा रहे थे। उस समय केसरीसिंह बारहठ ने 13 दोहे लिखकर भेजे थे। जिन्हें 'चेतावनी रा चुंगट्या' कहा जाता है। इन्हें पढ़ने के बाद फतेह सिंह ने दिल्ली दरबार में भाग नहीं लिया।

- कोटा रियासत में इन्हें "सुप्रीन्टेन्डेन्ट ऑफ एथनोग्राफी" बनाया गया था। (Superintendent of Ethnography)

- 1912 ई. के कोटा के महन्त प्यारेलाल हत्याकाण्ड में इनको गिरफ्तार कर लिया गया था तथा हजारीबाग (झारखण्ड) जेल भेज दिया गया था।

- उस मुकदमे में अन्य क्रांतिकारी –
  - रामकरण
  - सोमदत्त लहरी
  - हीरालाल जालोरी
  - लक्ष्मी लाल भटनागर

- कालान्तर में गाँधीजी के पास वर्धा महाराष्ट्र में चले गये थे।

- पुस्तकें –
  - प्रताप चरित्र
  - राजसिंह चरित्र
  - दुर्गादास चरित्र
  - रूठी रानी चरित्र
  - श्यामलदास जी की जीवनी
  - बुद्ध चरित का हिन्दी अनुवाद
  - 'मैजिनी' की जीवनी का हिन्दी अनुवाद
    → (यह इटली का क्रान्तिकारी था)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

MAHECHA PUBLICATION

- केसरीसिंह बारहठ के शिक्षा सम्बन्धी विचार-
    - अंग्रेजी ⟶ हिन्दी
    - मेयो कॉलेज → क्षेत्रीय कॉलेज
    - इंग्लैण्ड → जापान
- 1910 ई. में उन्होंने 'वीर भारत सभा' की स्थापना की।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

जोरावर सिंह बारहठ-

- यह केसरीसिंह बारहठ के छोटे भाई थे।
- यह दिल्ली षड्यंत्र मुकदमा तथा नीमेच हत्याकाण्ड से जुड़े हुए थे, लेकिन अंग्रेज उन्हें गिरफ्तार नहीं कर सके।
- उन्होंने अपना अन्तिम समय अमरदास बैरागी के रूप में बिताया था।

प्रतापसिंह बारहठ-

- यह केसरीसिंह बारहठ के पुत्र थे।
- यह दिल्ली षड्यंत्र मुकदमा से संबंधित थे।
- इन्हें बनारस षड्यंत्र मुकदमे में गिरफ्तार किया गया था। (1917 ई.)
- पुलिस प्रताड़ना के कारण बरेली जेल में उनकी मृत्यु हो गई थी।
- अंग्रेज अधिकारी चार्ल्स क्लीवलैण्ड ने प्रतापसिंह की हिम्मत की प्रशंसा की थी।
- बीकानेर रियासत ने उनके प्रवेश पर पाबन्दी लगाई थी।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

ईश्वर दान आसिया-

- यह केसरीसिंह सिंह बारहठ के दामाद थे।
- यह दिल्ली बम काण्ड से संबंधित थे।

रासबिहारी बोस ने केसरीसिंह बाहरठ के परिवार की प्रशंसा की

राव गोपालसिंह खरवा-

- यह खरवा (अजमेर) के सामन्त थे।
- रास बिहारी बोस पुरे भारत में एक साथ सशस्त्र क्रान्ति करना चाहते थे तथा इसके लिए 21 फरवरी 1915 का दिन तय किया गया था।
- राजस्थान में इसकी जिम्मेदारी राव गोपालसिंह खरवा को दी गई।
- उन्होंने अजमेर तथा जोधपुर के राजपूत सैनिकों को क्रान्ति के लिए प्रोत्साहित किया। लेकिन अंग्रेजों को इस योजना का पता गया था। अतः उन्हे गिरफ्तार कर लिया गया तथा उन्हें टॉडगढ़ जेल अजमेर में रखा गया, परन्तु ये जेल से फरार हो गये।
- अंग्रेजों ने उन्हें पुनः गिरफ्तार किया तथा अजमेर जेल भेज दिया।
- कालान्तर में उन्हें शाहजहाँपुर जेल / तिहाड़ जेल (U.P) में भेज दिया गया।

विजयसिंह पथिक-

- जन्म स्थान - गुठावली (बुलन्दशहर, U.P)
- वास्तविक नाम - भूपसिंह
- रासबिहारी बोस ने उन्हे राजस्थान में क्रान्ति के लिए भेजा था।

- प्रारम्भ में गोपालसिंह खरवा के सहयोगी थे।
- अंग्रेजों ने इन्हें गिरफ्तार कर टॉडगढ़ जेल में रखा लेकिन ये जेल से फरार हो गये थे।
- इन्होंने ओछड़ी (चितौड़गढ़) में विद्या प्रचारिणी सभा की स्थापना की।
- इन्हें राजस्थान में किसान आन्दोलनों का जनक कहा जाता है।
- इन्होंने वीर भारत समाज की स्थापना की थी।
- पुस्तकें - 1. अजयमेरु 2. What are the Indian States?

जमनालाल बजाज-

- जन्मस्थान- काशी का बास (सीकर)
- इन्हें गाँधीजी का पाँचवा पुत्र कहा जाता है।
- इन्हें गुलाम नं. -4 भी कहा जाता है।
- असहयोग आन्दोलन के दौरान तिलक स्वराज फंड में 1 लाख ₹ जमा करवाये थे।
- असहयोग आन्दोलन के दौरान जमनालाल बजाज ने अपनी रायबहादुर की उपाधि लौटा दी।
- इन्होंने मुस्लिम लीग को 11 हजार रूपये दिये थे।
- 1927 ई. में बलवन्त सांवलाराम देशपांडे के साथ मिलकर अमरसर (जयपुर) में चरखा संघ की स्थापना की।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

हीरालाल शास्त्री-

1927 ई. में निवाई (टोंक) में जीवन कुटीर की स्थापना की थी। इसे कालान्तर में वनस्थली विद्यापीठ में बदल दिया गया था

- जो कि महिला शिक्षा के लिए समर्पित संस्थान है।
- यह अपनी पंचमुखी शिक्षा के लिए जाना जाता है।
- गीत - प्रलय प्रतीक्षा नमो नमो
- आत्मकथा - प्रत्यक्ष जीवन शास्त्र

बालमुकुन्द बिस्सा-

- जन्म - पीलवा (नागौर) में
- नागौर में चरखा संघ तथा खद्दर भण्डार की स्थापना की।
- जोधपुर में जवाहर खादी भण्डार की स्थापना की।
- 19 जून 1942 ई. में जोधपुर जेल में भूख हड़ताल के कारण इनकी मृत्यु हो गई थी।
- इन्हें राजस्थान का जतिनदास कहा जाता है।

NOTE- बालकृष्ण कौल ने अजमेर जेल में भूख हड़ताल की थी।

सागरमल गोपा-

- ये जैसलमेर के रहने वाले थे।
- उन्होंने राजतंत्र तथा अंग्रेजी शासन का विरोध किया।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- पुस्तकें - 1. आजादी के दीवाने
  2. जैसलमेर का गुण्डाराज
  3. रघुनाथसिंह का मुकदमा
- जैसलमेर तथा हैदराबाद रियासतों में इनके प्रवेश पर पाबन्दी लगा दी गई। कालान्तर में इन्हें जैसलमेर में गिरफ्तार कर लिया गया था।

- इन्होंने जवाहर लाल नेहरू, शेख अब्दुल्ला तथा जयनारायण व्यास को पत्र लिखे थे।
- 4 अप्रेल 1956 ई. को इनको जेल में जिन्दा जला दिया गया।
- इस हत्या की जाँच के लिए गोपाल स्वरूपक पाठक आयोग बनाया गया।

रमेश स्वामी-

बेगार विरोधी आन्दोलन के दौरान 5 फरवरी 1957 ई. को भुसावर (भरतपुर) में इनकी हत्या कर दी गई थी।
→ (बस द्वारा कुचल कर)

शान्तीलाल व आनन्दीलाल-

5 अप्रेल 1958 ई. को उदयपुर में पुलिस फायरिंग में इन दोनों की मृत्यु हो गई थी।

रामकरण, लुणकरण, खूबराम-

20 मई 1958 ई. को मोरीजा (जयपुर) में पुलिस फायरिंग में शहीद हो गये थे।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

ज्वालाप्रसाद शर्मा-

- यह अजमेर के रहने वाले थे।
- ये H.S.R.A के सदस्य थे।
- इन्होंने कई क्रान्तिकारी गतिविधियों में भाग लिया था।
  जैसे-
  - मेयो कॉलेज बम काण्ड
  - डोगरा काण्ड
  - अजमेर रेल हड़ताल

हरिभाऊ उपाध्याय-

- 1925 ई. में हटूंडी (अजमेर) में महिला शिक्षा सदन की स्थापना की।
- समाचार पत्र - त्याग भूमि
  - 1927 ई. में अजमेर से प्रकाशित होता है।
  - इसमें गाँधीवादी विचारों को प्रोत्साहन दिया जाता था।
  - महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया जाता था। [आदिदुनिया स्तम्भ (कॉलम)]

दामोदर दास राठी-

- यह पोकरण (जैसलमेर) के रहने वाले थे।
- ब्यावर में कृष्णा मिल की स्थापना।
- ब्यावर में सनातन धर्म विद्यालय की स्थापना की।
- इन्होंने हिन्दी भाषा को बढ़ावा दिया।
- इन्होंने कृष्णा मिल के सभी खाते बहि हिन्दी में लिखने प्रारम्भ कर दिये थे।
- इनके कहने पर अजमेर के कमीश्नर ने कार्यालयों में हिन्दी भाषा के प्रयोग की अनुमति दी।
- स्वतन्त्रता सेनानियों को धनराशी प्रदान करते थे।

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books 7300134518, 7610010054

1. दामोदर दास राठी 2. नृसिंह दास अग्रवाल 3. धीसूलाल जाजोदिया	स्वतन्त्रता संग्राम के भामाशाह

अंजना देवी चौधरी- श्री माधोपुर, नीम का थाना (सीकर)

- मेवाड़ व बूंदी किसान आन्दोलन में शामिल।
- नमक सत्याग्रह के दौरान गिरफ्तार।

Imp. राजस्थान की किसी रियासत से पहली महिला थी, जिन्हें स्वतंत्रता संग्राम में जेल भेजा गया।

रमा देवी जोशी- जन्मस्थान - जयपुर

- पति - लाधुराम जोशी (विधवा पुनर्विवाह)
- बिजौलिया आन्दोलन के दौरान गिरफ्तार
- कथन = " जब तक किसानों पर अत्याचार खत्म नहीं होते, मैं बार - बार यहाँ आती रहूँगी "।

Imp. सविनय अवज्ञा आन्दोलन में गिरफ्तार।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

जानकी देवी बजाज-

- जन्म स्थान - जावरा (M.P)
- लम्बा समय वर्धा में बिताया।
- 1944 ई. में जयपुर प्रजामण्डल की अध्यक्षता बनी।
- गौ-सेवा आयोग की अध्यक्षा रही।
- 'भूदान आन्दोलन' के दौरान 108 कुओं का निर्माण
  - (विनोबा भावे द्वारा)
- 1933 ई. में कलकत्ता में 'अखिल भारतीय सम्मेलन की अध्यक्षता'।
- 1956 ई. में पद्म विभूषण से सम्मानित (राज. की प्रथम महिला)

रत्न शास्त्री-

- जन्मस्थान - खाचरोद (M.P)
- जयपुर प्रजामण्डल सत्याग्रह में भाग लिया।
- भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान भूमिगत कार्यकर्ताओं व उनके परिवारों की सहायता की।
- 1955 में पद्मश्री से सम्मानित (राज० की प्रथम महिला)
- 1975 में पद्मभूषण से सम्मानित → दोनों से सम्मानित होने वाली प्रथम महिला।

नारायणी देवी शर्मा- सिंगोली (M.P)

- महिला आश्रम -1944 ई. (भीलवाड़ा)
- राज्यसभा की सदस्यता (1970-76)
- भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

शान्ता त्रिवेदी-

- 1947 ई. में उदयपुर में "राजस्थान महिला परिषद" की स्थापना।
- कथन - "बिना आर्थिक सशक्तिकरण के महिलाओं के लिए राजनीतिक आजादी का कोई खर्च नहीं है"

Other- • प्रकाशवती सिन्हा - अजमेर • दुर्गावती शर्मा - जयपुर • सरस्वती बोहरा - भरतपुर • कमला स्वाधीन - कोटा • कुसुम गुप्ता - कोटा	• सावित्री देवी भाटी • सिरे कंवर • रमा कंवर → जोधपुर

MAHECHA PUBLICATION

NOTE- • राजस्थान का गाँधी – गोकुल भाई भट्ट
• चिड़ावा का गाँधी – मास्टर प्यारेलाल
• गाँधी का 5 वाँ पुत्र – जमनालाल बजाज

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

अमरचन्द बाँठिया- बीकानेर (1793)

- नगरसेठ की उपाधि
- पिता – तुल्लाचन्द बाँठिया → ज्वैलरी व्यवसाय
- ग्वालियर राजघराने का पैसा झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई को सुपुर्द।
- फाँसी – 22 जून 1858 → • राजस्थान का प्रथम शहीद
  • 1857 की क्रान्ति का भामाशाह
  • राजस्थान का दूसरा भामाशाह

जयनारायण व्यास-

→ जोधपुर- 1899 ई.
→ गौरजा व्यास

- उपनाम-
  • शेर-ए-नायक / राजस्थान
  • लोकनायक / जननायक
  • धुन का धनी
  • लक्कड़ - कक्कड़ - फक्कड़
  • मास्साव

मोतीलाल तेजावत-

कोल्यारी गाँव (उदयपुर)
(बणिया परिवार)

एकी / भोमट आन्दोलन का नेतृत्व।

आदिवासियों का मसीहा

मेवाड़ की पुकार
→ 21 सूत्री माँग

राजस्थान की महत्वपूर्ण महिलाएँ

- राजस्थान की प्रथम महिला विधानसभा अध्यक्ष - सुमित्रा सिंह
  - " " " विधायक - यशोधरा देवी (बांसवाड़ा)
  - सांसद
    - लोकसभा - गायत्री देवी
    - राज्यसभा - शारदा भार्गव

  राजस्थान की प्रथम महिला सांसद

- राजस्थान की प्रथम महिला मुख्यमंत्री - वसुंधरा राजे
  - उपमुख्यमंत्री - कमला बेनीवाल
    - प्रथम महिला मंत्री

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- राज्यपाल / राष्ट्रपति - प्रतिभा पाटिल
- जिला प्रमुख - नगेन्द्र बाला (कोटा)

* सुमन राव - राजसमन्द
  - Femina Miss India World - 2019
* खेतु बाई - बीकानेर
  - जीवनभर खादी के वस्त्रों में रहने का प्रण।
* मणिबहन पाण्ड्या - 'वागड़ बां' नाम से प्रसिद्ध
* सत्यभामा - गाँधीजी की मानस पुत्री।
  - D/O = नित्यानंद (बूंदी क्रान्तिकारी)
* कमला स्वाधीन (कोटा) - W/O इन्द्रदत्त स्वाधीन

राजस्थान के राजनीतिक एवं सामाजिक संगठन

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

1. आर्य समाज- 1875 ई.

- स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा (SDS)
- बाम्बे में स्थापना।
- 1865 ई. में राजा मदनपाल (करौली) के बुलाने पर SDS ने करौली की यात्रा की।
- स्वामी दयानन्द सरस्वती → राजस्थान में पहली यात्रा
- 1881 में स्वामी दयानन्द सरस्वती → भरतपुर आये।
  - → इस समय 'वैदिक धर्म सभा' अजमेर में 'आर्य समाज' – स्थापना
- स्वामी दयानन्द सरस्वती चितौड़ पहुँचे → कविराजा श्यामलदास जी ने स्वागत किया।
- महाराणा सज्जनसिंह ने स्वामी दयानन्द सरस्वती को गुलाबबाग (उदयपुर) के नौलखा महल में रखा।
  - → स्वामी दयानन्द सरस्वती ने यहाँ "सत्यार्थ प्रकाश" का दूसरा संस्करण लिखा।
    - → अजमेर से प्रकाशित

* परोपकारिणी सभा - (27 Feb 1883)

↓ स्थापना

↓ उदयपुर → कालान्तर में स्थानांतरित – अजमेर

सभापति – महाराणा सज्जनसिंह

वैदिक मंत्रालय – अजमेर में स्थापित

- प्रधानमंत्री सर प्रताप के बुलाने पर स्वामी दयानन्द सरस्वती जोधपुर चले गये।

NOTE- जोधपुर महाराजा जसवन्तसिंह -II व उनके मंत्री राव राजा तेजसिंह भी स्वामी जी के अनुयायी थे।

- जसवन्त सिंह की प्रेमिका नन्हीजान ने स्वामी जी को जहर दे दिया।
- 30 Oct. 1883 को अजमेर मे दीवाली के दिन स्वामी जी की मृत्यु हो गई।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

* आर्य समाज के कार्यकर्ता-

- मेवाड़ → विष्णु पाण्ड्या
- अलवर → वासुदेव खंडेलवाल
- भरतपुर → जुगल किशोर चतुर्वेदी, मास्टर आदित्येन्द्र
- अजमेर → चाँदकरण शारदा, हरविलास शारदा, सुखदा देवी (Wife)
- जयपुर → कल्याण सिंह, श्यामलाल

NOTE- स्वामी दयानन्द सरस्वती की राजस्थान की यात्रा-

[करौली, भरतपुर, चितौड़, उदयपुर, जोधपुर, अजमेर]

* आर्य समाज का राजस्थान में प्रभाव-

1. समाज सुधारक संगठन
2. महिलाओं से संबंधित सामाजिक कुरीतियों को दूर का प्रयास किया।

3. महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा। उदाहरण- सुखदा देवी, अजमेर

4. राजस्थान के राजा महाराजा आर्य समाज से प्रभावित।

↳ जनता के प्रति उदार

उदाहरण- 1885 ई. में जोधपुर में सर प्रताप ने 'बाल विवाह प्रतिरोधक एक्ट' पारित किया।

5. स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग को बढ़ावा दिया।

↳ घरेलू उद्योग धन्धों को फायदा मिला।

राज ← (स्व) → धर्म

(हिन्दी) भाषा ↙ ↘ वस्तुएँ

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

6. हिन्दी भाषा को बढ़ावा।

उदाहरण→ कल्याण सिंह व श्यामलाल ने जयपुर में 'हिन्दी राजभाषा' आन्दोलन चलाया।

7. राजनीतिक चेतना का संचार

8. समाचार पत्रों व पुस्तकों का प्रकाशन।

अभिव्यक्ति की आजादी को बढ़ावा।

→ जगहितकारक, परोपकारक, जगलाभचिन्तक।

चांदकरण शारदा की पुस्तक – • विधवा विवाह
• दलितो द्वार

2. देश हितैषिणी सभा–

(2 July 1877)

- संस्थापक – महाराणा सज्जनसिंह
- सदस्य – कविराजा श्यामलदास जी

राजस्थान की किसी भी रियासत में यह पहला समाज सुधारक संगठन था।

3. राजपूत हितकारिणी सभा-

- संस्थापक - वॉल्टर (A.G.G.)
  - अजमेर में समाज सुधार हेतु सम्मेलन आयोजित

- निर्णय-
  1. बहुविवाह की समाप्ति की जानी चाहिए।
  2. विवाह की न्यूनतम उम्र तय की। (14 yr & 18 yr)
  3. विवाह पर होने वाले खर्च को सीमित किया जाना चाहिए।
  4. लाग प्रथा की समाप्ति।

  मृत्युभोज को सीमित किया जाना चाहिए।

- कानूनी बाध्यता न होने के कारण समाज सुधार के प्रयास असफल रहे।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

4. वीर भारत सभा (1910)-

- संस्थापक- केसरी सिंह बारहठ
- वीर सावरकर की 'अभिनव भारत' की राजस्थान शाखा।

5. प्रताप सभा-

- बलवन्त सिंह मेहता
- प्रताप जयंती और हल्दीघाटी मेला लगाना प्रारम्भ करवाया।

6. राजपूताना मध्य भारत सभा- 1918 ई.

- स्थापना- मारवाड़ी पुस्तकालय, चाँदनी चौक (दिल्ली)
- संस्थापक- जमनालाल बजाज, विजयसिंह पथिक, चाँदकरण शारदा, गणेशंकर विद्यार्थी, नरसिंहदेव सरस्वती

- मुख्यालय - अजमेर
- उद्देश्य - • रियासतों में राजनैतिक चेतना का संचार करना।
  - • रियासतों में उत्तरदायी शासन की स्थापना करना।
  - • रियासतों में कांग्रेस के सदस्य बनाना।
- अधिवेशन - 1918 → दिल्ली – गिरधर शर्मा
  - 1919 → अमृतसर
  - मार्च, 1920 → अजमेर – जमनालाल बजाज
  - Dec, 1920 → नागपुर – NC केलकर, गणेश नारायण सोमाणी
    - NC केलकर → चुने गये अध्यक्ष परन्तु अध्यक्षता नहीं कर पाये
    - गणेश नारायण सोमाणी → अध्यक्षता की
    - नागपुर → किसानों ने चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया।
- इसी अधिवेशन में इस संगठन को कांग्रेस का सहयोगी संगठन घोषित किया गया।

7. <u>राजस्थान सेवा संघ</u> - 1919 (वर्धा) —— 1920 में मुख्यालय स्थानांतरण → अजमेर

संस्थापक - विजयसिंह पथिक
रामनारायण चौधरी
हरिभाई किंकर
केसरीसिंह बारहठ
अर्जुनलाल सेठी

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- <u>उद्देश्य</u> - • जनता की समस्याओं का समाधान करना।
  - • राजा व जनता के बीच अच्छे संबंधों की स्थापना।
- राजस्थान में किसान आन्दोलनों का नेतृत्व किया।

- नेताओं के आपसी मतभेदों के कारण १९२७, २८ में 'राजस्थान सेवा संघ' बंद हो गया।

8. राजपूताना हरिजन सभा- 1934
- अध्यक्ष - हरविलास शारदा
- १९३२ में गाँधीजी ने "अखिल भारतीय हरिजन संघ" की स्थापना।
  - अध्यक्ष - घनश्यामदास बिड़ला

9. खाण्डलाई आश्रम - १९३४ (डूँगरपुर)
- संस्थापक - माणिक्यलाल वर्मा
- उद्देश्य - आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा का कार्य।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

10. महिला मण्डल - (१९३५, उदयपुर)
- दयाशंकर श्रोत्रिय

11. वागड़ सेवा संघ - (१९३८)
- भोगीलाल पाड्या
- भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया।

13. वनवासी सेवा संघ - १९४० ई.
- भोगीलाल पाण्ड्या
- भूरेलाल बयां
- मानसिंह
- आदिवासी क्षेत्रों में विद्यालय, पुस्तकालय, छात्रावास स्थापित।

12. वागड़ सेवा मन्दिर (१९३५ ई.)
- संस्थापक -
  - भोगीलाल पाड्या
  - गौरीशंकर उपाध्याय

14. महिला शिक्षा सदन - १९५५
- हटूण्डी (अजमेर)
- हरिभाऊ उपाध्याय

15. सर्व सेवा संघ - जयपुर
- सिद्धराज ढढ्ढा

16. मित्र मण्डल - साधुसीताराम दास

17. मारवाड़ किसान सभा -
- संस्थापक - बलदेव राम मिर्धा
- प्रथम अध्यक्ष - मंगलसिंह कच्छावा

राजस्थान के मुख्य समाचार पत्र

1. **मजहरूल सरूर**
   - 1849 में भरतपुर राज्य द्वारा हिन्दी व उर्दू में प्रकाशित।
2. **जोधपुर गवर्नमेंट गजट**
   - 1864 में ज़ोधपुर राज्य द्वारा प्रकाशित।
3. **मारवाड़ गजट**
   - 1866 ई. में जोधपुर राज्य द्वारा प्रकाशित।
4. **मरूधर मित्र**
   - 1866 में जोधपुर राज्य द्वारा प्रकाशित।
5. **उदयपुर गजट**
   - 1869 में मेवाड़ राज्य द्वारा प्रकाशित।
   - 1879 में मेवाड़ महाराणा सज्जन सिंह ने नाम बदलकर "सज्जन कीर्ति सुधाकर" कर दिया।
   - पहला साप्ताहिक समाचार पत्र।
6. **सर्वहित**
   - 1890 में बूंदी राज्य द्वारा प्रकाशित।
   - इसमें 'मुद्रण संख्या' लिखी जाती थी।
7. **राजपूताना अखबार {रोजतुल तालीम}**
   - 1856 में कन्हैयालाल द्वारा जयपुर से हिन्दी व उर्दू मे प्रकाशित।
8. **देश हितैदूी**
   - 1882 में मुन्नालाल वर्मा द्वारा अजमेर से प्रकाशित।
9. **राजपुताना गजट**
   - 1885 ई. में मौलवी मुरादअली 'बीमार' द्वारा अजमेर से प्रकाशित।
   - सरकार की आलोचना करने के कारण इन्हें जेल भेज दिया गया।
   - मोती बेगम नामक महिला पत्रकार भी इससे जुड़ी हुई थी।
10. **राजपूताना हेराल्ड**
    - 1885 में हनुमानसिंह द्वारा अजमेर से प्रकाशित।
    - यह अंग्रेजी का पहला समाचार पत्र था जिसने राजनीतिक चेतना का संचार किया था।
    - इसने A.G.G. पाउलेट तथा जोधपुर के प्रधानमंत्री सर प्रताप की आलोचना की थी।
11. **राजस्थान समाचार**
    - 1889 में मुंशी समर्थदान चारण द्वारा अजमेर से प्रकाशित।
    - पहले यह साप्ताहिक समाचार पत्र था लेकिन 1904 में इसे दैनिक कर दिया गया।
    - पहले यह आर्य समाज का समाचार पत्र था लेकिन बाद में यह राजनीतिक खबरें भी प्रकाशित करता था।
    - 1896 में अंग्रेजों ने झालावाड़ के कृासक जालिमसिंह II को हटा दिया था अतः इस समाचार पत्र ने इस घटना की आलोचना की थी।
12. **राजस्थान केसरी**
    - अक्टूबर 1920 में विजयसिंह पथिक द्वारा वर्धा से।
    - नामकरण - केसरीसिंह बारहठ के नाम पर
    - जमनालाल बजाज - विश्वीय सहायता
    - सम्पादक - विजयसिंह पथिक
    - उपसम्पादक - रामनारायण चौधरी
    - जब विजयसिंह पथिक अजमेर आ गये थे तब सत्यदेव विद्यालंकार ने इसका प्रकाशन किया था।
    - कालान्तर में इस अजमेर से भी प्रकाशित किया गया था।
    - 1922 में इसे बन्द कर दिया गया।

THE NOTES HUB All Notes are Available All Competition Books 7300134518, 7610010054

13. नवीन राजस्थान

- 1922 में विजयसिंह पथिक द्वारा अजमेर से प्रकाशित।
- सम्पादक - किशोरसिंह वर्मा
- ध्येय वाक्य - यश वैभव की चाह नहीं,
  चाह नहीं जीवन रहे न रहें।
  चाह है तो वह यह है,
  जग में स्वेच्छाचार दमन न रहे।।
- यह राजस्थान सेवा संघ का मुख्य समाचार पत्र था।
- 1923 में इस समाचार पत्र पर प्रतिबंध लगा दिया गया। इसलिए इसे तरूण राजस्थान नाम से प्रारंभ किय गया।

14. तरूण राजस्थान

- 1923 में रामनारायण चौधरी, शोभालाल गुप्त द्वारा अजमेर से प्रकाशित।
- इसमें किसान आन्दोलनों की खबरें प्रकाशित।
- मदनसिंह व नयनूराम शर्मा भी इससे जुड़े हुए थे।
- इसे जयनारायण व्यास ने ब्यावर से प्रकाशित किया था।

15. यंग राजस्थान

- 1929 में रामनारायण चौधरी, शोभालाल गुप्त द्वारा अजमेर से प्रकाशित।

16. आर्य मार्तंड

- 1923 में रामसहाय शर्मा अजमेर से।
- इसमें विधवा विवाह के लिए निःशुल्क विज्ञापन प्रकाशित।

17. राजस्थान/राजस्थान वीकली

- 1923 ई. में ऋषिदत्त मेहता ब्यावर से निकालते थे।
- यह साप्ताहिक समाचार पत्र था, जो हाड़ौती क्षेत्र में जागरूकता के लिए चलाया गया था।

18. लोकवाणी

- 1943 ई. में।
- देवीशंकर तिवाड़ी जयपुर से निकालते थे।
- जमनालाल बजाज की याद में शुरू किया गया।

19. त्याग भूमि

- 1927 में हरिभाँ उपाध्याय, क्षेमानन्द राहत द्वारा अजमेर से प्रकाशित।
- गांधीवादी विचारधारा को प्रोत्साहन।
- इसमें 64 में से 16 पृष्ठ महिलाओं के लिए {आधी दुनिया}

20. नवज्योति

- 2 अक्टूबर 1936 - रामनारायण चौधरी - अजमेर से।
- कालान्तर में कैप्टन दुर्गाप्रसाद चौधरी {भाई} द्वारा

21. नवजीवन

- 1939 में नारायणसिंह, कनक मधुकर द्वारा अजमेर से प्रकाशित।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

22. प्रजासेवक

- 1940 में अचलेश्वर प्रसाद शर्मा - जोधपुर से

23. जयभूमि

- 1940 गुलाबचंद काला - जयपुर से

24. जयपुर समाचार

- 1942 श्यामलाल शर्मा - जयपुर से

25. राजस्थान हेराल्ड

- 1942 केसरलाल जैन - जयपुर से

26. प्रचार

- 1942 प्रियतम कामदार - अजमेर से
- ध्येय वाक्य - चोर, पापी तथा उल्लू अंधेरा चाहते हैं
  लेकिन प्रचार पब्लिक की सर्चलाइट है।

27. रियासती

- सुमनेश जोशी - जोधपुर से
- इसने जोधपुर के पाकिस्तान में विलय की खबर को प्रकाशित किया था।

28. वैभव

- जगन्नाथदास

29. विश्वामित्र

- फूलचंद अग्रवाल - कलकश्था से
- समाजसुधार से संबंधित खबरें प्रकाशित।

30. विजय

- जैसलमेर से

31. जयहिन्द

- कोटा से

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

समाचार पत्रों का महत्व -

(i) राजस्थान में राजनीतिक चेतना का संचार हुआ।

(ii) समाचार पत्रों के कारण राजस्थान राष्ट्रीय आन्दोलनों से जुड़ गया।

(iii) समाचार पत्रों ने जनहित के मुद्दे प्रकाशित किए थे जिससे राजाओं पर दबाव बना।

(iv) समाज सुधार संगठनों ने समाचार पत्रों का प्रकाशन किया था जिससे समाज सुधारों को गति मिली।

(v) समाचार पत्रों ने महिलाओं से संबंधित कुरीतियों के बारे में बताया। अतः समाज द्वारा उन कुरीतियों को दूर किया गया जिससे महिला सशक्तिकरण को बल मिला।

(vi) किसान आन्दोलन तथा प्रजामण्डल आन्दोलनों को बल प्रदान किया।

(vii) समाचार पत्रों ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को बढ़ावा दिया।

Self Notes